१

—'अम्मी मुझे डाँटती है।'...

बालिका रजिया के मुँह से वाक्य पूरे नहीं हुए और अकबर बोल उठा—'अपनी अम्मी के खिलाफ कदम मत बढ़ा ! अच्छी लड़कियाँ हठ नहीं किया करतीं।'

—'मगर वह तो मुझे गाने से मना करती है, अब्बाजान् !'

—'क्या कहा ?...गाने से ?' अकबर चौंक पड़ा।

—'जी हाँ।'

'तो उसे जाकर कह दे, वह कोयल को कूकने से, झरने को कलकल गीत सुनाने से, चाँद को मुस्कुराने से मना करे···'

और, वह अचानक मौन हो गया।···

उसके सामने उसकी बेगम खड़ी है।

'रजिया की मा !' अकबर ने मुँह खोला–'तुम जानती हो, रजिया को गाना सिखलाने के लिए मैंने 'उस्ताद' बहाल किया है !'

—'जी हाँ, मेरे आका !' बेगम के अधर खुले।

—'और, यह भी सच है, तुमने रजिया को अधरों पर गीत नहीं लाने की हिदायत दी है ?'

—'जी हां !'

—'बेगम !' अकबर के माथे पर बल आ गए—'तुम भूल तो नहीं गई कि मैं कौन हूँ ?'

—'वह भी क्या भूलने की बात है, आका !' बेगम बोल उठी–'आप हिन्दुस्तान के बादशाह आलमगीर के शाहजादे,

बंगाल के सूबेदार और ...'

अकबर ने बेगम के मुँह की बात छीन ली–'फिर जानबूझ कर मेरे हुक्म के खिलाफ कदम उठाने का भला क्या मतलब ?'

अकबर के स्वर में रूखेपन की मात्रा बढ़ी।

—'गुस्ताखी माफ हो।' बेगम का विनम्र स्वर –'मैं अपने कुछ सवालों के जवाब सुनना चाहती हूँ।'

—'इजाजत है।' अकबर ने कहा–'तुम पूछ सकती हो !'

—'क्या मेरे आका को मालूम है' बेगम बोली—'कि, हुजूर के वालिद शहंशाह आलमगीर को गाने से सख्त नफरत है ?' और, इसीलिए उन्होंने दरबारी गवैयों को बादशाही नौकरी से अलग कर दिया है ?'

—'हाँ, मैं जानता हूँ, बेगम ! और, यह भी मालूम है एक दिन गवैयों ने संगीत का जनाजा निकाला था, इसलिए कि बादशाह का पत्थर-दिल पसीज जाय और वे गवैयों को फिर बादशाही नौकरी में कबूल करलें।'

—'क्या बादशाह ने उन्हें नौकरी में कबूल किया ?'

—'नहीं।' अकबर ने कहा—'चट्टान पर लहरों का कोई असर नहीं होता। ... उस समय बादशाह नमाज पढ़ कर उठे थे। उन्होंने एक दरबारी से सवाल किया—'बाहर कैसा शोर है ?' दरबारी ने जवाब दिया—'जहाँपनाह, दरबार से बरखास्त किये गये गवैये संगीत की अरथी उठाये जा रहे हैं।' बादशाह की आँखें जल उठीं। वे मन के भावों को छिपाकर बोल उठे–'उन्हें मेरा हुक्म सुना दो...वे संगीत को गहरी कब्र खोदकर दफना दें, जहाँ से कोई उसकी चीख भी नहीं सुने !.........'

बेगम के मुख पर संतोष के निशान प्रकट हुए।

—'और भी कोई सवाल है ?' अकबर पूछ बैठा।

—'जी हां, हुजूर !'……बेगम बोली—'क्या मेरे आका को यह भी पता है कि बादशाह आलमगीर ने शराब और तम्बाकू का पीना बड़ी सख्ती से बन्द करा दिया है ! और, तवायफों को शहर से दूर रहने का हुक्म है !………'

—'तुम्हारे सवाल का मतलब क्या है ?'—अकबर की त्योरियाँ चढ़ गईं ।

'गुस्ताखी माफ हो हुजूर ।' बेगम ने कहा—'मैं नहीं चाहती कि मेरे आका पर कोई मुसीबत आये ।'

—'कैसी मुसीबत ?' अकबर बोल उठा—'तुम होश में तो हो ?'

—'शराब मैं छूती भी नहीं; फिर बेहोशी की कोई वजह नहीं ।'

—'बेगम !' अकबर, बेगम के व्यंग्य से तिलमिला उठा—'तुम साफ-साफ कहो, तुम्हारे दिल में क्या है ?'

और, बोल उठी रजिया-'अब्बाजान् ! उस्ताद मेरी राह देख रहे होंगे ! क्या मैं जा सकती हूँ ?'

—'तो तुझे रोकता ही कौन है ?' अकबर का निश्चयात्मक स्वर —'इस महल में मेरा हुक्म चलेगा । मेरी राह में रोड़े बनकर आने का हक तेरी मा को नहीं है ।'

—'आका ! अपने वालिद की आदत से क्या आप जानकार नहीं कि अपने खिलाफ कदम उठाने वाले उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं ?'……बेगम का गला भर आया ।

रजिया उत्साह से कदम बढ़ाती और गुनगुनाती चली गई ।

—'कोई भी अपने विरोधी को पसन्द नहीं करता, बेगम !'

—'मगर सभी आलमगीर बादशाह नहीं होते, नहीं उनके पास बेशुमार फौजें होती हैं, हुजूर !' बेगम का सहल सरल स्वर

—'बेबश चोट खाकर भी फरियाद नहीं कर सकते, मगर ताकत वालों के चेहरे की शिकन भी आफत की आँधी बन जाती है।'

—'बेगम, मुझे माफ करना!' अकबर गम्भीर हो उठा—'मैं अपने दिमाग पर दूसरों के विचारों का बोझ जबरदस्ती लादना नहीं चाहता। दिमागी गुलामी मुझे तनिक पसन्द नहीं!···और, इसे मत भूलो कि मैं वालिद की तरह फकीर नहीं।'

—'मगर आलमगीर बादशाह के सूबेदार तो हैं!'

—'तुम्हारा मतलब है, मैं वालिद का नौकर हूँ?'

—'हर लड़का अपने बाप का हुक्म मानने के लिए लाचार होता है।'

—'फिर वालिद ने अपने वालिद शाहजहाँ को कैद की जिंदगी गुजारने के लिए क्यों मजबूर किया?'

—'मेरे आका!' बेगम की आँखों में आंसू भर आये—'मैं आपसे बहस नहीं करना चाहती हां, होशियार करना अपना फर्ज समझती हूँ कि आप अपने वालिद को नाराज होने का मौका न दें! आप सोच सकते हैं, जिसने अपने रास्ते का कांटा समझ बाप को कैद किया और भाइयों को मौत के घाट उतारा, वह अपने लड़के को खिलाफ चलते देख भला क्यों चुप बैठेगा!'

'मेरी प्यारी बेगम!' अकबर का स्नेह-सिक्त स्वर—'तुम कितनी भोली हो!···अपने अरमानों का गला घोंट कर अगर मैं फकीर की तरह जिंदगी गुजारने का ढोंग रचूँ तो क्या तुम यकीन दिला सकती हो कि तख्त के लिए मेरे भाई मुअज्जम आजम या कामबख्श तलवार नहीं उठायेंगे और मैं दारा, शुजा और मुराद की हालत में नहीं पहुँचूँगा?'

—'मेरे आका!···' बेगम कांप उठी। बोली—'ऐसी बुरी बात मुँह से मत निकालिए!'

अकबर मुस्कुरा पड़ा। बोला–'सचाई से आँखें बन्द करना अक्लमन्दी नहीं कही जाती। हमेशा से मेरे खानदान में यही होता आया है। फिर वही कहानी नहीं दुहरायी जाय–उसका भला क्या भरोसा !...'

बेगम मौन रही।

अकबर ने कहा—'मेरी प्यारी बेगम ! तख्त बहुत बुरी चीज है। इसे आँधियों के बीच का चिराग समझो। जाने कब, किधर से तूफान के झोंके आ जायँ और सल्तनत के चिराग को बुझा दें, इसका क्या भरोसा ! हम–तुम सपनों के महल में रहते हैं और आँधियों के तिनके या बुलबुले की तरह हैं। जाने कब हमारे सुख के सपने टूट पड़ेंगे–तिनके बिखर जायगे और जिन्दगी के बुलबुले फूट पड़ेंगे–हमें पता नहीं ! फिर क्यों नहीं, जिन्दगी के अनजाने दिनों को हम चाँदनी में नहलाने की कोशिश करें !....' तुम भी शराब की प्याली को खुशी से चूमो और बादलों के रथ पर सवार हो मन–मोर को नाचने का मौका दो।'

—'आका, मुझे माफ करें ! जिन्दगी के दिन थोड़े होते हैं। क्यों नहीं खुदा की इबादत में समय गुजारूँ ? गुनहगारों को खुदा कभी माफ नहीं करता। मेरी नेक सलाह मानिये और शराब के प्यालों को तोड़कर खुदा-परस्ती की ओर बढ़िये !...'

अकबर क्षण भर मौन होकर अपनी सुन्दरी पत्नी के मुख की ओर निहारता रहा। तत्पश्चात् बोल उठा–'मैं अपने विचारों को तुम पर लादना नहीं चाहता, बेगम ! तुम्हें खुदा की इबादत में ही सुख मिलता है तो मैं तुम्हारी राह का पत्थर बनने की गुस्ताखी नहीं करता। जाओ, तुम अपनी राह पर कदम बढ़ाओ और मुझे अपने रास्ते पर जाने दो ! हमें एक–दूसरे की राहों में चट्टान बनकर नहीं खड़ा होना चाहिये।...'

बेगम उसे खड़ी–खड़ी देखती रही और वह उसकी आँखों से ओझल हो गया।

महल की बांदी रबेया ने देखा, रजिया की मां खड़ी–खड़ी ख्यालों में डूब गई हैं और उनके मुख पर चिन्ता की रेखायें उभर आई हैं।....'

—'बेगम साहिबा !...' वह आगे बढ़ आई।

'हाँ !' रजिया की मां का ध्यान टूटा।

—'खैरियत तो है ?'

—'रबेया, काली रातें हमारे चमकते दिन को निगलने मुँह बाँये बढ़ी आ रही हैं।' बेगम का करुण कातर स्वर।

—गुस्ताखी माफ हो,' बाँदी बोल उठी–'यह तो हमेशा से होता आया है। दिन के बाद रात और सुख के बाद तकलीफ। जो चिराग जलता है, वही बुझता भी है।....'

—'रबेया, क्या हम आने वाली मुसीबत को रोक नही सकेंगी ?' रबेया, बेगम की मुँहलगी बांदी है और अन्य बांदियों से बुद्धिमती होने के कारण बेगम उससे राय लेने में कभी संकोच से काम नहीं लेती।

—'कैसी मुसीबत ?.......'

—'रजिया के अब्बा ऐसे रास्ते पर जा रहे हैं जो इस्लामी उसूलों के खिलाफ है।'

—'क्या वे अपने मरहूम चाचा दाराशिकोह की तरह किसी हिन्दू सन्त के चेला बन गये ?'

—'नह रबेया, वह अपने आजा जहांगीर की तरह शराब और...'

—'मैं आपका मतलब समझ गई, बेगम साहिबा !' रबेया बात मुँह 'लेकिन यह कोई नई बात नहीं। बादशाह पर उंगली

नहीं उठाई जाती इन बुराइयों के लिए।....'

—'मगर तुम आलमगीर बादशाह की आदतों से जानकार हो !' बेगम ने कहा–'वह इस्लामी उसूलों के खिलाफ चलने वाले शाहजादे के लिए क्या दिल में अच्छी जगह देंगे ? ..'

—'अब आपकी चिंता का मतलब मेरी समझ में साफ आ गया।' रबेया बोली—'शाहजादे की तरक्की की राह में रुकावटें आ सकती हैं। मुमकिन है, बादशाह की निगाह अच्छी रहने पर वह अपने बाद के लिए तख्त शाहजादे (!) को सौंप जायँ।'

—'नाराज होने पर, बादशाह रजिया के अब्बा को कैदखाने में भी डाल सकते हैं–क्या इसका डर नहीं...?'

—'यह भी हो सकता है'।' रबेया ने चिंतित होकर कहा–'बादशाह कब क्या करेंगे–कुछ कहा नहीं जा सकता !'

—'अब तुम्हीं कोई उपाय बताओ जिससे यह बला टल जाय !' बेगम की विवशताभरी वाणी—'मेरी बुद्धि जवाब दे रही है।'

रबेया क्षण भर मौन रहने के पश्चात् बोल उठी—'शाहजादे के खिलाफ जुबान हिलाना तो आग की लपटों में हाथ डालने के समान है। ..हाँ, एक तरीका यह हो सकता है....'

—'कौन-सा तरीका ?' बेगम उत्सुक हो उठी—'तुम चुप क्यों हो गई हो ?'

रबेया ने इधर-उधर निगाह दौड़ाई और किसी को न देख मंद स्वर में बोली–'आप बादशाह आलमगीर के पास इत्तला भेज दें !...'

—'यह क्या कह रही हो ?' बेगम का मुखड़ा भय से सफेद हो गया। बोली—'अपने शौहर की राह में कांटे बिछा दूँ ? अपने हाथों अपने पाँव में कुल्हाड़ी मार लूँ ?...'

—'सब्र से काम लें, बेगम साहिबा !' रबेया ने कहा—'मैं भला ऐसी सलाह क्यों देने लगी, जिससे आपका या आपके शौहर का नुकसान हो। ...आप बादशाह सलामत के पास सिर्फ यह लिखें कि वे आपके शौहर को दिल्ली बुला लें। बङ्गाल का पानी आप लोगों के हक में अच्छा नहीं पड़ रहा है। और, यहाँ रहने से अधिक आरामपसंद या सुस्त हो जाने का खतरा भी है।....'

—'मगर खत कौन ले जायगा ?' बेगम बोली—'रजिया के अब्बा के कानों में खबर पहुंच गई तो मेरा कुशल नहीं।'

—'आप बेफिक्र रहें !' रबेया ने लापरवाही से कहा—'इस काम का जिम्मा मैं ले लूँगी।'

—'मेरी अच्छी रजिया ! 'बेगम हर्षातिरेक से सिहर उठी।

●

अकबर विचारों की आँधी में लड़खड़ाता अपने आमोद-गृह की ओर बढ़ा जा रहा है। वह सोच रहा है, रजिया की मां के पास दिल नहीं। उसकी खूबसूरती हिमालय की बर्फीली चोटियों की तरह ठंडी है; उसमें सूरज की किरणों की तरह उमङ्ग नहीं। वह चम्पा के समान है, जिसमें गंध तो है मगर भँवर जिसके पास नहीं फटकता।......'

तभी उसकी प्रेमिका शबनम का चित्र उसकी आँखों में उतर आया। और.......

शबनम ! वह तो शराब की छलकती प्याली है, जिसे देखते ही प्यास बढ़ जाती है। वह मेरे इशारे पर थिरकती है, रजिया की मां की तरह छिटकती नहीं। उसके प्यार भरे एक-एक शब्द मेरे प्राणों में बोलते हैं। उसकी मुहब्बत मीठी बेहोशी की तरह मेरे मन पर छा जाती है।

●

अकबर ने नशे में झूमते हुए कहा—'मेरी प्यारी शबनम !

आज ऐसा पीओ और पिलाओ कि हमें दीन-दुनिया की खबर नहीं रहे। हम तारों से आंख-मिचौनी खेलें, हम चाँद की किरणों में नहायें! तुम बुलबुल की तरह गाओ और मैं गुलाब की तरह खिलखिलाऊँ!......'

दोनों नशे में बेसुध, सपने में तैर रहे हैं।

'शबनम!............

—'मेरे प्यारे शाहजादे!'

'शाहजादे!'.........अकबर के कान खड़े हुए। लड़खड़ाती आवाज निकली—'किसे कह रही हो, शाहजादे?'

—'अपनी मुहब्बत के चांद को, हुजूर को, आप को....'

—'नहीं मुझे शाहजादा नहीं, 'शहंशाह' कहो!' अकबर का स्वर आवेशपूर्ण।

—'बहुत खूब, जहांपनाह!' शबनम नशे में हाथ पटकाती हुई बोली—'आप बादशाह सलामत हैं, दिल्ली के तख्त-ताऊस के हकदार और हिन्दुस्तान के शहंशाह।'

—'मगर यह कैसे?' अकबर बोल उठा—'दिल्ली का तख्त तो अब्बा के फौलादी पंजे में है।'

—'और, बंगाल का तख्त?'

—'वह तो मेरे अधीन है।'...कहते-कहते अकबर चुप हो गया।

—'शबनम!'....क्षणभर बाद उसने मौन तोड़ा।

—'जी, जहांपनाह!'

—'रजिया की मा कहती थी' अकबर ने कहा—'मैं बादशाह आलमगीर का सूबेदार हूँ!......'

—'उनका कहना गलत नहीं है, बादशाह सलामत!'

'कैसे गलत नहीं है?' अकबर क्रुद्ध हो उठा—'क्या मैं किसी

का नौकर हूं ?'

—'नहीं, शाहजादे आलम !'

—'क्या कहा ? शाहजादे आलम ?'

—'गुस्ताखी माफ हो शहंशाहे-जमाना !'

—'जाओ माफ किया ! अब से जुबान पर काबू रखना ! मुँह से मेरे लिए कभी भी शाहजादा-जैसा हकीर शब्द नहीं निकले।'

—'ऐसा ही होगा, खुदाबंद !' शबनम मौन हो गई।

अकबर पड़ा-पड़ा कुछ सोचता रहा। एकाएक बोल उठा—

—'क्या रूठ गई, शबनम ?'

—'नहीं तो।'

—'तुम मुझसे जरूर रूठ गई।'

—'जहांपनाह, चांद से भला चाँदनी रूठती है ?'

—'रजिया की मा कहती थी, बादशाह आलमगीर बड़े गुस्सैल हैं। मैं शराब का प्याला ओठों के पास न ले जाऊँ, मैं तुमसे अलग रहूँ। और, यदि ऐसा नहीं कर सका तो कभी मुझे कैदखाने की हवा भी खानी पड़ेगी।'

—'यह गैर-मुमकिन नहीं।'

—'अगर ऐसा मौका आया तो अब्बा तुम्हें 'अनारकली' की तरह दीवार में चुनवा देंगे।'

—'भला ऐसी बहादुरी दिखाने के मौके को वे क्यों खो देंगे !'

—'मुमकिन हैं, अब्बा मुझे माफ़ भी कर दें।'

—'और, माफ करने की वजह भी तो है कि आप उनके लाड़ले हैं।' शबनम के मुँह के शब्दों ने उसके मन का असंतोष प्रकट कर दिया। बोली—'प्यार करना औरत के लिए गुनाह है,

मर्द के लिए नहीं। शाहजादे के लिए, तो सात खून माफ हैं।'

—'मगर मैं ऐसा मौका नहीं आने दूंगा, शबनम !' अकबर आवेश में बोल उठा—'मैं अब्बा से लोहा लूंगा। उनसे तख्त छीनूंगा। और, भाई अगर राह में आये तो उन्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा।'

—'बंगाल की फौज से आलमगीर पर फतह पाना बहुत मुश्किल है, शहंशाह !'

'—राजपूत हमारे मददगार होंगे।'

'कभी नहीं।' शबनम ने कहा—'राजपूत तो आलमगीर की सल्तनत के मजबूत खंभे हैं !'

—'बेशक !' अकबर बोला—'मगर राख के भीतर आग सुलग रही है।'

—'कैसी आग ?' शबनम ने अचरज से कहा—'उदयपुर के राणा राजसिंह के अलावा सभी राजपूत राजा तो बादशाही नौकरी में हैं !'

—'ठीक है !' अकबर बोला—'मगर सभी राजपूतों के दिल में जज़िया कर ने बगावत की आग सुलगा दी है।'

—'यह वही कर तो नहीं है जिसे अकबर बादशाह ने हिंदुओं पर लगाया था ?'

—'हां, उसी को जज़िया कहते हैं।' अकबर ने कहा–'लेकिन दादा अकबर ने ही इसे बंद भी कर दिया था, 'गर मुनासिब' समझ कर; मगर कुछ दिनों से अब्बा ने इसे फिर जारी कर दिया है। जज़िया की वजह से हर साल एक मोहर ब्राह्मण को देना पड़ता है और दूसरे गरीब लोग साढ़े ती[illegible] सिक्के तक देते हैं।'

—'यह तो हिन्दुओं पर सरासर ज़ुल्म है।' शबनम के मन का आक्रोश फूट पड़ा।

—'और, [redacted] ।'
—'बेशक !' और यही हमारी करवायी है ।
—'फिर तो दिल्ली का तख्त मेरा होगा ।'
—'और, मैं 'मल्का-मुअज्जमा' कहलाऊँगी !'

●

जोधपुर-महाराज यशवन्त सिंह की वीरता का लोहा सभी मानते हैं। वह उदयपुर-नरेश राणा राजसिंह की तरह स्वतंत्र नहीं किन्तु जयपुराधिपति जयसिंह और अन्य राजाओं की भाँति मुगल-दरबार के नौकर हैं।

समय-समय पर शाहजहाँ और औरंगजेब ने यशवन्तसिंह को खिलअत और जागीर देकर अ ने अहसान का बोझ लादा जिसे विद्रोहियों के उठते सिरों को कुचल कर वह उतारने का प्रयत्न किया करते।

कुछ समय पूर्व पठानों ने काबुल में उपद्रव मचा रक्खा था। उपद्रव-शांति के लिए औरंगजेब ने यशवंत सिंह को खैबर दर्रे के उस पार अली मस्जिद के निकट स्थित जमरूद भेजा। वहाँ विद्रोहियों को दबा कर यशवंत सिंह ने जगह-जगह फौजी-चौकियाँ कायम कर दीं जिससे पठानों को राठौर-वीरों के मुकाबले सिर उठाने का साहस नहीं हुआ।

महाराज काबुल में ही दिन गुजार रहे थे कि चैत्र कृष्ण ३, वि० सं० १७३३ (ई० सं० १६७६ की १२ मार्च) को उनके द्वितीय पुत्र जगत सिंह का स्वर्गवास हो गया। प्रथम पुत्र पृथ्वी सिंह दिल्ली में कई वर्ष पूर्व (ई० सं० १६६७ की ८ मई को) मर ही चुके थे। द्वितीय पुत्र की मृत्यु से उन पर वज्राघात हुआ।

और, शोक की काली घटाओं ने उनके जीवन की उजियाली को निगल लिया। वे मौत की ओर बढ़ते गये और मौत ने एक

दिन उन्हें बाहुओं में लपेट लिया। (वि० सं० १७३५, पौष कृष्ण १०; तदनुसार ई० सं० १६७८ का २८ नवंबर)

यशवंतसिंह की नई रानी अपने नवजात शिशु के साथ सरदार दुर्गादास के संरक्षण में लाहौर होती हुई दिल्ली पहुँचीं। और···

उनके निवास-स्थान में शोक-संतप्त रानियों के दिल के जख्मों पर सहानुभूति के मरहम लगाने और मृतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सरदारों का दल आ पहुँचा।

—'मौत ने एक वीर शिरोमणि को हमारे बीच से छीन लिया।'

—एक ने कहा।

—'हम असहाय हो गये।'—दूसरे ने कहा।

और, इस प्रकार कुछ देर तक वार्त्ता चलती रही।

—'महाराज तलवार के ही धनी नहीं, बल्कि कलम के धनी भी थे।'

—'वाह, क्यों नहीं ? उनकी लिखी कई पुस्तकें हैं। जैसे—सिद्धांत-बोध, सिद्धांत-सार, अनुभव-प्रकाश, अपरोक्ष सिद्धांत, आनन्द-विलास और भाषा-भूषण।'

—'उन्होंने श्रीमद्भागवत पर भाषा-टीका भी लिखी थी और 'प्रबोध-चन्द्रोदय' नामक एक नाटक का भाषानुवाद भी किया था।'

—'हाँ ! और वे एक अच्छे कवि तथा साहित्यकार ही नहीं, बल्कि दानवीर और गुणग्राही भी थे।'

—'वाह, क्या कहने उनकी गुण-ग्राहकता के !'—एक सरदार भावावेष में बोल उठा—'लाहौर में एक बार कुछ कवियों ने उन्हें अपनी-अपनी रचनाएँ सुनाईं और उन्होंने प्रत्येक को डेढ़-डेढ़ हजार रुपये नक़द तथा एक-एक घोड़ा पुरस्कार में दिये। तीन को तो एक-एक हाथी भी दे डाले।'

—'मगर उनकी जिंदगी का अधिक समय स्वदेश से बाहर ही गुजरा।'

—'फिर भी, उन्होंने स्वदेश का ख्याल नहीं छोड़ा। काबुल से अनार के बीज और मिट्टी भेज कर उन्होंने जोधपुर के निकट एक अनारों का बाग लगाया है। उस बगीचे के जैसे अनार हिंदुस्तान में भला और कहाँ होते हैं!'

—'उनके राज्य का प्रबन्ध भी सराहनीय रहा।'—एकने कहा—'राज कर्मचारियों का वेतन बढ़ा कर उन्होंने घूस लेने की सख्त मनाही कर दी।'

—'मगर अफसोस! उनके दोनों राजकुमार जीवित नहीं रहे।'

—'भाइयो! ईश्वर की मर्जी में मनुष्य का वश नहीं चलता।'

—राठौर-वीर दुर्गादास ने मुँह खोला—'जो होना था, वह हो गया। छोटे बच्चे की दीर्घायु-कामना कीजिए! वे ही बड़े होकर, मारवाड़ की गद्दी सँभालेंगे और अपने योग्य पिता का मुख उज्ज्वल करेंगे!'

सभी के मुँह से एक साथ निकला--'भगवान छोटे राजकुमार को चिरायु करें!'

तभी जैसे बिजली चमकी। दुर्गादास ने गम्भीर स्वर में कहा—'साथियो! मुझे ऐसे आसार दीख रहे हैं कि कोई बड़ी आफत स्वर्गीय महाराज के परिवार पर जल्द टूटने ही वाली है।'

—'कैसी आफत, सरदार? आप साफ-साफ कहें!'—एक ने कहा–'हम हर तरह की मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार हैं।'

—'साथियो! आप ध्यान दें तो पता चल जायगा कि सम्राट् औरङ्गजेब ने इस महल पर गुप्त पहरा बैठा दिया है।'–दुर्गादा

का रहस्यपूर्ण स्वर। सभी के कान खड़े हो गये।

—'वह किस लिए ?'

—'महाराज तो मुगल सल्तनत के आधार स्तंभ थे!'···

—'और, उनकी रानियों अथवा छोटे बच्चे से भला सम्राट् को क्या दुश्मनी हो सकती है!'···कई गले से एक साथ आवाजें निकलीं।

—'आप इसे बुरी आदत समझें तो मुझे माफ कर सकते हैं कि मैं हर चीज को संदेह-भरी नजरों से देखता हूं।'-दुर्गादास की आवाज में विनम्रता के साथ सत्य की कठोरता।

सभी खामोश, अपने स्थान पर बैठे रहे।

दुर्गादास ने फिर, सबको संबोधन कर, कहा—'बहादुर सरदारो! आप भूले न होंगे कि शुजा के साथ लड़ने के लिए मैदान में जब सम्राट् औरङ्गजेब उतरे तब स्वर्गीय महाराज ने उनकी सेना पर ही चढ़ाई न करदी, बल्कि उनका खजाना भी लूट लिया। इससे अप्रसन्न हो, सम्राट् ने अमीनखाँ मीरबख्शी को नव हजार सवारों की एक सेना देकर जोधपुर पर चढ़ाई करने का आदेश दिया और स्वर्गवासी राव अमरसिंह के पुत्र राव रायसिंह को राजा का खिताब दे मारवाड़ पर अधिकार करने को भेजा। मगर महाराज के आगे सबको मुँहकी खानी पड़ी और लाचार होकर सम्राट् औरङ्गजेब को उन्हें नौकरी में कबूल करना पड़ा।'

—'उसके बाद सम्राट औरङ्गजेब उन्हें स्वदेश से बाहर रहने का आदेश देने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सके।····'

—'एक और बात ध्यान देने योग्य है। जिस समय स्वर्गीय महाराज काबुल में थे, उस समय उन्हें सूचना मिली-'सम्राट औरङ्गजेब ने मन्दिरों को तुड़वाने का आदेश निकाला है।'

महाराज ने शाही दरबारियों के मुँह पर दृढ़ स्वर में कहा कि 'बादशाह का यह कार्य अन्यायपूर्ण है। अगर वे अपना आदेश वापिस नहीं लेंगे तो मैं भी मस्जिदों को गिरवाना आरम्भ करूँगा।'

'और, शाही अमीरों से खबर मिलते ही, महाराज को शांत करने के लिए, सम्राट ने मन्दिर गिरवाने का हुक्म वापिस ले लिया।'

'फिर आप लोग निर्णय करें, जीते--जी बदला नहीं लेने वाला अगर मरने के बाद अपने मन का गुबार निकाले तो क्या यह असम्भव घटना होगी !......'

'....मगर निर्णय करने के पूर्व आपको पात्र का ध्यान रखना भी आवश्यक है।'

'सरदार !'—एक वृद्ध ने दुर्गादास को संबोधित कर कहा-'आपका संदेह अनुचित नहीं।'

उसी समय एक पहरेदार ने आकर सूचना दी—मुगल-सेनापति तहव्वर खाँ सरदार दुर्गादास से मिलना चाहते हैं।

—'उन्हें आदर के साथ ले आओ !' दुर्गादास सचेत हो गये।

एक भीमकाय मुगल ने बरामदे में प्रवेश करते हुये कहा—'दुर्गादास, महाराज की मौत से मुझे सख्त रंज है। रानियों से मुझे बड़ी हमदर्दी है। बादशाह सलामत को किसी खास मसले पर आपसे बातें करनी हैं।'......

●

लालकिले के विशेष कमरे में औरङ्गजेब उद्विग्न बैठा है। उसकी आकृति पर उसके हृदय की हलचल की रेखायें बनतीं और मिटती हैं। तूफान उठता है और बिजली कौंध जाती है।...

—'जहाँपनाह !'.......

औरङ्गजेब चौंक उठा। उसने नजर उठाई तो सामने अपनी

प्यारी कश्मीरी बेगम को खड़ी पाया।

आँखों में प्यार ने अँगड़ाइयाँ लीं और तूफान ने शांति की गोद में लम्बी साँस।

—'तुम कब से खड़ी हो, बेगम?' --औरङ्गजेब विह्वल हो उठा।

—'जहाँपनाह को उसकी क्या फिक्र?'

बेगम के स्वर में मान की झलक।

—'तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये, बेगम!' औरङ्गजेब ने कहा—'क्योंकि, तुम जानती हो कि मैं तुम्हें किस कदर चाहता हूं!'

—'जहाँपनाह!'—कश्मीरी बेगम वोली–'और, मैं यह भी जानती हूं उमर ज्यों-ज्यों वढ़ती जाती है, त्यों-त्यों मर्दों का प्यार घटता जाता है।'

—'मगर मेरे प्यार में तुमने क्या फर्क पाया है, मल्क–ए-- आलम?'

—औरंगजेब ने उत्सुकता का आंचल पकड़ लिया।

—'आप मुझसे नहीं, अपने दिल से पूछिये!'

—'वहाँ अभी तक तुम्हारी हुकूमत चल रही है।'

—'मैं इस पर यकीन नहीं करती।'

—'इसकी वजह?'

—'वजह मुझसे नहीं, अपनी मुहब्बत से पूछिये।'—कश्मीरी बेगम बोल उठी—'जो आग की तरह गरम नहीं, बल्कि कोयले की तरह ठंढी पड़ गई है।'

—'यह मुझ पर इलजाम है।'

—'जहाँपनाह!'-कश्मीरी बेगम की आँखों में अश्रु छलक पड़े। भरे गले से वह वोली–'एक वह भी जमाना रहा जब आप

अधिक समय मेरी खूबसूरती की तारीफ करने में गुजारते रहे और मेरे पास रहकर मेरा दिल वहलाते रहे। और, एक यह भी जमाना है कि मुझसे भागे-भागे फिरते हैं।............'

'मलके !'—औरंगजेब ने आगे बढ़कर कश्मीरी बेगम के आँसू पोंछे—'अपने दुश्मनों का खातमा कर मैं थोड़ी देर के लिए वेफिक्र हुआ ·· मगर अब मेरे सामने लड़ाई का मैदान दीख रहा है, जहाँ तरक्की की राह में चट्टान बनकर खड़ा होनेवाले राजपूतों की ताकत अंत कर, बागी मराठों को पाँव तले रौंदना है। और उसके बाद गोलकुंडा की कुतुबशाही और बीजापुर की आदिल-शाही की जड़ काटने के लिए तलवार उठाना है।'

—'तो क्या जिंदगी के बाकी दिन आप लड़ाई के मैदान में गुजारेंगे और मेरी मुहब्बत से मुँह मोड़ तलवार से नाता जोड़ेंगे ?'—कश्मीरी बेगम भय से सफेद पड़ गई।

' ·· उस समय तक तलवार मेरी साथिन रहेगी, जब तक मेरा मक़सद पूरा नहीं हो जाता।···' औरङ्गजेब का कातर स्वर।

—'और, यह सच है, आप राजपूतों के खिलाफ तलवार उठायेंगे ?'

'वेशक !'—औरङ्गजेब बोल उठा—'राजपूतों से मुगल सल्तनत को वहुत बड़ा खतरा है।'

—'अब तक तो राजपूतों ने मुगल सल्तनत की नींव को अपने लहू की कुर्बानी देकर कायम रक्खा, फिर 'खतरा' समझने की वजह ?'

कश्मीरी बेगम की उत्सुकता बढ़ी।

'वेगम !' औरंगजेव गंभीर हो गया। बोला—'अब तक मुगल-बादशाहों ने हिंदू-मुसलमानों में फर्क नहीं माना और वे सुलह के रास्ते पर चलते रहे मगर मुझे वह उसूल पसंद नहीं। मैं

कट्टर शरई मुसलमान हूँ।...इस्लामी उसूलों पर चलना अपना फर्ज मानता हूँ और यही वजह है, जिसने राजपूतों के दिल में बगावत की आग सुलगा दी है। वे उस ज्वालामुखी के समान हैं, जो भीतर आग छिपाये बाहर से शांत दीखती है। अगर समय रहते मैंने राजपूतों पर काबू नहीं पाया तो ज्वालामुखी एक दिन भड़क उठेगी और उसकी आग में मुगल सल्तनत का नामोनिशान मिट जायगा।'.......

कश्मीरी बेगम सुबह के चाँद की तरह निराशा में डूब गई।

—'क्यों उदास हो गई, मलक-ए-आलम ?'

औरंगजेब ने वाणी को स्नेहसिक्त करने का प्रयत्न किया।

—'खाली झोली लिये आई इस उम्मीद के साथ कि'—बेगम का गला भर आया। सँभल कर बोली—'आप मेरी झोली फूलों से भर देंगे, मगर काँटें लिये वापिस जा रही हूँ।'

औरंगजेब भावोत्तेजना में उठ खड़ा हुआ। उसने बड़े ही आदर से कश्मीरी बेगम को अपने पार्श्व में बैठाया और कहा—'कश्मीरी सेव की तरह हसीन कश्मीरी बेगम ! तुम गुलाब की पंखुड़ियों के समान नाजुक हो और मैं चट्टान की तरह कठोर। तुम्हें मुहब्बत की ठंढी छाँह चाहिए और मुझे आँधियों के झोंके। हम दोनों की राहें अलग-अलग हैं।'

—'मुझे बेगम बनाने के पहले आपका यह ख्याल कहाँ था ?'

—कश्मीरी बेगम तड़प उठी।

—'बुढ़ापे में तुमसे शादी कर, मैंने ग़लती की, मलके !' औरंगजेब की वाणी विवशता में डूब गई—'मुझे माफ़ करना !'

—'मैं माफ़ नहीं कर सकती, जहाँपनाह !'—बेगम आवेश में बोल उठी—'मैं इंसाफ की भीख माँगती हूँ। आप बड़े इंसाफपसंद हैं न !'

—'ग़लती के लिए जो सजा तजवीज करो, मैं सह लूँगा।'

—'जुबान देते हैं!' कश्मीरी बेगम उत्साह से भर गई।

—'औरंगजेब कौल देकर नहीं फिरेगा।'

—'तो मेरी सौत को मौत की सजा दीजिए!'

—'कैसी सौत?'—औरंगजेब चौंक उठा।

—'सारी बुराइयों की जड़ और हम दोनों के बीच की खाई।'

—'मतलब!'

—'लड़ाई।'… …

कश्मीरी बेगम उत्सुकता-भरी नजरों से औरङ्गजेब की ओर देखने लगी। बोली—'लड़ाई की काँटों-भरी राह से हटकर, अमन के साये में आइए, जिससे मुहब्बत को फलने-फूलने का मौका मिले! बेकुसूर सिपाहियों के गरम खून से जमीन नहीं काँपे, उनकी विधवा औरतों और बच्चों की दर्दनाक पुकार सल्तनत की ईंट को नहीं हिला सके।……'

—'यह नामुमकिन है, बेगम!'

औरङ्गजेब के अधरों पर कुटिलताभरी मुस्कान खेलने लगी।

—'तो जुबान देकर आप मुकर रहे हैं?'

—'लड़ाई और मुहब्बत के मैदान में वादों की कोई कीमत नहीं होती।'

—'फिर मुझे आपसे कुछ नहीं अर्ज करना है।'……

कश्मीरी बेगम के नेत्रों से टप्-टप् आँसू की दो बूँदें चू पड़ीं।

—'मलक-ए-आलम!' औरंगजेब ने कश्मीरी बेगम को सँभालते हुए कहा—'सब्र से काम लो! मुझे इस्लाम की खिदमत करने से नहीं रोको!…अलग राहों में चलते हुए भी हम मिलते ही रहेंगे। जब धूप की गरमी से बेचैन हो मैं तुम्हें पुकारूँ तब तुम लहर बनकर आ जाना!……'

उसी समय एक बाँदी दीख पड़ी।

दोनों सँभल गये। चट्टान और लहर ....

झुक-झुक कर सलाम करने के बाद बाँदी ने कहा—'जहाँपनाह, तहव्वर खाँ ने खबर दी है—दुर्गादास दरबारे-खास में हाजिर हैं।...'

'बहुत खूब!'—औरंगजेब बोल उठा—'उन्हें मेरा हुक्म सुना दो, वह मेरी राह देखें!'

—'जो इर्शाद!' कह कर, बाँदी झुक-झुक कर सलाम करती वापिस लौट गई।

●

दुर्गादास की आँखें मुगल-वैभव को निहार रही हैं किंतु मस्तिष्क तर्कों के तूफानों से खेल रहा है—

'भला मुझे बुलाने का क्या अभिप्राय हो सकता है? महाराज यशवन्त सिंह के महल पर पहरा बैठाने वाला आलमगीर मुझसे क्या चाहता है? क्या वह छलसे मुझे कैद करना चाहता है? या लालच के जाल में फँसाना चाहता है?'

'जो हां, मुझे सदा सावधानी से काम लेना है। अगर आलमगीर ने छल-कपट से काम लिया तो कसम मा दुर्गा की, आज उसके लहू से अपनी प्यासी तलवार की प्यास बुझा कर रहूंगा।... और, मुझे अपने पर विश्वास है। लोभ का मगर मेरी ईमानदारी को नहीं निगल सकता। मुझे कर्त्तव्य-पथ से विचलित कर सके—ऐसा कौन माई का लाल है!' ......

'मा दुर्गा मुझे शक्ति दें कि मैं आफतों को चीरता हुआ मंजिल की ओर बढ़ता जाऊँ!'......

—'बादशाह आलमगीर तशरीफ ला रहे हैं।'—एक प्रहरी ने सूचना दी।

दुर्गादास का ध्यान टूटा।

और, औरङ्गजेब ने बड़ी शान से दरबार में पदार्पण किया।

अभिवादन के लिए दुर्गादास उठ खड़े हुए।

—'दुर्गादास!' औरङ्गजेब की गंभीर आवाज।

दुर्गादास झुक कर आदेश की प्रतीक्षा करने लगे।

—'महाराज यशवन्त सिंह की मौत ने मेरे सामने एक सवाल पैदा कर दिया और उसे हल नहीं कर सकने की वजह से मैंने तुम्हें तकलीफ दी।'—औरङ्गजेब ने खाँसकर गला साफ किया।

—'वह कौन-सा सवाल है, बादशाह सलामत?'

दुर्गादास का स्वर उत्सुकतापूर्ण।

—'मारवाड़ का तख्त सूना है।' औरंगजेब ने कहा—'मैं चाहता हूं जल्द से जल्द किसी काबिल और ताकतवर इंसान के हाथ में वहाँ की हुकूमत की बागडोर पकड़ा दूँ। महाराज की मौत की खबर से मुमकिन है वहां बागी अपना सिर उठायें।...'

—'आप फिक्र नहीं करें, हुजूर!' दुर्गादास का संयत स्वर--'यशवन्त सिंह की नई महारानी इस योग्य हैं कि अपने राज्य का शासन भार भली-भाँति सँभाल सकें। और, बागियों के सिर से खिलवाड़ करने के लिए मेरी तलवार काफी है। मैं अपने स्वामी के राज्य की रक्षा किसी कीमत पर करूँगा।'

—'तुम्हारी बहादुरी में शुबहा नहीं, दुर्गादास!'–औरङ्गजेब बोल उठा—'मगर मैं नहीं चाहता कि महारानी राज्य के झमेले में हाथ डालें!'

—'वह क्यों, जहांपनाह?'

दुर्गादास के कान खड़े हो गये।

—'इसलिए कि खुदा ने औरतों की पैदाइश हाथों में तलवार पकड़ने के लिए नहीं की।'

—'जहाँपनाह !'—दुर्गादास ने सँभलकर कहा—'हुकूमत के लिए शासक का बुद्धिमान होना आवश्यक है और स्त्रियाँ, पुरुषों की अपेक्षा, अधिक चतुर होती हैं।'

—'कमजोर शासक हुकूमत को नहीं संभाल सकता, दुर्गादास !'

—औरंगजेब बोल उठा—'वह राज्य के लिए मुसीबत का बायस बन जाता है।'

—'बल से बुद्धि बड़ी है, बादशाह सलामत !'—दुर्गादास ने कहा-'और, हिंदू लोग स्त्रियों को शक्ति का अवतार मानते हैं।'

—'तुम जिस कदर बहादुर हो, उसी तरह समझदार भी।'

औरङ्गजेब गंभीर हो उठा। बोला—'मैं यशवंत सिंह के पिछले कारनामों···मतलब···अहसानों का बदला चुकाना चाहता हूँ .....'

—'मुझे आप-जैसे इंसाफपसंद बादशाह से ऐसी ही उम्मीद है।'—दुर्गादास ने अपने भड़कते हुए गुस्से को रोका।

—'मेरी ख्वाहिश है,'—औरङ्गजेब ने दुर्गादास के मुख की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा—'महारानी मेरे महल में ही आराम से रहें और उनका बच्चा यहीं परवरिश पाये।'

दुर्गादास का दाहिना हाथ तलवार की मुठ पर जाकर रुक गया। सामने तहव्वर खाँ आ खड़ा हुआ।

दुर्गादास ने उसकी चुनौती आँखों-आँखों में ही स्वीकार कर ली और मौन भाषा में ही उत्तर दिया—'हम बहुत जल्द लड़ाई के मैदान में मिलेंगे।' बोले—

—'महारानी इसे कबूल नहीं करेंगी, जहाँपनाह !'

दुर्गादास ने छाती के भीतर ज्वालामुखी।

—'तुम जोर दोगे तो वे इन्कार न करेंगी।'

—'मैं तो उनका सेवक हूँ।'—दुर्गादास बोल उठा—'किसी तरह का दबाव गुस्ताखी होगी।'

—'मारवाड़ की गद्दी मैं तुम्हें सौंप दूँगा।' औरंगजेब बोला—'दरबार में तुम्हें जगह देने का वादा भी करता हूँ।'

—'जहाँपनाह !'—दुर्गादास आवेश में बोला-'मेरे पिता की ज़िंदगी जिसकी सेवा में गुजरी और जिसने देहात के झोपड़े से बुलाकर मुझे राजमहल में पलने और पोषित होने का अवसर दिया, उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके मासूम बच्चे और विधवा महारानी के साथ विश्वासघात करूँ—आपकी यह सीख क्या उचित है ?'

औरङ्गजेब की भृकुटी पर बल पड़ गये। उसने क्रोधावेश में कहा—'साफ-साफ सुनलो, दुर्गादास ! मुझे यशवंत सिंह की नई महारानी और उसका बच्चा चाहिए। जीते-जी यशवंत सिंह से बदला नहीं ले सका तो उसके मरने के बाद भी अपनी छाती के भीतर काँटें नहीं पालूँगा।.......'

—'भला अबोध बच्चे ने आपका क्या विगाड़ा है ?'—दुर्गादास ने मन का आक्रोश दवा लिया।

—'खामोश रहो दुर्गादास !' औरङ्गजेब डपट कर बोला-'मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहता। मुझे महारानी और उसका बच्चा चाहिए। तुम अगर सुलह से दे दोगे तो आलमगीर पर तुम्हारा अहसान रहेगा और लड़ाई की राह पर तुम चले तो मेरी बेशुमार फौजें तुमसे जवरदस्ती दोनों को छीन लेंगी। बोलो, तुम्हें क्या पसंद है—लड़ाई या सुलह ?'

दुर्गादास ने कहना चाहा, 'राजपूत लड़ाई से नहीं डरते बल्कि आन के लिए प्राण न्योछावर करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।' किंतु परिस्थिति अनुकूल नहीं देख उन्होंने शांत रहना

ही उचित समझा। बोले—'जहांपनाह ! मुझे मौका दें कि मैं महारानी की राय जान सकूँ।'

दुर्गादास के विनम्र-स्वर ने औरङ्गजेब का क्रोध ठण्डा कर दिया। उसने कहा—'मुझे कल तक जवाब मिलना चाहिये। उम्मीद है, ऐसा सुनहला मौका तुम हाथ से नहीं जाने दोगे।'...

दुर्गादास ने झुककर अभिवादन किया और चल पड़ा।

—'तहव्वर खाँ !'

औरंगजेब अपने सेनापति की ओर मुखातिब हुआ।

—'जी हां, जहांपनाह !'

तहव्वर खाँ हुक्म का इंतजार करने लगा।

—'दुर्गादास परले दर्जा का होशियार जान पड़ता है।'

—'इसमें शुबहा नहीं, हुजूर !'

—'मुझे उस पर यकीन नहीं, खाँ ! तुम उसके महल के पास मुस्तैदी से खुद पहरा दो !.......'

—'जो इर्शाद, जहाँपनाह !' तहव्वर खाँ रुखसत हुआ।

औरंगजेब दाँत तले ओठ दवाये ख्यालों में डूबा रह गया।

●

डिम-डिम-डिम ! डिमक-डिमक-डिम !!... एक मदारी डमरू बजाते बंदर और बंदरी को लिए एक ओर जा रहा है।

दुर्गादास तूफान की तरह घोड़ा दौड़ाते यशवन्त सिंह के महल की ओर बढ़े जा रहे हैं कि अचानक उनकी निगाह मदारी पर पड़ती है।

वह घोड़ा रोक, उतर पड़े।

'डिमक-डिमक-डिम······'—मदारी का डमरू।

दुर्गादास को अपनी ओर बढ़ते देख मदारी कौतूहल से भरा ठिठक गया।

—'तुम मारवाड़ के रहने वाले हो!'—दुर्गादास मदारी को घूरते हुए पूछ बैठे।

—'जी हाँ, धर्मावतार!'—मदारी दाँत निपोड़ता हुआ बोला—'बंदर और बंदरिया नचाकर पेट पालता हूं।

—'तुम्हारे महाराज का क्या नाम है?'

—'महाराज यशवन्त सिंह।'

—'तुम्हें अपने स्वदेश से प्रेम है?'

—'किसको अपना वतन प्यारा नहीं होता, हुजूर?'

—'महाराज से मुहब्बत है?'

—'वाह, वैसे धर्मपरायण और दयालु महाराज को भला कौन नहीं चाहेगा?'

'तुम्हें यह जानकर दुःख होगा कि तुम्हारे महाराज यशवन्त-सिंह अब इस दुनिया में नहीं रहे।'

—'आप ऐसी बुरी बात मुँह से नहीं निकालें, सरकार!'-मदारी खीझता-सा बोला—'अभी हमारे महाराज सौ वर्ष जियेंगे!'

—'सचाई से कोई मुँह नहीं मोड़ सकता, मदारी!'—दुर्गा-दास की आंखें डबडबा आईं।

—'हाय मेरे महाराज!' मदारी की आँखें बरस पड़ीं—

'अब तो उनके वंश में कोई नहीं रहा जो गद्दी सँभालेगा।'

—'नई महारानी से एक नन्हा राजकुमार जो है।'

—'धन्य परमात्मा!'—मदारी ने आँसू पोंछ डाले।

—'मगर औरङ्गजेब उन्हें मार डालना चाहता है।'

—'यह क्यों महाराज ?'—मदारी घबड़ा उठा—'नहीं, नहीं; ऐसा नहीं होगा। आप किसी तरह नन्हें राजकुमार को जान बचाइये ! भगवान् आपका भला करेंगे।'

—'मुझे पहचानते हो ?'—दुर्गादास पूछ बैठे।

—'कहीं देखा है···मगर ख्याल नहीं—कहाँ देखा !'

—'दुर्गादास को जानते हो ?'

—'वाह ! भला वीर दुर्गादास को कौन नहीं जानता ?'

—'जानते हो, मगर पहचानते नहीं ?'

—'जी हाँ !'

—'मैं ही दुर्गादास हूं।'

—'महाराज !' मदारी ने दुर्गादास के मुँह की ओर देखा और उनके पाँवों पर गिर पड़ा।

—'उठो मदारी, आज तुम्हारे जिम्मे बहुत बड़ा काम सौंपना है।'

दुर्गादास ने उसे हाथ पकड़ कर उठाया।

—'आदेश दीजिए, धर्मावतार, मैं जान तक कुर्बान कर दूंगा।'

मदारी के मुँह पर आभा फैल गई।

—'आज तुम्हारी स्वदेश-भक्ति की परीक्षा है, मदारी !'

—'सरकार मुझे कभी पीछे नहीं पायेंगे।···'—मदारी भावावेश में।

और, थोड़ी देर बाद ही वही मदारी स्वर्गीय महाराज यशवन्तसिंह के निवास-स्थान के आगे वह डमरू बजा रहा है—

'डिम-डिम-डिम ! डिमक-डिमक-डिम !!····'

—'मदारी ! महल में चलोगे ?···' एक राजपूत सिपाही

मदारी के पास आ गया।

मदारी ने चौंक कर देखा सिपाही की ओर।....

—'चलूँगा, क्यों नहीं सरकार ? मैं तो तमाशे दिखाकर, गुजर करता हूं।'

—'डरो मत !' सिपाही ने कहा—'महारानी छोटे राजकुमार को बन्दर का नाच दिखाना चाहती हैं।'

—'यह मेरा सौभाग्य है !'—मदारी प्रसन्नता से फूल उठा –'चलिए सरकार ! आज बंदर और बंदरिया का विवाह करा कर राजकुमार को खुश नहीं करूँ तो मेरा मदारी नाम नहीं।'

और, उसने बंदर-बंदरिया को खींचते हुए कहा—'चलो, महावीर हनुमान के चेलो ! आज महारानी को अपना भूखा पेट दिखाकर सोने के जेवर इनाम में लो !....'

बंदरों ने किलकारी मारी।

सिपाही के पीछे-पीछे मदारी महल के भीतर घुसा।

दुर्गादास उसके सामने आये—

'आँगन में बंदर-बंदरिया का नाच कराओ, मदारी ! विदाई के समय इनाम के लिये मुझसे मिल लेना !'

—'बहुत अच्छा सरकार !'...मदारी के हाथों में डमरू थिरक कर गा उठा—'डिम-डिम-डिम ! डिमक-डिमक-डिम !!'

विशाल आँगन में बंदर और बंदरिया अपने कौतुक दिखा रहे हैं।

खेल समाप्त होने के पश्चात् एक सिपाही ने कहा–'महारानी तुम्हें पुरस्कार देने के लिए बुला रही हैं।'

मदारी के अधरों पर मुस्कान खेल गई।

सिपाही के साथ वह एकान्त कमरे में पहुंचा।

वहां दुर्गादास के अतिरिक्त उसने भभूके की तरह तेजस्विनी

और बिजली-सी रूपवती नारी को सफेद परिधान में, बाल बिखराये हुए पाया। उसे लगा, उसके सामने साक्षात् चण्डिका खड़ी हैं। श्रद्धा और भक्ति से गद्-गद् हो उसने साष्टांग प्रणाम किया।

—'सुखी रहो, मदारी!...' महारानी के मुँह से निकला और वह अपनी गोद में खिलते गुलाब की तरह राजकुमार के मुख की ओर निहारने लगी।

—'समय कम है, महारानी!' दुर्गादास ने कहा—'राजकुमार को मदारी की गोद में सौंप दीजिये!'

—'मदारी!'—महारानी ने मदारी की ओर देखा—'तुम अपरिचित हो मगर दुर्गादास की बातों पर विश्वास कर राजकुमार को तुम्हें सौंप रही हूँ। अगर राजकुमार किसी तरह औरंगजेब के हाथों में पड़ गया तो स्वर्गीय महाराजा के कुल का चिराग सदा के लिए बुझ जायगा।'

—'मेरे पास बल नहीं, मगर बुद्धि है। सुना है, बल से बुद्धि बड़ी होती है।'—मदारी का गंभीर स्वर—'आज उसकी परीक्षा लूँगा। अगर असफलता मिली तो मैं मौत के भयानक मुँह में समाकर भी बच्चे की रक्षा करने का प्रयत्न करूँगा।'

मदारी ने दोनों हाथ फैला दिए।

महारानी ने बच्चे के मस्तक पर प्यार की मुहर लगादी।

काँपते हाथ आगे बढ़े और मदारी ने राजकुमार को छाती से चिपका लिया।

—'नियत स्थान पर जल्द से जल्द मिलने का प्रयत्न रहे!'—दुर्गादास की चेतावनी।

—'जो आज्ञा!'—मदारी, राजकुमार को अपने बड़े-से झोले में छिपा रहा है।

'सुनो, मदारी !....'—महारानी बोल उठीं।

मदारी के पाँव रुक गये।

—'अगर औरंगजेब के चंगुल से निकल कर, कोई नियत स्थान पर तुमसे नहीं मिल सका तो तुम उदयपुर के महाराणा राजसिंह के पास राजकुमार को पहुंचा देना !'

—'बहुत अच्छा, मा !'

—'यह मोतियो का हार ले लो !' महारानी ने अपने गले से हार निकाल मदारी की ओर बढ़ाते हुए कहा—'मेरे कुल के दीपक की रक्षा का पुरस्कार है यह।....'

—'मा ! मैं गरीब हूं इसलिए मेरा अपमान नहीं करें !'—मदारी का गला भर आया।–'अत्याचार के खिलाफ लड़ना हर इंसान का कर्त्तव्य है। मैं अपने फर्ज को पहचानता हूं।'

—'मुझे माफ करो, मदारी !'—महारानी ने कहा—'तुम्हें पहचानने में मुझसे भूल हो गई।....नगर-नगर घूम कर तुम औरंगजेब के अत्याचार की चर्चा करना और लोगों से कहना—जुल्म सहना गुनाह है, क्योंकि उससे अत्याचारी के हौसले बढ़ते हैं।...'

—'माँ !' मदारी के मुख पर दिव्य आभा फैल गई—'गाँवों में घूम-घूमकर, ऐसी आग लगाऊँगा जिसकी लपटें अत्याचारी का नामोनिशान मिटा कर रहेंगी।...'

मदारी ने अपने कदम बढ़ाये।

महारानी अश्रु भरी आँखों से उसे निहारती रहीं।

—'यह समय व्यर्थ गँवाने का नहीं है, महारानी !'—दुर्गादास ने महारानी का ध्यान भंग किया–'अब हमें जल्द-से-जल्द शत्रु की माँद से निकल जाना चाहिये। शत्रु बलवान है। अगर वह सावधान हो गया तो मौत को गले लगाने के अतिरिक्त हम

और कुछ नहीं कर सकेंगे ।'

—'तुमने सारा प्रबंध ठीक कर दिया है ?'—महारानी की प्रश्नभरी दृष्टि दुर्गादास पर पड़ी।

—'जी हाँ !'

—'मैं महल की स्त्रियों का इंतजाम करलूँ !...'

महारानी द्रुतगति से एक ओर निकल गई।

मदारी महल के बाहर निकला। उसकी दृष्टि एक रौबीले मुगल सवार पर पड़ी, जो उसे घूर रहा है।

मुगल-सरदार के पीछे पचास सवार हैं।

...वह तहव्वर खाँ है।

मदारी के पाँव तले जमीन खिसकी। मगर उसने अपने को सँभाला। डमरू वाला हाथ उठा और फिर वही आवाज....'डिम डिम-डिम ! डिमिक-डिमिक-डिम...!!'

उसने बड़े उत्साह से आगे कदम बढ़ाया और बंदर की ओर मुखातिब होकर कहा—'अरे, आदम ! तेरी किस्मत का सितारा आज बुलन्द है। एक अशर्फी तेरी शादी के लिये महारानी ने दी और एक अशर्फी सरदार से माँग ! तेरे पास दो अशर्फियाँ होंगी तो तुझसे शादी करने से 'हौआ' इंकार नहीं करेगी।...'

—'क्यों री हौआ !' उसने बंदरिया को संबोधित कर कहा—'जब आदम के पास दो अशर्फियाँ हो जायँगी तब तुम उससे ब्याह रचाओगी न ?'

बंदरी ने सिर हिलाकर इंकार किया।

—'अरी वाह, तुम्हारी माँग तो दिनों दिन बढ़ती जा रही है।'—मदारी ने डमरू बजा कर कहा—'अच्छा बोल ! तुम तीन अशर्फियों पर राजी हो जायगी ?'

बंदरी ने फिर सिर हिलाया।

—'तीन पर भी इंकार ही करती है।'–मदारी मुस्कुराया। बोला—'पाँच लेगी ?'

बंदरी ने फिर वही हरकत की।

—'अच्छा, कितना लेगी ? सच-सच बता !....'

बंदरी उचक कर मदारी के कान के पास अपना मुँह ले गई।...

मदारी खिलखिला उठा। बोला—'दो-चार भी नहीं, पूरे ग्यारह अशर्फियाँ माँगती है। अब मैं समझ गया, तुम 'आदम' को नहीं चाहती।....'

—'आदम !' मदारी ने कड़क कर कहा—'तू हिम्मत नहीं हार, पट्ठे ! सामने हाकिम घोड़े पर सवार हैं। उनके पाँव पकड़ ! शायद उनका दिल पसीज जाय और वह दस अशर्फियाँ खैरात कर दें !....'

मदारी ने रस्सी ढीली कर दी।

बंदर उछलकर तहव्वर खाँ की गोद में जा बैठा।

खाँ ने गुस्से में बंदर को मदारी की ओर फेंका और उसकी ओर मुखातिब होकर बोल उठा–'बदतमीज ! नालायक !! मुझे पहचानता नहीं !...'

खाँ का हाथ तलवार की मूठ पर पड़ा।

मदारी के होश उड़ गये।

—'गुस्ताखी माफ हो, सरकार !'....सहमता, काँपता वह एक ओर भाग चला।

●

तहव्वर खाँ ने घोड़ों की टापों की नई आवाज़ सुनी। उसके कान खड़े हो गये।

तभी उसने अभूतपूर्व दृश्य देखा।

स्वर्गीय महाराज यशवन्त सिंह की महारानी नंगी तलवार लिये, दुर्गा की प्रतिमा-सी लगती, घोड़े पर सवार, महल के फाटक से निकली। उसके पार्श्व में एक काले घोड़े पर सवार दुर्गादास, अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित, घोड़ा बढ़ाये चले आ रहे हैं।

महारानी के पीछे पन्द्रह स्त्रियाँ बगल में तलवार लटकाये और माथे पर रक्त का चंदन लगाये घोड़े पर सवार आ रही हैं।...

तहव्वर खाँ क्षणभर अपलक नेत्रों से महारानी को निहारता रहा और, उसकी तेजस्विता की मन-ही-मन प्रशंसा करता, वह दुर्गादास के सामने घोड़ा दौड़ाता आ पहुँचा। बोला—'दुर्गादास ? आपको मालूम नहीं, बादशाह सलामत ने महारानी को महल से बाहर कदम नहीं निकालने की हिदायत की है ?'

—'मालूम है, खाँ !' दुर्गादास का निर्भीक स्वर—'और उससे भी अधिक जो बादशाह के दिल में है—उसका भी पता है !'

—'फिर भी आप उनके हुक्म के खिलाफ कदम उठा रहे हैं !' तहव्वर खाँ के स्वर में चेतावनी।

दुर्गादास ने कहना चाहा—'मैं महारानी का सेवक हूँ—आपके बादशाह का नहीं, जो उनकी इच्छा के अनुसार फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाऊँ।' मगर परिस्थिति नाजुक देख उन्होंने नरमी से काम लेने में ही भलाई देखी। प्रकट में वे बोले—'मुझे यह नहीं मालूम कि बादशाह ने महारानी की पूजा पर भी रोक लगायी है।'

—'पूजा ? किसकी पूजा ?'—तहव्वर खाँ पूछ बैठा।

—'रणचंडी की पूजा।'—दुर्गादास ने कहा—'मेहरबानी कर आप राह छोड़ कर अलग हट जायँ।'

—'हमारे बादशाह सलामत ने 'पूजा' पर रोक नहीं लगाया है।'

—तहव्वर खाँ ने कहा—'लेकिन, महारानी महल के भीतर

ही पूजा कर सकती हैं ।'

—'मगर रणचंडी की पूजा तभी सफल होती है जब उसकी विधि मैदान में की जाती है ।'

—'यह 'रणचंडी' किस देवता का नाम है, दुर्गादास ? मैंने तो आज तक यह नाम नहीं सुना ।'

तहव्वर खाँ परेशान-सा दीख रहा है ।

—'रणचंडी देवता नहीं, बल्कि देवी का नाम है ।'–दुर्गादास ने मुस्कुराते हुए कहा—'आप हिंदुस्तान में काफी दिनों से हैं, फिर भी 'रणचंडी' का नाम नहीं सुना । यह बड़े ही अफसोस की बात है ।'

—'मुझे बादशाह से इसके बारे में हुक्म लेना पड़ेगा । तबतक दुर्गादास, आप महारानी को रोक रखें ।'

—'खाँ ! पूजा नहीं रुक सकती ।'—महारानी के माथे पर बल आ गये । रूखे स्वर में बोलीं—'तुम राह छोड़ कर अलग हटो !'

—'शान्त रहिए, महारानी !'—दुर्गादास ने स्थिति को काबू में करना चाहा—'तहव्वर खाँ बहादुर हैं । बादशाह का हुक्म मानना उनका फर्ज है । उनकी बातों को बुरा नहीं माना जाय !…'

और वे खाँ की ओर घूम पड़े । बोले—'राजकुमार महारानी के साथ नहीं हैं—यह आप देख रहे हैं । क्या आपको यकीन है कि महारानी राजकुमार को खतरे के मुँह में डाल देंगी !…… आप महल पर पहरा रख सकते हैं ।…'

तहव्वर खाँ ने बड़े ध्यान से एक-एक कर घुड़सवारों को देखा । उसकी आँखें राजकुमार को खोज रही हैं ।

महारानी ने घोड़े को एड़ लगाई और बोली—'आगे बढ़ो,

दुर्गादास !'......

तहव्वर खाँ भौंचक खड़ा रहा। उसकी आँखों के सामने से दुर्गादास के साथ कुल स्त्रियाँ घोड़े दौड़ाती निकल गईं।

और, जब टापों की ध्वनि क्षीण होते-होते लोप हो गई तब उसका ध्यान टूटा। उसने सन्तोष के लिए एक सैनिक से पूछा—'यशवंत सिंह के राजकुमार महल के भीतर हैं तो हमें कोई चिंता नहीं करनी चाहिये, नसरल्ली खाँ !...'

—'बेशक, हुजूर !' उस सैनिक ने कहा—'मा का दिल बड़ा ही नाजुक होता है—वह नन्हें बच्चे को छोड़कर हरगिज नहीं भाग सकती।'

—'और, इबादत में दखल देना भी तो गैर मुनासिब !'—उसकी प्रश्नभरी दृष्टि सैनिक पर।

—'जी हाँ, हुजूर !'—सैनिक बोला—'आपने बहुत भला किया जो उनको दुबारा नहीं छेड़ा। महारानी के चेहरे से साफ जाहिर होता था कि उन्हें, आपकी राह में खड़ा होना, एकदम पसन्द नहीं था।'

—'तुम्हारा अन्दाजा सही है।'—तहव्वर खाँ ने कहा—'अच्छा हुआ जो लड़ाई बच गई। औरतों के खिलाफ तलवार उठाने में मुझे बड़ी हिचक होती है। जीतो तो कोई नाम नहीं और हारो तो चिल्लू भर पानी में डूब मरो !'

—'बजा फरमाते हैं, हुजूर !'

—'देखो, पूरी होशियारी से राजकुमार की रखवाली करनी है।'

—तहव्वर खाँ ने कहा—'महल के बाहर जो कोई भी निकले, उसकी तलाशी ले लेना बहुत जरूरी है। एक बार मिठाइयों के टोकरे में बैठकर, शिवाजी अपने लड़के शंभा जी के साथ

भाग निकला और आलमगीर बादशाह के लिए सर-दर्द की वजह बन गया।'

—'आप खातिर जमा रखें, हुजूर।'–एक दूसरे मुगल सैनिक ने कहा—'हम महल के भीतर से निकलने वालों की जेबों तक की तलाशी भी लेंगे!…'

और, दो घंटे बाद, प्रधान सेनापति दिलेर खां पाँच सौ घुड़सवारों के साथ वहां आ पहुँचा। उसके चेहरे से परेशानी टपक रही है। आते ही उसने प्रश्न किया—

—'महारानी कहाँ हैं, तहव्वर खाँ?'

—'वे तो दुर्गादास के साथ पूजा करने गई हैं।' तहव्वर खाँ आशंका से भर गया।

—'तुम धोखा खा गये खाँ।' दिलेर खाँ के मुँह से 'आह' निकल गई।

—'क्या हुआ भाई जान्?'…

तहव्वर खाँ का मुँह सूख गया। वह उत्सुक हो उठा।

'बादशाह को एक गुप्तचर ने खबर दी है कि महारानी जोधपुर की ओर निकल गई।'—दिलेर खाँ उदास हो गया।

—'यह कैसे हो सकता है, भाई-जान्!' तहव्वर घबड़ा उठा-'उनका राजकुमार तो महल के भीतर है।'

दिलेर खाँ के अधरों पर उपेक्षा-भरी मुस्कान खेल गई—'दुर्गादास ने कच्ची गोटी नहीं खेली है, खाँ!'

और, बदहवास तहव्वर महल के भीतर घुसा मगर उसे किसी प्राणी के वहाँ रहने का निशान भी नहीं मिला।

वह सर पकड़ कर बैठ गया।…

दिलेर खाँ ने उसे आश्वासन दिया–'खाँ! तुम घबड़ाओ नहीं। मैं बादशाह सलामत को मना लूँगा। हाँ, तुम्हारी बेव-

क़ूफो पर मुझे हँसी भी आती है और अफ़सोस भी होता है।…
उठो! हिम्मत नहीं हारो!….'

●

कश्मीरी बेगम के सिर पर बिजली टूट पड़ी।—'यशवंत सिंह की रानी को बादशाह महल में रखना चाहते हैं? तू क्या कह रही है, बदरुन्निसा!'

—'भला बाँदी आपसे झूठ बोलेगी, मलक-ए-आलम!'—बाँदी की रहस्यमय दृष्टि कश्मीरी बेगम के मुख पर।

—'तुझे यह खबर कैसे मिली?'

—'मैंने खुद अपने कानों से सुना।….'

—'क्या सुना?'

बाँदी ने इधर उधर देखा, कहीं और कोई उसकी बात तो नहीं सुन रहा है! और, जब उसे विश्वास हो गया कि उसकी बातें सुनने के लिए कश्मीरी बेगम के अतिरिक्त वहाँ कोई नहीं है, तब उसने मुँह खोला—'मलक-ए-आलम! बादशाह सलामत दुर्गादास से कह रहे थे—मेरी ख्वाहिश है, महारानी मेरे महल में आराम से रहें…।'

कश्मीरी बेगम तड़प उठी।—'दुर्गादास ने क्या जवाब दिया?'

—'मैं उनका जवाब सुन नहीं सकी, मलक-ए-आलम।'—बाँदी ने असमर्थता प्रकट करते हुए कहा—'अगर वहाँ रुक जाती तो बादशाह सलामत को शुबहा होता!'….

कश्मीरी बेगम क्षण भर मौन, क्रोधावेश में दाँतों से अधर दबाती रही। तत्पश्चात् बोल उठी—'तूने यशवंत की रानी को देखा है, बदरून्निसा?'

—'जरूर देखा है, मलक-ए-आलम।' 'शोले की तरह

दीखती है।....'

—'क्या मुझसे अधिक हसीन है?'—कश्मीरी बेगम के तेवर चढ़ गये।

बाँदी रूपगर्विता कश्मीरी बेगम के स्वभाव से परिचित होने के कारण बोली—'आपकी खूबसूरती का मुकाबिला तो कोई हूर भी नहीं कर सकती, मलक-ए-आलम!'

कश्मीरी बेगम को कुछ संतोष मिला। क्षण भर रुक कर उसने प्रश्न किया—'भला उसकी उम्र क्या होगी?'

—'उसकी उम्र तो बीस भी नहीं पार कर सकी है, मलका मुअज्जमा!' बाँदी, रानी के प्रति हेच समझने का भाव दिखलाती, बोल उठी।

—'बदरुन्निसा! मर्दों का भरोसा नहीं करना चाहिये।'

—'दुरुस्त फरमाती हैं, मेरी सरकार!'

—'तू मेरी मदद कर सकेगी?'

—'मदद?' बाँदी भावावेश में बोली—'हुक्म पर मैं अपने हाथों अपना गला तराश सकती हूँ, मलक-ए-आलम।'

—'इसीलिए तो औरों से मैं तुझे बहुत मानती हूँ।'

—'बजा है।'

—'यशवंत सिंह की रानी किसी तरह बादशाह के हाथ नहीं लगे—ऐसी कोशिश करनी चाहिये।'—कश्मीरी बेगम फुसफुसा उठी।

—'बिजली भी कभी मुट्ठी में आती है, सरकार!'

—'क्या मतलब?...'

कश्मीरी बेगम विस्मय और उत्सुकता से उसे निहारने लगी।

—'बादशाह सलामत ने महारानी के महल पर पहरा बैठाया था कि वह उड़ न जाय!' बाँदी बोली—'पहरेदार सिपहसालार

तहव्वर खाँ थे जो टुकुर-टुकुर रानी का मुँह निहारते रह गये और वह घोड़े पर सवार बड़ी शान से निकल गई।'

—'क्या यह सच है ?'—कश्मीरी बेगम के चेहरे पर हर्ष ने अधिकार जमाया।

—'लगता है, बादशाह सलामत के पास आप कुछ वक्त से नहीं गईं।'—बाँदी बोली—'नहीं तो यह सवाल करने की जरूरत नहीं पड़ती।'

—'मेरे सवाल का जवाब दो !'

—'मलक-ए-आलम !'—बाँदी ने कहा—'खबर मिलते ही बादशाह सलामत अङ्गारों पर लोटने लगे। उन्होंने सिपहसालार दिलेर खाँ को पाँच सौ चुने हुए घुड़सवारों के साथ महारानी को कैद कर लाने के लिए भेजा।'

—'क्या रानी कैद हुई ?'

कश्मीरी बेगम के हृदय की धड़कन रुकती हुई जान पड़ी।

—'जी नहीं, छूटा हुआ तीर कभी वापिस नहीं आता।'—बांदी ने कहा—'दिलेर खाँ नाकामयाबी को चादर ओढ़े, मुँह लटकाये वापिस आ गये।'

—'बहुत खूब !'—कश्मीरी बेगम प्रसन्नता से फूल उठी—'मेरी अच्छी, बदरुन्निसा ! तू ने बड़ी अच्छी खबर सुनाई। अब मैं जहांपनाह को उनकी कामयाबी (!) पर मुबारकबाद दे आऊँ !...'

और, उत्साह से भरी कश्मीरी बेगम औरंगजेब के पास पहुँची। औरङ्गजेब गुस्से में भरा चहल-कदमी कर रहा है।

—'जहाँपनाह !'...

कश्मीरी बेगम का स्वर सुन उसने सर घुमाया।

—'आओ, मलके !'.... बादशाह ने लम्बी सांस ली।

—'क्या यह सच है कि यशवंत की रानी आलमगीर की ताकत को अँगूठा दिखा गई ?'—कश्मीरी बेगम पूछ बैठी।

—'तहव्वर की बेवकूफी की वजह से ऐसी जिल्लत उठानी पड़ी।' औरङ्गजेब के मुँह से उच्छ्वास निकल गया।

—'आपको जिल्लत उठानी पड़ी या यशवंत की रानी की किस्मत फूट गई जो वह आपके महल में बेगम बनने से महरूम रह गई ?'

कश्मीरी बेगम के व्यंग्य से औरङ्गजेब चौंक पड़ा।···वह एक टक कश्मीरी बेगम के तमतमाये चेहरे को निहारता, विचारों से टकराता रहा।

—'मेरे मुँह की ओर क्या देख रहे हैं ?'—कश्मीरी बेगम बोल उठी-'शायद आप सोच रहे होंगे, यशवन्त की रानी की खूबसूरती के आगे मेरे हुस्न की कोई हस्ती नहीं !'

औरङ्गजेब के मुँह से अनायास हँसी फूट पड़ी।

—'यशवन्त की रानी की खूबसूरती की याद आते ही आप खिल उठे।'—कश्मीरी बेगम ने तड़पते हुए कहा—'देर क्यों कर रहे हैं ? दिलेर को हुकम दीजिये कि वह सेना लेकर मारवाड़ पर टूट पड़े और रानी को कैद कर आपके कदमों में हाजिर कर दे।'

औरङ्गजेब ने हँसते-हँसते कहा—'तुम्हारा कसूर नहीं मलक-ए-आलम ! दुनिया की तमाम औरतों की ऐसी ही आदत होती है।'

—'सौत से चिढ़ने की न ?'

—'नहीं; सुबहा करने की।····'

—'आप यह कहना चाहते हैं कि मैं आप पर इलज़ाम लगा रही हूँ।'

—'बेशक। यही हकीकत है।'

—'गुस्ताखी माफ़ हो, जहाँपनाह !'—कश्मीरी बेगम तुनक

पड़ी—'यशवन्त की रानी को महल में रखने से आपका क्या मतलव था ?'

'मलक-ए-आलम !'—औरंगजेब गंभीर हो गया—'अगर दूसरे ने यह सवाल किया होता तो उसके लिए कुछ और ही जवाब देता, मगर मैं अपनी मुहब्बत से मजबूर हूँ कि तुमसे सचाई छिपा नहीं सकता।....मैं यशवन्त सिंह की रानी और उसके बच्चे को अपने कब्जे में रखना चाहता हूँ।...'

'भला मासूम बच्चे ने आपका क्या बिगाड़ा है ?' कश्मीरी बेगम ने उत्सुकतावश प्रश्न किया—'रानी ने आपको क्या नुक-सान पहुँचाया है ?'

—'यशवंत सिंह ने मेरी पीठ में एकबार छुरी मारी थी। उस ने मेरा खजाना लूट लिया था।'—औरङ्गजेब लम्बी साँस लेकर बोला-'खुदा की मर्जी थी, जो शुजा ने मेरी सेना पर चढ़ाई करने में देर कर दी और लड़ाई का पासा ही पलट गया।...'

—'उसके बाद भी तो वह आपकी खिदमत करता रहा। मौके-मौके पर बलवाइयों के सिर कुचल कर उसने सल्तनत को डूबने से क्या नहीं बचाया !...और मान लीजिए, उसने कसूर किया तो क्या यह मुनासिब है कि शौहर के कसूर का बदला औरत और उसके मासूम बच्चे से लिया जाय ?'

—'मलक-ए-आलम !' औरङ्गजेब ऊब कर बोला—'इस मामले को मेरे लिए छोड़ दो तो बेहतर होगा। आलमगीर में एक कमजोरी है कि वह ग़लत या सही, जो भी कदम उठायेगा, फिर पीछे नहीं हटायेगा। मैं यशवन्त सिंह के खानदान का चिराग बुझाकर उससे बदला ही नहीं लेना चाहता बल्कि राजपूतों से लड़ाई भी चाहता हूँ। इस्लाम के उसूलों पर सल्तनत की हुकूमत चलाने में राजपूत और मराठे राह के रोड़े हैं। मैं रोड़ों को हटा-

कर ही रहूँगा।'

—'तो आप अपने पाँव में आप ही कुल्हाड़ी मारने पर तुल गये हैं।'—कश्मीरी बेगम ने कहना चाहा मगर औरङ्गजेब के हठी स्वभाव के कारण मौन रह गई।

●

सुरा और सुन्दरी का पुजारी अकबर नाच-गान को बहार लूट रहा है। सुन्दरियों के घुँघरू और उत्तेजक संगीत की स्वर-लहरियाँ मीठी बेहोशी की तरह उसके और उसके मुसाहबों के मन-प्राणों पर जादू कर रही है।

उसी समय महफिल में पहरेदार ने प्रवेश किया। अभिवादन के बाद उसने कहा—'दिल्ली से घुड़सवार आये हैं, शाहजादे-आलम !'

'बदतमीज !' अकबर के माथे पर बल पड़ गये। बोला—'उन्हें लाने की जरूरत नहीं। कह दो, रात में वह आराम करें। कल सुबह उनकी खबर ली जायगी।'

—'कोई जरूरी काम है, हुजूर !'

पहरेदार ने सकपकाते हुए कहा और हुक्म की राह देखने लगा।

—'कबाब में हड्डी की तरह तू कहां से टपक पड़ा कम्बख्त !' अकबर खीझ उठा।

—'उन्हें क्या जवाब दूँ, खुदाबंद !'—क्षणभर बाद पहरेदार बोल उठा।

—'आँखों से दूर हट !'—अकबर डपट कर बोला और सुन्दरियों की ओर मुखातिब होकर कहा—'शाबाश ! क्या कहने है !'......

पहरेदार हाथ मलता लौट चला।

—'एक प्याला फिर अपने हाथों से पिला मेरी शबनम !'

शबनम प्याले में शराब ढालने लगी।

और, अकबर प्याले को ओठों के पास ले गया कि उसके पाँव तले मिट्टी खिसक गई।

उसके सामने सिपहसालार तहव्वर खाँ खड़ा है।

—'क्या हुआ हुजूर !'…

शबनम अचरज से भरी, कभी अकबर की ओर और कभी तहव्वर खाँ की ओर देखने लगी।

तहव्वर खाँ कुछ देर अवाक् खड़ा रहा। अकबर की हालत देख पहले तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि यह औरंगजेब का लड़का 'अकबर' हो सकता है। कट्टर शरई मुसलमान बादशाह का बेटा शराब और तवायफों को गले लगाये—यह क्या मुम-किन है ?

किन्तु, उसे अपनी आँखों पर जब विश्वास हुआ तब घृणा से वह भर उठा। बोला—'शाहजादे-आलम ! मुझे सख्त अफसोस है ....'

अकबर पत्थर की मूर्ति की तरह अब तक मौन बैठा था मगर एकाएक उसके साहस ने उसे जवाब दे दिया। उसने समझा, किसी दुश्मन ने बादशाह के कान फूंक दिये। यह तहव्वर मुझे कैद कर दिल्ली ले जाने के लिए पहुंचा है। उफ ! अपने दादा शाहजहाँ और बहन जेबुन्निसा की तरह मुझे अपनी सारी जिंदगी कैद में गुजारनी पड़ेगी। नहीं, नहीं; ऐसा नहीं होगा……

—'मुझे माफ कर दो, तहव्वर ! मैं बेकुसूर हूँ।……'

—'शाहजादे-आलम !… …'

—'बस कुछ नहीं, खाँ !' अकबर गिड़गिड़ा उठा—'मैंने अब्बा के खिलाफ जुबान भी नहीं हिलाई। तुम मेरे दरबारियों से गवाही

ले सकते हो।…'

अकबर उठ खड़ा हुआ। भय से उसका बुरा हाल है।

मुसाहबों को काटो तो खून नहीं।

तवायफें मन-ही-मन कह रही हैं—'या अल्लाह ! यह तूने कौन-सी बला भेज दी।'

—'आप मेरी बात भी सुनिए !……'

तहव्वर खां परेशान—अकबर का सिर फिर गया है।

—'वल्लाह, तुम बड़े जालिम हो; तुमसे खुदा समझे।….'

—अकबर बड़ी तेजी से जनानखाने में घुस गया।

—'शाहजादे-आलम की कबसे ऐसी हालत है ?'-तहव्वर खाँ पूछ बैठा। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अकबर के दिमाग की नसें ढीली हो गई हैं।

जिस मुसाहब की ओर वह बढ़ा, उसकी हालत दयनीय हो गई।

—'बोलते क्यों नहीं ? मुँह में जुबान क्या नहीं है ?—मुसाहब को मौन देख तहव्वर खाँ झुंझला उठा।

—'हुजूर ! इनकी हालत कुछ दिनों से ऐसी ही है।'—एक मुसाहब ने साहस बटोर कर कहा।

—'अच्छा हुआ जो मैं मौके पर पहुंच गया।'—तहव्वर खाँ ने शबनम को घूरते हुए कहा।

औरतों से पुरुषों की पाप-दृष्टि नहीं छिप सकती। चतुर शबनम ने परिस्थिति पर काबू करने की गरज से मुस्कुराते हुए कहा—'तशरीफ रखिए हुजुर।'

तहव्वर खाँ बगलें झाँकने लगा।

—'शर्माइए नहीं, मेरे सरकार ! महफिल को चमकाने की तकलीफ फरमाइए !'

शबनम ने मुस्कुराहट के साथ ही नयन-वाण से भी काम लिया। तहव्वर खाँ अपने को भूल शबनम के करीब ही जा बैठा।

मुसाहबों के होश लौट आये।

शबनम ने घी से चुपड़ी वाणी में पूछा—'हुजूर की तारीफ ?'

—'मैं बादशाह आलमगीर का सिपहसालार हूँ।'—तहव्वर खाँ ने दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा।

—'हमारी खुशकिस्मती जो आज आप हमारे बीच हैं।' शबनम मुस्कुरा-मुस्कुरा कर बिजली गिराये जा रही है।

—'बड़ी खुशी हुई हुजूर से मिल कर।'

—'हमें भी.......'

—'और, हमें भी...'

मुसाहबों ने एक-एक कर दाँव निपोड़े।

—'चुप क्यों हो, बहनो ?'—शबनम चहक उठी—'कोई फड़कती-सी चीज सुनाओ ! क्यों, हुजूर ?'

तहव्वर खाँ चौंक उठा। बोला—'मगर बादशाह सलामत गाने-बजाने से सख्त नफरत करते हैं।...'

—'बादशाह सलामत तो औलिया हैं।'—शबनम बोल उठी—'हमारी और उनकी क्या बराबरी ?'

तहव्वर खाँ हार मान कर खामोश।

●

.......अकबर भागता हुआ बेगम के पास पहुँचा।

'बेगम ! जल्द भागो !...'—वह हाँफने लगा।

—'क्यों, क्या हुआ ?'—बेगम घबड़ा उठी। रबेया के होश उड़ गये।

—'अब्बा ने तहव्वर खाँ को मुझे कैद करने के लिए भेजा है।...जल्दी करो ! कहीं हम तहव्वर के हाथ में पड़ गये तो

जिंदगी की फुलवारी उजड़ जायगी।'…

आगे बढ़ कर अकबर ने बेगम की कलाई पकड़ ली।

—'आप होश में नहीं हैं, मेरे आका!'……

—'मगर तहव्वर को तो पहचानता हूँ।'—अकबर की रोनी-सी सूरत बन गई।

बेगम ने रबेया की ओर रहस्यभरी नजरों से देखा और बोली—'देखो तो, रबेया! बात क्या है?'

—'कुछ मत देखो और सुनो, रजिया की मा! मैं कहता हूँ, जान की खैरियत चाहती हो तो भाग चलो।'—अकबर की घबड़ाहट बढ़ती जाती है।

—'सब्र से काम लें, मेरे आका! जल्दी नहीं करें।'—बेगम ने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

—'तुम मुझे कत्ल करवाना चाहती हो, बेगम?'–अकबर की नाक पर गुस्से ने अधिकार जमा लिया।

—'भला कोई औरत अपने शौहर का बुरा चाहेगी!'–बेगम बोली—'मैंने रबेया को भेजा है।…'

—'जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारी रबेया! मैं तो चला!' अकबर आगे बढ़ा। बेगम राह रोककर खड़ी हो गई। बोली—'क्या मुझे मुसीबत में छोड़ कर जाइएगा? और, रजिया को भी मौत के मुँह में ढकेल जाइएगा?……'

—'दिमाग मत चाटो। मौत सिर पर मड़रा रही है।'–अकबर चीख उठा।……

……'शाहजादे आलम! आप होश सँभालें!' उसी समय रबेया आ पहुँची।

—'कमबख्त! मेरे होश को क्या हुआ है?'—भयाकुल अकबर चिल्ला उठा।

—'तहव्वर खाँ आपको कैद करने नहीं आया बल्कि आपके नाम एक फरमान लाया है।' रवैया बोली।

—'कहाँ है फरमान ?'—अकबर पूछ बैठा।

'यह रहा।' रबैया ने उसके हाथ में एक खत पकड़ा दिया।

अकबर ने उत्सुकता से खत खोला—

'प्यारे अकबर,

तहव्वर खाँ को वहाँ का भार सौंप तुम फौरन दिल्ली चले आओ। अपनी बीवी और रजिया को भी साथ लिए आना !'

—आलमगीर

अकबर ने बेगम की ओर देखा और बेगम ने अकबर की ओर।

बेगम मुस्कुरा पड़ी।

अकबर ने लज्जा छिपाने के लिए कहा—'धत्त ?…'

●

दुर्गादास के साथ यशवंतसिंह की रानी उदयपुर पहुँचीं। उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने उन्हें बड़े आदर के साथ अपने महल में स्थान दिया और, राणा ने जब महारानी के उदयपुर पहुँचने का प्रयोजन पूछा तब दुर्गादास ने कुल कहानी विस्तार-पूर्वक उन्हें सुनादी।

राणा के मुँह से निकल पड़ा—'धन्य है वह मदारी जिसके स्वदेश-प्रेम ने महाराज यशवंत सिंह के कुल का चिराग बुझने से बचा लिया।…'

—'देशभक्तों की कमी नहीं, महाराणा जी !'—दुर्गादास ने कहा—'आवश्यकता है एक नेता की जो अत्याचारी के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई के लिए एक झण्डे के नीचे उन्हें खड़ा कर सके। राख के भीतर चिनगारी सुलग रही है। आग लगाने भर

की देर है।'

—'वह काम मैं करूँगी, दुर्गादास।' महारानी आवेश में बोल उठी–'मैं गाँव-गाँव घूमूँगी और जुल्म के खिलाफ आवाज उठाने के लिए देशवासियों को संगठन-सूत्र में बाँधने की कोशिश करूँगी।'

—'सेवक के रहते…'

'चुप रहो, दुर्गादास !' महारानी आवेश में बोल उठी—'तुम्हारा मतलब है, पति और पुत्र का हत्यारा औरंगजेब अपने राक्षसी पंजे मेरे एक मात्र पुत्र की ओर बढ़ाता जाय, अपने लम्बे दाँत राजपूताने पर गड़ाता जाय, मन्दिरों को तोड़वाकर, धर्म-शास्त्रों को जलवाकर अपनी ईर्ष्या की आग बुझाता जाय, जजिया से अपना खजाना भरता जाय और मैं महल में विश्राम करूँ ? यह नहीं होगा। मैं औरंगजेब को भूखी शेरनी की तरह चीर-फाड़ डालूँगी और उसके मनसूबे खाक में मिला दूँगी।…'

—'शाँत हो, महामाया !'—राजसिंह ने मुँह खोला–'लड़ाई अच्छी बात नहीं। औरंगजेब अपनी जलाई आग में स्वयं एक दिन समाप्त हो जायगा।'

—'लड़ाई अच्छी बात नहीं और मौन रहकर जुल्म सहना क्या बहुत अच्छी बात है ?'–महामाया तुनक पड़ी–'महाराणा जी, आप लोगों की यही मौन रहने वाली नीति तो दुश्मनों के हौसले बढ़ा रही है। हिन्दुस्तान के सभी राजपूत और मराठे, एक साथ खड़े होकर, ललकार दें तो शत्रु तख्त छोड़ भाग खड़ा हो।'

—'काश ! यह हो सकता, महामाया !'—राजसिंह के मुख पर वेदना झलक गई। बोले—'विदेशी को निमन्त्रण देकर हिंदुस्तान में बैठाने वाले राजपूत ही थे और उसके राज्य की

रक्षा करने वाले, गुलामी की जंजीर कसने वाले राजपूत ही हैं।'

—'ऐसे अत्याचार का अन्त होना ही चाहिये।'—रानी ने कहा—'जालिम की तलवार की धार मोड़ने के प्रयत्न में कदम बढ़ाना ही चाहिये। राजपूतों की आँखों के आगे से अज्ञान का परदा हट जाय तो विदेशी शासन की ईटें बज उठें। निराशा को मार भगाइये, राणाजी!'

—'महामाया! मैं प्राणपण से चेष्टा करूँगा कि औरंगजेब हिंदुओं को तंग करने वाली नीति से बाज आवे और प्रजा के सुख और शांति की ओर अपना ध्यान लगाये।' महाराणा एक साँस में कह गये।

...'हाँ, पृथ्वी सिंह और उनके पिता महाराज यशवन्तसिंह की स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई थी?'—क्षण भर मौन रहकर राणा पूछ बैठे।

—'पहले मुझे शुबहा भर था किंतु अब विश्वास हो चला है, दोनों की हत्या कराई गई।'—महारानी की आँखें अंगारे की तरह जल उठीं।

—'महाराणा जी!'—दुर्गादास ने मुँह खोला—'पूर्णमल बुंदेले के बाग में जब मैंने महाराज का शव देखा, तभी मुझे संदेह हो गया कि यह औरंगजेब की करतूत है।'

—'और, पृथ्वीसिंह की मृत्यु चेचक से होने की खबर से महाराज को कोई सन्देह नहीं हुआ मगर दिल्ली लौटने पर पता चला कि उन्हें जहरीली खिलअत पहनाई गई थी।'

महारानी के मुँह से उच्छ्वास निकल गया।

—'सच है, राणाजी।'—दुर्गादास बोल उठे—खिलअत पहनाने के बाद ही पृथ्वी सिंह तड़प-तड़प कर मर गये।...'

—'उफ! औरंगजेब के दिल में तनिक दया नहीं।'—राज-

सिंह की आंखों में आँसू भर आये।

—'दया, ममता उसके पास फटक भी नहीं सकती।'—दुर्गादास ने कहा—'वह पत्थर है, राणा जी! मानवता का शत्रु।'

—'बेशक।'—राजसिंह ने कहा—'जब तक वह अपनी सल्तनत की ओर से निश्चिन्त नहीं हुआ तब तक मौन था। पांव जमते ही वह हिंदुओं को मुसलमान बनाने की ओर झुक पड़ा।'

—'वह हिंदुस्तान के सभी लोगों को इस्लामी झण्डे के नीचे देखना चाहता है, राणा जी!'—महामाया बोल उठी।

—'जिससे उसके पाँव हमेशा के लिए हिंदुस्तान की छाती पर जमे रहेंगे।' दुर्गादास ने कहा-'जब वह तख्त के लिये लड़ रहा था, तब उसका नारा था 'इस्लाम खतरे में है, मैं इस्लाम के लिए लड़ रहा हूँ-अपने लिए नहीं।' और, उसका यह परिणाम हुआ कि दारा और शुजा को उनके सेनापतियों ने धोखा दिया। ऐन मौके पर दगा के कारण बेकसूर दारा, शुजा और मुराद की जान गई और बूढ़े बादशाह शाहजहाँ को जीवन के अंतिम सात वर्ष कैद की अंधेरी कोठरी में गुजारने पड़े।'

—'मुझे आश्चर्य होता है इस मजहब के जादू का प्रभाव देख कर!'—राजसिंह ने कहा—'हिंदुस्तान के हमारे भाई जब राजी से या लाचारी से इस्लाम कबूल कर लेते हैं तब जैसे अपने वतन की मुहब्बत, अपनी कौम की मर्यादा से बहुत दूर चले जाते हैं और उन विदेशियों को वे अपना समझने लगते हैं जिन्होंने उनके पुरखों पर जुल्म किये या उनकी मातृ-भूमि का खून चूस कर अपने लिए ऐयाशी का सामान इकट्ठा करते रहे।'

—'अपने ही भाइयों की यह कमजोरी हिंदुस्तान को तबाही और बरबादी की ओर ले जा रही है।'—दुर्गादास के मुँह से शोकपूर्ण उच्छ्वास निकल गया।

—'काश कोई इस्लामी उसूलों पर सल्तनत चलाने वाले औरंगजेब से पूछता'—राजसिंह ने कहा–उन हिमायतियों के लिए तुमने क्या किया, जिन्होंने 'इस्लाम खतरे में है' का नारा लगाकर तुम्हें तख्त पर बैठाया ! उनके स्त्री बच्चों को शिक्षा मुफ्त मिले, गरीबी की आंच उन्हें तपाने नहीं पाये, बीमार पड़ने पर उन्हें चिकित्सा की सुविधा हो आदि उनके जीवन–स्तर को ऊँचा उठाने वाले कार्य क्या उसने किये ?···इसके विपरीत उसने सेना इकट्ठी करने में ही अपनी सारी शक्ति लगा दी; अपनी शान और पराक्रम दिखलाने, दूसरे देश को तहस-नहस कर गुलाम बनाने में ही वह लगा रहा। उसने दुखियों के आंसू नहीं पोंछे किंतु इंसानों को लड़ाई की लपटों में झोंक, मनुष्य-समाज के सिर कष्ट और पीड़ा के बोझ ही लादे।···'

—'राणा जी !'—दुर्गादास ने कहा—'आज उसकी ईर्ष्या और द्वेष की आग में हिंदू–मुसलमान, दोनों ही जल रहे हैं। दोनों लड़ाई से ऊबे हुए शान्ति की साँस लेना चाहते हैं।'

—'वह दिन दूर नहीं, राणाजी, जब वे दोनों उस सुबह के दर्शन करेंगे, जो उनके लिए आशा के नये संदेश लायेगी और, खुशी से उनके अधरों पर मुस्कान थिरक उठेगी।'—महामाया के मुख पर दिव्य आभा फैल गई।

—'वह दिन जल्द आवे, जब इंसान इंसानों की भलाई के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करता दीख पड़े।'

–महाराणा के मुख पर नई कामना की रेखायें खिंच गईं।

दुर्गादास नवीन उत्साह से भर गये।

●

कश्मीरी बेगम के कदम अचानक रुक गये। औरङ्गजेब किसी का खत पढ़ रहा है। वह उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव

को पढ़ती मौन खड़ी रही।

और, खत से उसकी दृष्टि उठी तो कश्मीरी बेगम पूछ बैठी-'किसका खत है, जहाँपनाह ?'

—'उदयपुर के राणा राजसिंह का।'

—'खत में क्या है जो जहाँपनाह का चेहरा लाल हो उठा है ?'—कश्मीरी बेगम आगे बढ़ आई।

—'मलके ! मैं जल्द-से-जल्द मेवाड़ पर चढ़ाई कर देना चाहता हूँ। बागियों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं।'—औरङ्गजेब की आँखें जल रही हैं।

—'क्या मैं खत देख सकती हूँ?'—कश्मीरी बेगम उत्सुकता से भर गई। उसने अपने हाथ आगे बढ़ा दिये।

औरङ्गजेब ने मुँह से एक शब्द निकाले बगैर उसके हाथों में पत्र पकड़ा दिया।

कश्मीरी बेगम की उत्सुक दृष्टि पत्र के लेख पर पड़ी।.......

'शहंशाह आलमगीर,

स्वर्गीय महाराज यशवंत सिंह की विधवा महारानी अपने नन्हें बच्चे के साथ मेरे महल में हैं। यह सौभाग्य की बात हुई कि वे आपकी कैद से युक्ति द्वारा निकल सकीं। अगर वे अपने प्रयत्न में कामयाब नहीं होतीं तो क्या आप उनके पति महाराज यशवन्त सिंह और बड़े राजकुमार पृथ्वी सिंह की तरह उनके छोटे राजकुमार की हत्या करने से मुँह मोड़ लेते ?

विधवा स्त्रियों और बच्चों पर जुल्म करना भला कौन मजहब बतलाता है ? मुझे आशा है, स्वर्गीय महाराज यशवंत सिंह की सेवाओं का ख्याल कर, आप उनकी रानी और उनके बच्चे पर जुल्म करने का ख्याल छोड़ देंगे !.......

…आपके पूर्वजों ने हिंदू-मुसलमानों को कभी दो आँखों से नहीं देखा, किंतु आप गड़े मुर्दे को उखाड़ मनुष्यों के बीच विभेद की दीवार खड़ी करना चाहते हैं, जो सर्वथा निंदनीय ही नहीं बल्कि राज्य-धर्म के प्रतिकूल भी है।

राजा का धर्म है कि वह प्रजा को अपने पुत्र के समान समझे। प्रजा के दुःख को अपना दुःख और प्रजा के सुख को अपना सुख समझे।

मेरी सलाह है, आप दिल से घृणा, द्वेष को निकाल फेंके और अपने साथ ही जनता को अधिक उदार, विवेकशील और दयालु बनने का मौका दें।

झूठी शान के लिये किसी देश पर चढ़ाई नहीं करें!'

आपका हितैषी

—राजसिंह

बेगम ने औरंगजेब के मुख पर दृष्टि डाली। औरङ्गजेब का क्रोध अभी उतरा नहीं।

'राणा ने मेरे साथ गुस्ताखी की है, मलक-ए-आलम!'—औरङ्गजेब का क्रुद्ध-स्वर—'उसने मेरी ताकत को चुनौती दी है। मैं जल्द ही उसे इस दस्तंदाजी का मजा चखा दूँगा।'

—'मेरी समझ में राणा आपके दुश्मन नहीं, बल्कि दोस्त हैं।'—कश्मीरी बेगम ने शांत भाव से कहा—'नेक सलाह देने वाले की कदर करनी चाहिये।'

—'जो आदमी इस्लामी उसूलों को नहीं माने, उसकी हिमायती करना गुनाह में शामिल है, मलक-ए-आलम!'—औरङ्गजेब गंभीर हो उठा।

—'जहाँपनाह ! कुरान मैं तो रोज ही पढ़ती हूं, मगर मुझे राणा के खत में कहीं कोई ऐसी बात नहीं मिली, जो उसके खिलाफ हो ।'

—कश्मीरी बेगम भावावेश में बोली–'खुदा को 'रब्बे-उल-आलमीन' लिखा है। फिर बतलाइये, वह हिंदुओं का मालिक नहीं है ? ……और, अगर कुरान को आप मानते हैं तो यह मानना ही पड़ेगा कि खुदा कुल इंसानों का मालिक (रब्बे-उल-आलमीन) है। फिर हिंदुओं पर जजिया लगाकर, मंदिरें तोड़वा कर आपने उसके खिलाफ कदम नहीं उठाया ?'

—'मलके ! मुझे ऐसी उम्मीद तुमसे नहीं थी।'–औरङ्गजेब ने दुखित होकर कहा—'शायद तुम्हें बहन 'जहानआरा' ने बहकाया होगा। भाई दारा की तरह बहन जहानआरा भी हिंदू-मुस्लिम में फर्क नहीं मानती।'

– 'सचाई से आँखें बन्द किये रहना अक्लमन्दी नहीं है, बादशाह सलामत !'—कश्मीरी बेगम बोली–'अकबर, जहांगीर और शाहजहाँ से रिआया खुश रही; इसीलिए कि उन्होंने हिंदू-मुसलमानों को कभी दो आँखें से नहीं देखा।'

—'मलक–ए-आलम ! इसके बारे में मैं एक लफ्ज भी नहीं सुनना चाहता।' औरङ्गजेब बोल उठा—'मैंने कसम खाली है, राजपूतों और मराठों की शान धूल में मिलाकर रहूंगा। हाँ, अकबर, कहाँ है ? बंगाल से लौटे उसे दो दिन बीत गये, मगर वह मेरे सामने नहीं आया ?'

क्षण भर मौन रहने के बाद कश्मीरी बेगम ने कहा—'वह तो आपसे भी दो कदम आगे बढ़ा हुआ है।'

—'मैंने तुम्हारा मतलब नहीं समझा।'—औरङ्गजेब की तीक्ष्ण दृष्टि कश्मीरी बेगम के मुख पर।

—'मेरा मतलब कोई बुरा नहीं, जहांपनाह !'—बेगम बोली—'वह दिन-रात खुदा की इबादत में ही गुजारता है। मतलब यह कि नमाज पढ़ने से फुरसत पाता है तो कुरान का आयतें गाता है। और, जब कुरान की आयतें गाते-गाते थकता है तब नमाज पढ़ता है।'

—'यह तो बड़ी खुशी की बात है ।'—औरङ्गजेब ने संतोष की साँस ली । बोला—'यह बड़ा अच्छा हुआ, जो मेरे पास पहुँची खबर गलत निकली ।'

अचानक उसकी नजर एक बाँदी पर पड़ी। वह रवेया है। उसने उसे पास बुलाया। प्रश्न किया--'अकबर अभी क्या करता है ?'

—'जहाँपनाह ! वे तो अभी नमाज पढ़ रहे हैं।'

—'नमाज पढ़ने के बाद उसे मेरा हुक्म सुना देना ! वह मुझसे जल्द मिले।'

—'जो इर्शाद, बादशाह सलामत।'—कहकर रवेया सलाम करती चली गई।

औरङ्गजेब ने कश्मीरी बेगम की ओर देखा।—'मैं भी खुदा को याद करलूँ !'

कश्मीरी बेगम बगैर बोले रुखसत हो गई।

और, जब नमाज पढ़कर औरङ्गजेब उठा तो सादी पोशाक में अकबर को मौजूद पाया।

अकबर ने झुक कर सलाम किया।

—'सलामत रहो, मेरे बेटे !'—औरंगजेब ने कहा,—'मुझे तुम्हारा फकीराना वेश खूब ही पसन्द है ।'

—'खुदा से यही दुआ करता हूं, मेरी तमाम जिंदगी उनके इबाबत में, गुजरे !'—अकबर भक्ति से भरा हुआ।

—'तुम्हारी दुआ खुदा जरूर कबूल करेंगे, अकबर!' औरंगजेब ने कहा—'तुम पचास हजार मुगल-फौज लेकर अभी मेवाड़ पर टूट पड़ो और इस्लाम की राह में काँटों को कुचलकर, इस्लाम की खिदमत करो !'

—'आपके हुक्म पर जान तक कुर्बान कर दूँगा, अब्बा !'—अकबर गंभीरता की मूर्ति बन गया।

—'तुम्हारी मदद के लिए तुम्हारे साथ सिपहसालार दिलेर खाँ भी जायेंगे।'—औरङ्गजेब के अन्तिम शब्द शायद अकबर ने नहीं सुने।—वह आनन्द विभोर है।

●

—राणा राजसिंह के मंत्रणा-गृह में पाँव रखते ही दुर्गादास का माथा ठनका।

राजसिंह की पेशानी पर पसीने की बूँदें झलक रही हैं। सभासदों ने मौन व्रत धारण किया है।

'दुर्गादास !'—राणा ने मुँह खोला—'दूत से खबर मिली है, औरङ्गजेब की सेनायें दो तरफ से उदयपुर की ओर बढ़ रही हैं। एक ओर से अकबर आ रहा है, दूसरी ओर से स्वयं औरङ्गजेब ।'

'इसमें घवड़ाने की कौन-सी बात है ?'—दुर्गादास बोल उठा—'लड़ाई तो राजपूतों के लिए शोभा है।'

—'लड़ाई अच्छी चीज नहीं, दुर्गादास !'—राजसिंह ने कहा—'लड़ाई से देश तहस-नहस हो जाता है। बर्बादी लोगों के सुखों को निगल लेती है और बेकसूरों के खून से धरती लाल हो जाती है।'

—'आपका कथन अक्षरशः सही है।'—दुर्गादास बोल उठे—

'मगर लड़ाई हम किसी के सिर पर नहीं लाद रहे हैं। हमें तो अपनी आत्मरक्षा और स्वदेश की सुरक्षा के लिए लड़ना है!'

—'दुर्गादास!'—कहते-कहते राणा चुप हो गए।

—'आप क्या कहना चाहते हैं, राणाजी?'

—'किसी तरह यह लड़ाई रोकी नहीं जा सकती?'—राणाजी की उत्सुक दृष्टि दुर्गादास के मुँह पर।

—'किसी तरह से क्या आपका मतलब अनुनय-विनय से है?'

—'ऐसा ही समझ लो!'

—'वह तो आपने कर के देख लिया।'—दुर्गादास के उपेक्षा के भाव प्रकट हुए। बोले—'पत्र पाते ही औरङ्गजेब ने धावा बोल दिया।'

—'उसकी बुद्धि मारी गई है, दुर्गादास!'—राजसिंह ने कहा—'नेक सलाह उसे बुरी लगती है। इससे साफ जाहिर है, वह विनाश की ओर कदम बढ़ा रहा है।'

—'फिर लड़ाई रोकने के लिए क्या करना चाहते हैं?'

—'कोई उपाय तुम ही बताओ, दुर्गादास!'

दुर्गादास ने अपने भड़कते हुए गुस्से को रोका।

—'उपाय की कोई कमी नहीं है, राणा जी!'—दुर्गादास का व्यंग्यात्मक स्वर—'अगर आप औरङ्गजेब की गुलामी स्वीकार करलें, महाराज यशवन्त सिंह की रानी और उनके एक मात्र पुत्र अजीतसिंह को कैद कर उसके हवाले कर दें, तो यह लड़ाई रुक जायगी और आपका मेवाड़ तहस-नहस होने से भी बच जायगा।'

'दुर्गादास!'—राणा राजसिंह की आँखें जल उठीं। बोले—'हाथ में तलवार रहते यह क्या सम्भव है!'

—'यह उपाय नहीं जँचता तो एक ही उपाय बचा है, राणा-जी !'—दुर्गादास ने आवेशपूर्ण-मुद्रा में कहा—'आप शत्रु की कमर तोड़ दें, जिससे वह उठ न सके। उसकी कलाई मरोड़ दें, जिससे किसी देश को गुलाम बनाने के लिये वह तलवार उठा सके।'

—'बस-बस, मुझे यही उपाय पसंद है, दुर्गादास !'

—'मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी, राणाजी !'—दुर्गादास के अधरों पर मुस्कान की रेखा खिच गई। बोले—'व्याघ्र की आदत है—मांस खाना और खून से अपनी प्यास बुझाना। सर्पों और बिच्छुओं का स्वभाव है दंश मारना। साम्राज्य-लिप्सा के दीवानों का स्वाभाविक गुण है—नये-नये देशों पर चढ़ाई कर, अपनी ऐयाशी के लिए दौलत इकट्ठी करना। उन पर अनुनय-विनय का प्रभाव भला कमल के पात पर पानी की बूँदों के अतिरिक्त और क्या होगा ?'

—'दुर्गादास !'—राजसिंह बोल उठे—'तुम जैसे वीर हो, वैसे ही बुद्धिमान भी। मेरी ख्वाहिश है, इस लड़ाई का सेना-पतित्व तुम स्वीकार करो।'

—'राणाजी ?'—दुर्गादास ने सिर झुका कर कहा—'मैं जानता हूँ, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, फिर भी आपके आदेश का पालन करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ।'

—'तोपों, बंदूकों से लैस विशाल मुगल-वाहिनी का मुका-बला मुट्ठी भर राजपूत भला किस प्रकार करेंगे, दुर्गादास !'—एक सभासद ने मौन तोड़ा।

उसी समय महारानी महामाया आ पहुंचीं। बोली-'रणछोड़ सिंह, बड़े हाथी को छोटा-सा अंकुश वश में कर लेता है। तुम चिंता न करो ! मैं गाँव-गाँव घूम कर, ऐसी आग लगाऊँगी,

जिसकी लपटें मुगल-साम्राज्य को जला कर राख कर देंगी।'

—'सुशिक्षित सैनिकों का सामना गंवार सैनिक करेंगे, उससे क्या परिणाम होगा—यह सोचने का विषय है।'—दूसरा सभासद बोल उठा।

—'बैठो, महामाया !'—राजसिंह ने कहा-'तुम्हारी सम्मति भी आवश्यक है।'

—'मुझे महारानी से पता चला।'—महामाया बोलीं—'जालिम औरङ्गजेब ने मेवाड़ पर चढ़ाई कर दी है।'

—'हरिसिंह !'—दुर्गादास ने दूसरे सभासद की ओर देखा, जो अपने प्रश्न का उत्तर सुनने के लिए उत्सुक है। बोले-औरंगजेब के खरीदे हुए सैनिक लड़ेंगे पैसे के लिए और हम लोग तलवार उठायेंगे अन्याय के खिलाफ और अपनी आजादी की रक्षा के लिए। दोनों में वही अन्तर है, जो अधर्म और धर्म, झूठ और सच, अत्याचार और परोपकार में है।'

—'ठीक कहते हैं, दुर्गादास !'—तीसरा सभासद बोल उठा—'कौम और देश के लिए प्राण न्योछावर करने में हमें गर्व होगा। और, इसके विपरीत आक्रमणकारियों की आत्मायें उन्हें पग-पग पर धिक्कारती रहेंगी।'

—'हम अपनी आखिरी साँस तक अपनी आजादी के लिए लड़ते रहेंगे।'—राजसिंह की रगों में लहू गरम हो उठा। बोले—'दुर्गादास ! सैन्य संगठन का भार तुम्हारे ही कंधों पर है। अपना कार्य आरम्भ करो और शत्रुओं की तलवारों की धारें मोड़ दो।'

—'जो आज्ञा राणाजी !'—दुर्गादास ने अपनी मूँछों पर हाथ फेरा।

—'मैं तुमसे एकान्त में बातें करना चाहती हूँ, दुर्गादास !'—महामाया बोल उठी।

—'सेवक आदेश-पालन के लिए तैयार है।'—दुर्गादास ने सिर झुका कर अभिनंदन किया।

—'आओ मेरे साथ !'—महामाया आगे बढ़ीं और उनके पीछे-पीछे दुर्गादास। अभिलषित स्थान पर पहुँचने के पश्चात् महारानी महामाया ने कहा—'दुर्गादास ! उदयपुर में अजीतसिंह का रहना खतरे से खाली नहीं। लड़ाई का क्या ठिकाना ! कब पासा पलट जाय ! मैं राजकुमार को आबू के दुर्ग में रखना चाहती हूं। तुम दो सौ सिपाहियों को वहाँ पहरे पर नियुक्त कर दो अजीत की रक्षा के लिए।'

—'जो आज्ञा !'—दुर्गादास के मुँह से निकला। और, कुछ देर बाद ही वे राणा के सामने।

—'मुझे कुछ समय के लिए छुट्टी दी जाय !'

—'आखिर ऐसी नाजुक परिस्थिति में छुट्टी माँगने का कारण ?'

—राजसिंह घबड़ा उठे।

'राणा जी !'–दुर्गादास ने कहा–'मुझे कर्त्तव्य का ज्ञान है। आप घबड़ायें नहीं। मेरी महारानी का हुक्म है, मैं राजकुमार अजीत की सुरक्षा के लिए उन्हें गुप्त स्थान में पहुंचा दूँ।'

—'उदयपुर, राजकुमार के लिए असुरक्षित नहीं।'

—'मैं महारानी की आज्ञा भला कैसे टालूँ !'

महामाया भी आ पहुँचीं। आते ही उन्होंने कहा—'दुर्गादास को मत रोकिये, राणा जी ! वह अविलंब लौट आयेगा।'

—'तुम भी उसके साथ जा रही हो, महामाया ?'—शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित महारानी को देख राणा चौंक उठे।

—'जी हाँ, राणाजी !'—महामाया ने कहा–'मैं अपने पति के देश मारवाड़ जाऊँगी। वहाँ गाँव-गाँव घूमकर कहूंगी—'ऐ

मेरे स्वदेश-वासियो ! आज तुम्हारी परीक्षा का दिन है, क्योंकि तुम्हारी मातृभूमि की छाती पर मूँग दलने के लिए अत्याचारी औरङ्गजेव ने आक्रमण किया है। अगर तुम्हें गुलामी से नफरत है, अगर तुम अपने पसीने की कमाई से किसी को मौज मनाने का मौका नहीं देना चाहते, तो उठ खड़े हो जाओ और उस जहरीले नाग के विष के दाँत तोड़ दो, जिसने तुम्हारे महाराज और बड़े राजकुमार को मौत की नींद सुलाया है और तुम्हारी रानी तथा छोटे राजकुमार को डँसने के लिए बढ़ा आ रहा है।'

महामाया का तेज देख राणा राजसिंह श्रद्धा से नत हो गये। उनके सामने क्रांति के दीप-सी महारानी।

—'महामाया ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।'—कह कर राजसिंह ने दुर्गादास की ओर देखा। बोले—'वीरवर ! यथासंभव शीघ्र उदयपुर लौटने का ध्यान रखना !'

—'ऐसा ही होगा, राणाजी !' और, महाराज यशवन्तसिंह की रानी महामाया घोड़ा दौड़ाये आँधियों की तरह मारवाड़ की ओर बढ़ रही हैं और दुर्गादास राजकुमार के साथ आबू जा रहे हैं।

●

अरावली की घाटी में मुगल-फौज का पड़ाव। अकबर और उसकी बेगम।—'रजिया की मा ! तुम शराब छूना पसंद नहीं करती। अच्छा होता, उसे तुम्हारी आँखें देख न सकें—ऐसा ध्यान रखती !'

—'मेरे आका !'—रजिया की मा की आँखों में आँसू आ गये। बोली,—'आप शराब और तवायफों से दूर रहें ! अपने अब्बा की आँखों पर परदा डाल दिया, मगर खुदा से अपने गुनाहों को कैसे छिपाइएगा ?'

—'मरने के बाद क्या होगा—मुझे उसकी परवाह नहीं।'—अकबर नशे में झूमता हुआ बोला—'आज खुशी में कट जाय, फिर कल की फिक्र ही क्यों ?'

—'जब बादशाह पर यह राज जाहिर होगा कि आपने उन्हें धोखा देने की कोशिश की, तो मुमकिन है वे आपे से बाहर हो जायँ और आपका आने वाला दिन, काली रात में बदल जाय।'

—'मैं कहता हूँ, तुम कल की चिंता मत करो !'—अकबर बोल उठा—'अव्वल तो अब्बा को यह राज मालूम ही नहीं होगा और ऐसा हुआ भी तो अपने मातहत अफसरों से गवाही दिला दूँगा। तुम जानती हो, बेगम ! मैंने इसीलिए दिलेर खाँ को साथ नहीं लिया और बादशाह को सलाह दे दी कि आधी फौज के साथ उसे मेरे पीछे-पीछे भेजा जाय !'

—'आपके मातहत अफसर क्या शराब पीते हैं और तवायफों के नाच-गान सुनकर इस्लामी उसूलों के खिलाफ चलते हैं ?'

—बेगम की उत्सुक दृष्टि अकबर के नशे से लाल चेहरे पर।

—'नाच-गान भला कौन पसंद नहीं करेगा, बेगम ?'—अकबर की लड़खड़ाती आवाज निकली—'सभी बादशाह के भय से और उन्हें खुश रखने के लिए मजहब की पाबंदी का ख्याल रखते हैं।'

—'समझाना मेरा फर्ज था। उसे मानना-न-मानना आपके वश की बात है।'—बेगम की वाणी निराशा में डूब गई।

उसी समय रजिया आ पहुंची। बोली—अब्बा ! उस्तादजी को तुम साथ नहीं लाये, अब मैं किससे गाना सीखूँ ?'

—'घबड़ाओ मत, रजिया ! कल किसी-न-किसी उस्ताद को पकड़ मँगवाऊँगा।'—अकबर का स्नेह-सिक्त स्वर।

बेगम रजिया का हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ लेती गई। उसके मुख पर असंतोष की झलक।

उसी समय रबेग्रा आ पहुँची। बोली—'शाहजादे-आलम, शबनम आपसे मिलने की इजाजत चाहती हैं।'

—'शबनम!' अकबर चौंक पड़ा। उसके नेत्रों के सामने सौंदर्यमयी शबनम की मुस्कुराहट-भरी आकृति फिर गई। बोल उठा—'उसे जल्द भेज दो!'

रबेग्रा झुक-झुक कर पुनः सलाम करती खीमे से बाहर निकल गई और क्षण भर पश्चात् एक मुगल लड़के को खीमे में प्रवेश करते देख अकबर खीझ उठा—'कौन हो तुम? दूर हो आंखों के सामने से।' और, उसने आँखें बन्द करलीं।

—'बहुत जल्द मुझे भूल गए, शाहजादे-आलम!'—लड़के का शिकायती स्वर।

अकबर परिचित स्वर से चौंक पड़ा। उसने आँखें फाड़-फाड़ कर मुगल लड़के को देखा और विस्मय, हर्ष से चिल्ला उठा—'बहुत खूब!···पास आओ शबनम, और यह वेश दूर हटाओ।'

शबनम सिर की पगड़ी उतार आगे बढ़ गई।

—'मेरी खुशकिस्मती कि शाहजादे-आलम ने मुझे पहचान लिया।'

—'पहचानता कैसे नहीं!'—अकबर बोला—'तुम्हारी तस्वीर तो मेरे दिल पर खींच गई है।'

—'भला ऐसे मेरे नसीब कहाँ?'—शबनम ने लम्बी साँस ली।

—'सच मानो, शबनम!'—अकबर ने आवेश में कहा—'मैं कभी भी तुम्हें नहीं भूला। सोते-जागते तुम्हारी तस्वीर आँखों के सामने आ जाती।'

—'सच कह रहे हैं, शाहजादे-आलम?'—शबनम पुलकित हो उठी।

—'खुदा गवाह है, मेरी जान।' अकबर ने आवेश में उसे और पास खींच लिया।

शबनम हर्षातिरेक से सिहर उठी।

उसके बाद ही रबेया ने खीमे के द्वार का परदा हटाया और झिझक कर पीछे हट गई।

शबनम अकबर के ओठों से शराब का प्याला लगा रही है।

—'अन्दर आ सकती हूँ, खुदाबंद!'—रबेया सहमती हुई बोल उठी।

—'कौन है?'—अकबर पूछ बैठा।

—'मैं हूं, हुजूर की बाँदी रबेया!'

—'इज़ाजत है।'—अकबर नरम पड़ गया।

—'फौजदार आपको महफिल के लिए याद फरमा रहे हैं।'— रबेया ने अदब के साथ खीमे के भीतर प्रवेश करते हुए कहा।

—'कह दो, मैं अभी आया।'

—'जो इर्शाद!'

रबेया लौट गई। शबनम ने प्रश्न भरी दृष्टि अकबर के मुँह पर डाली। बोली—'कैसी महफिल?'

—'दिल्ली से तवायफों को पकड़वा कर साथ ले लिया था, शबनम!'–अकबर ने कहा—'जब तक दिल्ली में अब्बा के सामने रहा, नमाज और कुरान से फुर्सत ही नहीं मिली कि नाच गान का लुफ्त उठा सकूँ। अब तो आजाद हूँ, जी भर पी सकता हूँ और रात-रात भर तवायफों के नाचों के बीच रह कर गुजार सकता हूँ। मुझे कोई रोकने-टोकने वाला नहीं है। मैं यहाँ खुद बादशाह हूँ।'

—'शाहजादे-आलम!'—शबनम बोल उठी—'काश! आप

बादशाह बन सकते ! मैं खुदा से रोज ही दुआ करती हूं कि वह मुझे हिंदुस्तान की मलका बना दे।....'

—'शबनम ! एक बार उदयपुर फतह करने दो ! उसके बाद बादशाह पर मेरी फौज टूट पड़ेगी। फिर तो मुझे बादशाह बनने से कोई रोक नहीं सकेगा।'

—'आप बादशाह होंगे और मैं 'मलका मुआज्जमा' कहलाऊंगी।' —शबनम कल्पना-लोक में विचरण करने लगी।

'बेशक ! बेशक !!'—अकबर चिहुंक उठा।

और, उस रात अकबर ने नाच गान में ही गुजारी।

●

अकबर को फौज एक दर्रे से गुजर रही है। दोनों ओर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ और नीचे ऊबड़-खाबड़ राह। अकबर हाथी पर सवार है। उसके पीछे बेगमों की पालकियाँ और पालकियों के पीछे तवायफें और बाजे वाले।....

बाजे वाले के पीछे भी फौज की टुकड़ियों के सिपाही तीन-तीन चार-चार की कतार में आगे बढ़ रहे हैं।

संध्या का सूरज डूबने लगा। अकबर खीझ उठा। बोला—'दिन भर हम बढ़ते ही रहे, फिर भी दर्रे के बाहर खुली हवा में सांस लेने का मौका नहीं मिला।'

महावत ने कहा—'शाहजादे-आलम ! बड़ी खतरनाक राह है। ऐसा मालूम होता है, हम एक विशाल अजगर के पेट में घुसे जा रहे हैं।''

—'ठीक कहते हो, जाफर !'-अकबर बोला—'मेरी तबियत घबड़ा उठी। हाथी बढ़ाते चलो ?'

—'हुजूर ! आगे वाले बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं।'-महावत के विनम्र स्वर में उसकी विवशता छिपी है।

—'क्यों धीरे-धीरे कदम बढ़ा रहे हैं?' अकबर का क्षुब्ध स्वर—'उन्हें पता नहीं, रात की काली चादर जल्द ही हमें अपनी गोद में ले लेगी !'

—'हुजूर ! उनके कदम और आहिस्ते से उठने लगे ।'—महावत खाँ ने कहा, सहमते हुए।

—'बेवकूफ !'—अकबर क्रोध में चिल्ला उठा। उसने सामने घोड़े पर सवार एक अङ्गरक्षक को सम्बोधन कर कहा—'हमीद खाँ, ऐसी सुस्ती की क्या वजह है ?'

—'मुझे कुछ पता नहीं, शाहजादे-आलम !'—हमीद खाँ ने लाचारी दिखलाई ।

—'पता लगाओ !'—अकबर का आदेशपूर्ण स्वर ।

—'जो इर्शाद !'

हमीद खाँ ने घोड़ा, बड़ी मुश्किल से आगे बढ़ाया।···अकबर ने देखा, अंधेरे ने अपना अधिकार उस अरावली घाटी में पूर्णरूप से जमा लिया। सिपाही के पाँव रुक गये हैं। वे एक-दूसरे से सटकर खड़े हैं। मशालची जगह-जगह मशाल लिए खड़े हो गये हैं। अंधेरी घाटी में मशाल की लाल लपटें बड़ी भयानक दीख रही हैं।

अकबर का क्रोध बढ़ता गया–'आखिर यह क्या तमाशा है ? कहीं से कोई खबर नहीं मिलती कि सिपाही क्यों खड़े-खड़े अपनी किस्मत पर रो रहे हैं ? दुश्मनों ने कोई जादू तो नहीं कर दिया ?'

—'शाहजादे-आलम !'—उसी समय परेशान हमीद खाँ एक अन्य अफसर के साथ लौट आया ।

—'सिपाही क्यों नहीं आगे बढ़ते, हमीद खाँ ?'—अकबर उत्सुकता को नहीं दबा सका।

—'आगे की राह दुश्मनों ने पत्थरों के ढोकों से वन्द कर दी है, शाहजादे-आलम !'—हमीद खां की घवड़ाहट भरी आवाज।

—'सिपाही पत्थरों को रास्ते से क्यों नहीं हटा देते ?'—अकवर का क्रुद्ध-स्वर।

—'उनकी कोशिश पत्थर पर सिर पटकने के समान व्यर्थ हुई, हुजूर !'—हमीद खाँ का कातर-स्वर।

—फिर मुझे खबर क्यों नहीं दी गई, फौजदार ?'—अकबर दूसरे अफसर से पूछ बैठा।

—'शाहजादे-आलम ! हम लोगों ने समझा था, जल्द ही हम पत्थर काट कर राह वना लेंगे, मगर लगातार कई घण्टों की कोशिशों के बाद पता लगा—यह काम सहल नहीं। दुश्मनों ने दर्रे के मुँह को इस प्रकार वन्द कर रखा है कि हम किसी प्रकार उसे खोल नहीं सकते।'

उसी समय सिपाहियों में खलवली मच गई। शोर बढ़ता ही गया।

—'क्या वात है, हमीद खाँ'—अकबर विस्मय से भर गया।

तभी एक अन्य अफसर ने कहा—'हुजूर ! दुश्मनों ने हम पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। हम उन्हें देख नहीं पा रहे हैं, फिर जवाब कैसे दिया जाय !'

अकबर घबड़ा उठा। बोला—'कुल मशालें बुझवा दो ! और, सिपाहियों को हुक्म दो कि पीछे की ओर लौट चलें।'

और, फ़ौरन अकबर के आदेश-पालन की कार्रवाई शुरू हो गई।···मशालें बुझ गईं। अंधेरे में टटोलते, गिरते-पड़ते, मुगल-फौज पीछे की ओर लौट रही है।

सुबह की लाली घाटी में झाँकने लगी। अकवर उत्सुकता से घाटी के वाहर निकलने के समय की प्रतीक्षा करता, हाथी बढ़ाये

जा रहा है। अचानक उसके मुख पर भय की रेखायें खिच गई। सिपाही के लड़खड़ाते कदम रुक गये थे।

कुछ देर बाद ही हमीद खाँ ने यह अशुभ खबर सुनाई—'दुश्मनों ने पीछेवाली राह भी बन्द करदी।'

अकबर ने दर्रे के दोनों किनारों के ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों को देखा। और, उसके मुख से चीख निकल गई। बोला—'क्या हम भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर इस चूहेदानी में जान दे देंगे?'

—'इसके सिवा निकलने की कोई सूरत नहीं, खुदाबंद!'—हमीद खां निराशा में डूब गया।

सिपाहियों को चीख सुनाई पड़ी। अकबर ने उधर दृष्टि घुमाई—एक बड़ा-सा पत्थर का टुकड़ा अकबर के बहुत नजदीक गिरा जिससे उसके पाँच सिपाही कुचल कर मर गये।

धड़... धड़... धड़-धड़ाम!....

गड़...गड़...गढ़-गड़ाम्!!....

फिर तो पत्थरों का ताँता बँध गया। बड़े-बढ़े पत्थरों के टुकड़े पहाड़ी से लड़खड़ाते मुगल-फौज पर गिरने लगे।.......

अपनी बेवशी पर अकबर हाथ मलने लगा।

●

'महाराणा की जय हो!......'

लड़ाई के परिणामों की प्रतीक्षा में उत्सुक राजसिंह ने वातायान से देखा, महल के सामने कुछ घुड़सवारों के साथ राजकुमार जयसिंह घोड़े से उतर रहे हैं। उनके मुख पर विजयोल्लास है।

राजसिंह बड़ी व्यग्रता से जयसिंह के आने की प्रतीक्षा करने लगे। उन्हें आभास मिल गया कि उनका पुत्र कोई सुसंवाद जल्द ही सुनाने वाला है।

जयसिंह ने राणा के चरण स्पर्श कर अभिवादन किया।

—'चिरंजीवी हो, पुत्र ! मुगल-फौज पर जय-लाभ कर लाये ?'

राजसिंह की उत्सुक-दृष्टि में स्नेह छलक रहा है।

—'आपके चरणों का प्रताप है, पिताजी !'—राजकुमार जयसिंह का विनम्र,स्वर—'जो पचास हजार मुगल-सेना को बंदी बनाने में समर्थ हुआ।'

—'शाबाश !'—राजसिंह की बाँछें खिल गईं। बोले—'तुमने तो वह काम किया जिसकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी।'

—'इस जीत का कारण मैं नहीं बल्कि सेनापति दुर्गादास हैं।'—जयसिंह ने कहा—'यह विजय उनकी बुद्धि का चमत्कार है।'

—'दुर्गादास तो औरङ्गजेब से लोहा लेने दौवारी की ओर गया है।'—राजसिंह विस्मय से भर गये।

—'जी हाँ, पिताजी !'—जयसिंह ने कहा—'मगर जाते-जाते लड़ाई की युक्ति बता गये। उनकी आज्ञा का हमने पालन भर किया।'—'कैसी युक्ति ?'—राजसिंह चौंक पड़े।

—'पिताजी !'—जयसिंह ने कहा—'मुगल-सेना जब अरावली की घाटी से गुजर रही थी, हमने सामने का द्वार पत्थरों के बड़े-बड़े ढोकों से बंद कर दिया और जब पूरी फौज घाटी के मुँह में समा गई तब हमने लौटने की राह भी उसी प्रकार बंद कर दी।'

—'यह तो बहुत अच्छा हुआ जो राजपूत-वीरों के बलिदान बगैर ही मुगल-सेना कब्जे में आ गई।'—राजसिंह प्रसन्न हो उठे।

—'और, जीते-जी उनकी कब्र खुद गई।'—जयसिंह बोल

उठे—'अब आक्रमणकारी उस कैद से छुटकारा नहीं पा सकेंगे।'

—'तुम्हारे कथन का अभिप्राय है, वे भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर प्राण-विसर्जन कर देंगे ?'—राजसिंह के मुख पर असंतोष के भाव प्रकट हुए।

—'फिर आप क्या चाहते हैं, महाराणा जी ?'—उसी समय जयसिंह की मा आ पहुँचीं।

—'महारानी ! भूख-प्यास से तड़पा-तड़पा कर किसी प्राणी को मार डालना मानवता नहीं।'

—'और, दूसरे देश पर आक्रमण करना, उसे बरबाद कर, गुलामी की जंजीर में जकड़ना क्या मानवता है ?'—महारानी का क्षुब्ध स्वर।

—'रुष्ट न हो, महारानी !'—राजसिंह का शान्त-स्वर—'मैं आक्रमणकारी नीति की कहाँ सराहना कर रहा हूँ !'

—'मगर आप आक्रमणकारी के प्रति सहानुभूति तो रखते हैं !'

—'इंसान के प्रति इंसान का प्रेम रहना चाहिए।'—राजसिंह ने कहा—'संसार के सभी मनुष्य भाई हैं।'

—'इंसान के प्रति प्रेम रखना चाहिए या उस हैवान के प्रति भी, जिसमें इंसानियत का एक भी लक्षण न हो ? और, छल, कपट, झूठ पर जिसकी सल्तनत की इमारत खड़ी की गई हो।.......'

—'महारानी !'—राजसिंह गंभीर हो उठे—'जिस तरह मैल से मैल नहीं धोया जा सकता, उसी प्रकार पाप से पाप पर विजय नहीं पाई जा सकती। सूर्य की किरणें जिस प्रकार अंधकार का नाश करती हैं, उसी प्रकार पाप के अन्धेरे पर सत्य का प्रकाश विजय पाता है।.......'

—'आपका अभिप्राय है कि, नाग के विष के दाँत न तोड़े जायँ बल्कि उसे दूध पिला कर और भी जहरीला बनाया जाय !' —महारानी तिलमिला उठीं ।

—'यह तो कोई नई बात नही है, मा ! उदार हिंदू प्रति नागपंचमी को नाग की पूजा करते हैं और उसे खाने के लिए दूध, लावा चढ़ाते हैं !'–'जयसिंह के अधरों पर व्यंगपूर्ण मुस्कान खेल गई ।

—'तुम दोनों मा-बेटों के हृदय से ममता कहाँ चली गई ?' —राजसिंह के नेत्रों में आँसू भर आये—'औरङ्गजेब ने तो राज्य विस्तार की लालसा या अन्य कारणों से आक्रमण किया है मगर उसके सैनिकों ने भला क्या अपराध किया है ? पैसे के लिए वे जान हथेली पर लेकर आगे बढ़ने के लिए लाचार हैं; इसलिए कि अपनी स्त्री, बच्चों या बूढ़े मा-बाप का पालन-पोषण कर सकें । तुम दोनों सोचो तो भला ! उनकी मृत्यु के बाद उनके परिवार वालों की क्या दशा होगी !'

—'महाराणा जी ! वे राजपूतों के घर में आग लगाते, उनकी बहू-बेटियों का सतीत्व लूटते और बूढ़ों, बच्चों, जवानों की छाती में संगीनें भोंकते······उसकी कल्पना आप क्यों नहीं करते ?'

महारानी की आँखें क्रोध से जल उठीं ।

—'पिता जी ! अगर वे अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए मैदान में उतरे होते तो हम उनका स्वागत करते, किन्तु वे अत्याचारी शासक के उन हाथों की ताकत बनकर आये हैं, जिन हाथों से अन्यायी इंसानियत का गला घोंटता है; इसलिए वे सत्य के हत्यारे हैं, दया के पात्र नहीं । हमें चाहिए, अत्याचारी को जिससे बल मिले, उसकी हस्ती मिटा दें !'

—'तुम दोनों ने दया-ममता को हृदय से निकाल फेंका है ।

तुम्हारे सर पर प्रतिशोध का भूत सवार है। तुम घृणा और ईर्ष्या की आग में जल रहे हो।'

—'महाराणा जी !.......'

—'बस, चुप रहो, महारानी ! मैं कुछ भी नहीं सुनूँगा। मैं स्वयं जाऊँगा और भूखे को अन्न खिला कर, प्यासे को पानी दे कर, इन्सान को मरने से बचाऊँगा।...'

राजसिंह आवेश में कक्ष से बाहर निकल पड़े।

महारानी और राजकुमार हत्बुद्धि एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

—'जयसिंह !'—महारानी का कर्त्तव्य-ज्ञान लौट आया।

—'मा !'—जयसिंह अपनी मा की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे।

—'तुम राणा को रोको ! बुढ़ापे में उनकी बुद्धि सठिया गई है।'

—'पिता जी को रोकना आसान नहीं, मा ! वे मारने-मरने पर उतारू हो जायँगे।'

—'युद्ध से तुम डरते हो क्या ?'—महारानी बोली—'क्या तुमने मेरा दूध नहीं पान किया ? क्या तुम मेरी कोख को लजाओगे ?'

—'माँ ! क्या मैं पिता जी से युद्ध करूँ ?'-जयसिंह विस्मय और आशंका से सिहर उठे।

—'कर्त्तव्य के रास्ते पर चलने से जो रोके,'-महारानी बोलीं -'देश के असंख्य लोगों को गुलाम बनाने वाली मनोवृत्ति की जो रक्षा करे, चाहे वह कोई भी हो, हमें उसका मुकाबला करना चाहिए। हृदय में साहस और सत्य का सहारा ले तुम आगे बढ़ो!'

—'ऐसी नाजुक हालत में, जब अत्याचारी शासक की शनि-

दृष्टि हमारे देश की ओर लगी हुई है—हमें गृह-युद्ध से बचना चाहिए, मा !'

—'तुम मेरे बेटे हो ।'–महारानी की आँखें जल उठीं । बोलीं —'अगर तुम पर मेरा कोई ऋण है तो उसे आज उतार दो ! मैं तुमसे भीख माँगती हूँ–राणा के मार्ग में चट्टान बन कर खड़े हो जाओ ! देश को डूबने से बचा लो !'

—'मा !' जयसिंह ने घुटने टेक दिये और बोले—'मेरा सर हाजिर है—उसे काट लो–तुम्हारा ऋण उतर जायगा; मगर मैं पिता जी के विरुद्ध तलवार नहीं उठाऊँगा ।'

—'कायर !'–महारानी घृणा से मुँह फेर कर खड़ी हो गई और बोलीं—'अब मुझे मालूम हो गया—राजपूतों की किस्मत में दूसरों की गुलामी ही अंकित है । उसे कोई नहीं मिटा सकता ।'

●

औरङ्गजेब ने हार कर, चित्तौड़गढ़ में शरण ली । दुर्गादास के हाथ काफी हाथी, घोड़े और ऊँट लगे । पड़ाव में खुशी की लहरें दौड़ रही हैं । औरंगजेब की प्यारी कश्मीरी बेगम सेनापति दुर्गादास के अधिकार में है ।

—'मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि मुझे कैद करने से तुम्हारा क्या मतलब है ?'—कश्मीरी बेगम का प्रश्न ।

—'बेगम साहिबा ! मुझे मालूम है, बादशाह आपकी बहुत कदर करते हैं ।'—दुर्गादास का उत्तर ।

—'क्या यही वजह मेरी कैद की है ?'

—'और भी कई कारण हैं ।……'

—'वह क्या ?'—बेगम उत्सुक हो उठी ।

—'आपको पता होगा-'—दुर्गादास ने कहा—'बादशाह ने स्वर्गीय यशवंत सिंह की महारानी को उनके एकमात्र पुत्र के साथ

दिल्ली में कैद करना चाहा था !'

—'हाँ !'–कश्मीरी बेगम बोली–'और, यह भी पता है, तुम चालाकी से रानी को बादशाह के पंजे से निकाल लाये थे।'

—'उसी दुर्घटना की याद ने मुझे बाध्य किया है कि मैं आप को अपने अधिकार में पाकर न छोड़ूं।'

—'बादशाह तो यशवंत सिंह की रानी को अपने महल में रखना चाहते थे।'—कश्मीरी बेगम का गंभीरस्वर।

—'आप भी राजसिंह के महल में रहेंगी।'

'मुझे राणा ने बंदी नहीं बनाया !'—बेगम बोल उठी—'मैं तो तुम्हारी कैद में हूँ !'

—'मगर इस लड़ाई में मैं महाराणा का ही सेवक हूँ।'—दुर्गादास ने कहा–'जीत की प्रत्येक चीज पर राणा का ही अधिकार है।'

—'मुझे मेवाड़ के महल में कैद कर, तुम बादशाह से बदला लेना चाहते हो'—कश्मीरी बेगम ने कहा—'मगर मैंने क्या अपराध किया है ? मेरी जिंदगी बरबाद करने पर क्यों तुल गये हो ?'

दुर्गादास का हृदय पसीज गया बेगम की करुणाभरी वाणी से। बोले—'बेगम-साहिबा ! मुझे आपकी हालत पर दया आती है। आपके छुटकारे के लिए मैं राणा से निवेदन करूँगा।'

दुर्गादास की विनम्र-वाणी ने बेगम पर काफी प्रभाव जमाया बेगम उत्साहित हो बोल उठी—'दुर्गादास ! तुम्हारे लिए मेरे दिल में बड़ी हमदर्दी हो गई है।'

—'मेरा अहोभाग्य !'

—'एक बात पूछूँ ?'

—'सौ बात पूछिए !'

—'सच ही तो बोलोगे ?'

—'मुझे झूठ से सख्त नफरत है।'—दुर्गादास गंभीर हो उठे।'

—'मुझे कैद करने की और कौन-सी वजह है?'—कश्मीरी बेगम की उत्सुक दृष्टि दुर्गादास के मुख पर।

—'बेगम-साहिबा !'—दुर्गादास बोले—'मेरा अनुमान है, आपको वापिस पाने के लिए वे हमारी शर्तें कबूल कर लेंगे।'

—'तुम्हारा मतलब बादशाह से है ?'

—'जी हाँ !'

—'तुम्हारी कौन सी शर्तें हैं ?'

—'बादशाह कभी राजपूतों पर चढ़ाई न करें।—दुर्गादास ने कहा—'हिंदुओं पर से 'जजिया' हटा लें और मन्दिरों को न तोड़वायें; धर्म-ग्रन्थों का अपमान न करें !'

—'बादशाह से मैंने कई वार कहा था कि वे हिंदुओं और मुसलमानों को दो आँखों से न देखें मगर उन्होंने कभी मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया।'—कश्मीरी बेगम ख्यालों में डूबी बोल उठी।

—'सम्भव है, मजबूर हो वे शर्तें मान लें।'

—'कुछ साल पहले ऐसा हो सकता था, मगर अब नहीं।'—बेगम ने ठण्डी सांस ली।

—'क्या अब बादशाह का प्यार ठण्डा पड़ गया ?'—दुर्गादास ने कहा—'मैंने तो ऐसा सुना था, आपके इशारे पर बादशाह सब कुछ कुर्बान कर सकते हैं।'

—'सब झूठ है।'—कश्मीरी बेगम के मुँह से उच्छ्वास निकल गया। बोली—'बादशाह की छाती के भीतर दिल नाम की कोई चीज नहीं। वे पत्थर के बने हैं, जहाँ मुहब्बत सर टकरा

कर हार खाती है ।'

—'अफसोस ! मेरा अनुमान गलत निकला ।'—दुर्गादास के मुख पर पश्चाताप के बादल ।

—'एक बात बताओगे, दुर्गादास ?'—बेगम उत्साह से भर गई ।

—'वह क्या दुर्गादास ?'—बेगम के मुँह की ओर देखने लगे ।

—'जिस कौम में तुम्हारे जैसे बहादुर मौजूद हैं वह गुलाम क्यों है ?'—बेगम बोली—'तुम रोते हो, चिल्लाते हो मगर जुल्म के खिलाफ एक झण्डे के नीचे खड़े होकर आवाज क्यों नहीं उठाते ? जिस दिन हिन्दुस्तानी एक होकर तलवार खींच लेंगे उस दिन आलमगीर की सल्तनत कब्र में मुँह छिपा लेगी ।'

—'बेगम साहिबा ! हम में बहादुरी की कमी नहीं मगर कमी है एक ऐसे नेता की, जो सबको एक सूत्र में बाँध सके ! मराठे अपनी खिचड़ी अलग पकाते रहेंगे, राजपूत-राजे औरंगजेब की गुलामी करते रहेंगे तो मुट्ठी भर राजपूत बादशाह का भला क्या बिगाड़ लेंगे !'

—'तुम में एक सबसे बड़ी कमजोरी है, दुर्गादास !'—कश्मीरी बेगम बोली—'तुम अपने को इतना छोटा क्यों समझते हो ! तुमने जिस बहादुरी से बादशाही फौज पर फतह पाई है, उससे मुझे यकीन है, तुम चाहो तो दिल्ली का तख्त तुम्हारे कदमों के नीचे होगा । मौका अच्छा है । एक बार हिम्मत कर दिल्ली पर टूट पड़ो ! जीतोगे तो हमेशा के लिए बखेड़ा खतम हो जायगा और हारोगे तो शहीदों का दर्जा मिलेगा ।'

—'मुझे महारानी की आज्ञा लेनी पड़ेगी ।'—दुर्गादास की विवशताभरी वाणी—'मैं स्वतन्त्र नहीं बल्कि विधवा महारानी

का सेवक हूँ ।'

—'शर्म करो दुर्गादास ! अपने इस ख्याल पर शर्म करो !'—कश्मीरी बेगम का धिक्कार-भरा स्वर—'कितनी ओछी बात है ! तुम जब भी सोचते हो, तब दूसरे की गुलामी का जंजीर की ओर ही तुम्हारी निगाह जाती है । अपने ख्याल को और ऊपर उठाओ और तख्त अपनी ताकत से छीन लो ! तुम्हें क्या पता नहीं, हुमायूँ ने केवल बारह हजार फौज से, मुगल सल्तनत की उखाड़ी नींव को फिर दिल्ली में गाड़ा था, जिसे आज तक कोई नहीं उखाड़ सका ?'

—'बेगम साहिबा ! माफ करें, अपने शौहर के खिलाफ जुबान हिलाना पाप है ।'

—'बदकिस्मत ! तुम मुझे नसीहत देने के काबिल नहीं । मैं गुलाम से बातें करना नहीं चाहती । मेरी आँखों से दूर हो जाओ !' अभिमानिनी नारी अंगारों पर लोटने लगी ।

किंकर्त्तव्यविमूढ़ दुर्गादास सिर झुकाये अपने विश्राम कक्ष की ओर चले । उनके मानस में रह-रह कर कश्मीरी बेगम की उपेक्षा-भरी आवाज—'मैं गुलाम से बातें करना नहीं चाहती'—हलचल मचा देती और उनका हृदय कसक उठता है । वे औरङ्गजेब को जीत कर भी उसकी बेगम से हार गये ।

●

—'शबनम ! आज मैं बहुत खुश हूँ ।'......

'नयी जिंदगी पाकर सबको ऐसी ही खुशी होती है, शाहजादे-आलम !'—शबनम, अकबर से खाली प्याला ले एक ओर रखती हुई, बोली ।

—'जब तीन दिन बीत गए अरावली के दर्रे में, तब मुझे यकीन हो गया कि तुमसे मेरा साथ छूटा ।'

—'शाहजादे-ग्रालम !'—शवनम नशे में झूमती हुई बोली—'मुझे मरने का गम नहीं था मगर ग्रापकी जुदाई के ख्याल ने वेचैन कर दिया था।'

—'मेरी प्यारी शवनम !'—ग्रकबर वोला—'भूख-प्यास से मेरे सभी सिपाही ग्रधमरे हो गए थे, फिर भी मुझे उनकी परवाह न थी। मैं तो सही सोच–सोच कर मर रहा था ग्रगर पानी वगैर मेरी जान निकल गई तो भला शवनम की गोरी-गोरी ग्रँगुलियों द्वारा शराब का प्याला कहां नसीब होगा ?'

—'खुदा को हमारी जुदाई मंजूर नहीं थी।'

—'शायद वे मुझे दिल्ली के तख्त पर विठाना चाहते हों।'–ग्रकबर ने इस प्रकार शवनम की ग्रोर देखा, जैसे उसने पते की बात कह दी हो।

—'ग्रौर, कहीं खुदामियाँ यह चाहते हों कि 'शवनम' हिन्दुस्तान की 'मलका' कहलाए !'—शवनम, ग्रकवर की ग्राँखों में ग्राँखें डालती, वोल उठी।

—'खुदा चाहे तो राई पहाड़ वन सकती है ग्रौर पहाड़ राई।'

—'खुदा से क्या नहीं हो सकता ?'—शवनम ने कहा–'उनकी मर्जी से ग्रगर मच्छर फूँक दे तो हिमालय रूई के टुकड़े की तरह उड़ जाय !'

—'एक प्याला ग्रौर वढ़ा !'

—'यह लीजिए !'–शवनम प्याले में सुरा उड़ेलती हुई वोली–'हाजिर है !'

—'ग्रब्वा को दुर्गादास ने बुरी तरह हराया।'

—'सुना है, ग्रापकी छोटी ग्रम्मी भी उसके कब्जे में चली गईं।'

—'जाने दो !'—ग्रकबर ने मुँह विचकाते हुए कहा–'मुझे

उससे क्या ? मुझे तो खुशी है कि अब अब्बा डाँट नहीं सकेंगे !

—'डाँटेंगे कैसे ?'—शबनम बोली—'अकेले आपके गले ही हार तो नहीं पड़ी, दिलेर खाँ ने भी मुँह की खाई।'

—'यह खूब रहा।'—अकबर हँस पड़ा। बोला—'दिलेर-जैसे बहादुर की हार के सामने मेरी हार भी भला क्या हार ! अब्बा को मुँह खोलने का मौका भी नहीं मिलेगा।'

—'और, आपने बादशाह की तरह हाथी, ऊँट, घोड़े, रसद के साथ-साथ बेगम से भी हाथ जो नहीं धोया।'

—'सिवा सौ-पचास सिपाही के मरने के मेरा तो बाल भी बाँका नहीं हुआ।'—अकबर ने एक ही बार में शराब की प्याली खाली कर दी।

—'और, आपकी किस्मत के सामने खुद राणा ने सिर झुकाया।'

—शबनम बोली—'इसे जीत ही समझना चाहिए।'

—'बेशक !'—अकबर फूल कर कुप्पा हो गया। बोला—'आज तक राणा के वंशधर मुगल-बादशाहों से लोहा लेते ही आये मगर मेरे पास रसद भेज कर, मौत के मुँह से निकाल कर राणा ने मेरी इज्जत की।'

—'यह आपके इकबाल की करामात है।'

—'तुम बिल्कुल ठीक कहती हो, शबनम !'—अकबर ने गर्व से कहा—'मैं भी ऐसा ही ख्याल रखता हूँ।'

—'खुदा जल्द ही वह दिन दिखलाए जब आपके कब्जे में दिल्ली का तख्त हो।'

—'शबनम ! तुम हुक्म दो तो अपनी सेना ले दिल्ली पर धावा बोल दूँ।' अकबर उत्साह से भर उठा।

—'बहुत अच्छा ख्याल है।'—शबनम चमक उठी। बोली—'इस समय हारे-थके सिपाहियों पर काबू पा लेना आसान

होगा। बादशाह को जीते जी अपनी करनी का फल मिल जायगा।

—'कैसी करनो ?' अकबर विस्मय से बोला।

—'बूढ़े बादशाह शाहजहाँ को कैद कर तख्त लेना....'

—'ओह, तुमने मौके पर याद दिला दी।'—अकबर ने कहा—'जालिम अब्बा को दादा शाहजहाँ के उस कमरे में पकड़ ले जाऊँगा और कहूँगा, 'मेरे प्यारे अब्बा, क्या नकद सौदा खूब है! इस हाथ दे, उस हाथ ले।'

—'मेरे प्यारे'–शबनम प्रसन्नता से खिल उठी–'मैं कसम खाकर कहती हूँ, उस समय शहंशाह शाहजहाँ की कब्र फठ पड़ेगी और शहंशाह मुस्कुराते हुए कब्र से निकल पड़ेंगे।'

—'भाई मोअज्जम तो काबुल में हैं।'—अकबर ने कहा—'बाकी दोनों भाई आजम और कामबख्श पर फतह पाना कोई मुश्किल नहीं।'

—'मैं कहती हूँ, आप जरूर कामयाब होंगे।'

—'शबनम!'—अकबर आशंकाओं से घिर गया और बोला—'मगर कैसे कामयाबी मिलेगी? अनेक राजपूत-राजा आलमगीर बादशाह के मददगार हैं।'

—'यह तो कोई नई बात नहीं?'—शबनम मुस्कुराकर बोली—'आपके अब्बा, अपने भाई दारा के खिलाफ फौज लेकर, आगरे की ओर चले थे, उस समय भी तो राजपूत-राजाओं ने दारा की ओर से लड़ाई में हिस्सा लिया था।'

—'शबनम!....' कह कर अकबर मौन हो गया।

शबनम उसका मुँह देखने लगी।

—'कुछ दिन हमें सब्र का आँचल पकड़े रहना चाहिए।'

—'वह क्यों ?'—शबनम के स्वर में उसके मन का असंतोष फूट पड़ा ।

—'दुर्गादास को अपना मददगार बनाना होगा ।' अकबर ने कहा—'उसकी मदद से हम जरूर कामयाब होंगे ।'

—'यह तो बहुत ठीक फरमाते हैं ।'

—'मगर शबनम !'—अकबर के मुँह पर भय ने अधिकार जमा लिया । बोला—'भेद खुल गया तो सारे मंसूबे कब्र में दफना दिये जायँगे ।'

—'आप खातिर जमा रखें !'–शबनम ने मंद स्वर में कहा–'भेद नहीं खुलेगा । आप किसी पर अपना यह ख्याल जाहिर न करें !'

—'फिर दुर्गादास को मेरे मन की बातों का पता कैसे चलेगा ?'

—'मैं खुद दुर्गादास से मिलूँगी ।'

—'क्या तुम····?'

—'अचरज न करें, शाहजादे आलम !'—शबनम ने कहा–'मैं आपके लिए जान तक कुर्बान कर सकती हूं ।'

—'यह मैं जानता हूं, शबनम !'—अकबर बोला–'और, मैं अब्बा की आदत को भी जानता हूँ । वे ऐसी बेइज्जती बरदाश्त नहीं करेंगे और तुरन्त राजपूताने पर पूरी तैयारी के साथ हमला बोलने का हुक्म देंगे । कोई वजह नहीं कि वह सेना मेरी मातहती में न भेजी जाय ।'

—'अगर ऐसा हुआ तो मुझे हिंदुस्तान की मलका बनने से कोई रोक नहीं सकेगा ।'

●

दिल्ली के किले में औरङ्गजेब अधीरता के साये में गरम सासें

ले रहा है। उसका आक्रमण व्यर्थ ही नहीं हुआ, बल्कि उसे अपमान का कड़वा घूँट भी पीना पड़ा।

—'दादा ! अब्बा कहते हैं, मैं गाना गाऊँगी तो तुम नाराज होगे।' अकबर की लड़की रजिया आ पहुंची।

औरङ्गजेब ने उस पर ध्यान दिए बगैर कहा—'तुम्हारा अब्बा क्या करता है ?'

—'वे तो अभी नमाज पढ़ रहे हैं।'—रजिया बोली—'कुछ देर पहले मैं गाना गा रही थी तो वे बिगड़ उठे।…'

—'नमाज पढ़ ले तो उसे मेरे पास भेज देना !'—औरङ्गजेब का रूखा स्वर।

—'बहुत खूब !'—रजिया ने कहा—'मगर मुझे गाने से वे मना क्यों करते हैं ? क्या मेरे गाने से तुम सचमुच नाराज होगे ?'

—'रजिया, भली लड़कियाँ गाना नहीं गाती।'—औरङ्गजेब बोल उठा—'जा, अपने अब्बा को भेज दे !'

रजिया क्षण भर औरङ्गजेब का मुँह देखती रही।

—'रुक क्यों गई ?'—औरङ्गजेब पूछ बैठा।

—'दादा, मेरे अब्बा ने मुझे गाना सिखलाने के लिए उस्ताद बहाल किया था।'—रजिया की मधुर वाणी—'उस्ताद कहते थे, तुम बहुत अच्छा गाने लगी हो, रजिया ! तुम्हारा गला बड़ा मीठा है। तुम गाना सुनोगे, दादा ?'

—'बक बक मत कर !' औरङ्गजेब चिढ़ उठा। बोला—'दूर हो आँखों के सामने से।'

रजिया सहमी-सहमी वहाँ से रुकसत हो गई।

—'अब्बा, आपने मुझे याद फरमाया था ?'

औरंगजेब घूम पड़ा। उसके सामने अकबर खड़ा है।

—'मेवाड़ से लौटने के बाद तुम पहली बार नजर के सामने आ रहे हो।'—औरंगजेब ने कहा—'मैं जानना चाहता हूँ, तुम्हारी नाकामयाबी की वजह क्या है ?'

—'दिल्ली में पाँव रखे कुल चौदह घण्टे ही गुजरे अब्बा !'—अकबर बोला—'कुरान में इस तरह दिल उलझ गया कि आपसे मिलने का ख्याल भी भूल गया।'

—'मैं तुम्हारी हार की वजह जानने के लिए बेताब हूँ'।—औरंगजेब के माथे पर बल पड़ गये, जो और गहरे हो उठे।

—'हार की वजह मेरी लापरवाही या सिपाहियों की कमजोरी नहीं, अब्बाजान !'—अकबर ने कहा—'बल्कि अरावली का अजगर-जैसा दर्रा है।'

—'मैंने सुना है, तुम्हारी हार का बायस तुम्हारा नाच-रंग में मशगूल रहना है।'

—'यह आपसे किसने कहा ?' —अकबर ने धड़कते हृदय को दबाया।

—'मैं पूछता हूँ, क्या यह झूठ है ?'

—'या खुदा, तू गवाह है !' —अकबर ने भक्ति-विह्वल होकर कहा—'कि मैंने अपने वक्त तुझे याद करने में गुजारे हैं या तवायफों की सुहबत में ?'

—'आजम झूठ नहीं बोल सकता।'

—'उसके कान फूँकने वाले ने ऐसी अफवाह उड़ा दी होगी; क्या यह गैर मुमकिन है, अब्बाजान !'—अकबर ने कहा—'और, आजम तो आपके साथ थे !'

उसी समय एक बाँदी ने दिलेर खाँ के आगमन की सूचना दी। औरंगजेब ने उसे हाजिर करने का आदेश दिया। दिलेर खाँ वहाँ पहुँचा और अभिवादन कर एक ओर खड़ा रहा।

—'दिलेर खाँ, तुम्हारी बहादुरी कहाँ गई, जो मुट्ठी भर राजपूतों ने तुम्हारे होश ठिकाने लगा दिये ?'

औरंगजेब के कटु वाक्यों से दिलेर खाँ तिलमिला उठा। दिल के भावों को दबाता हुआ उसने कहा—'हार-जीत अपने वश की बात नहीं, जहाँपनाह ! खुदा की मर्जी ही ऐसी थी।'

—'खुदा हमेशा बहादुरों का साथ देता है।'

—'फिर उसने शाहजादे अकबर और आजम का साथ क्यों नहीं दिया ? आजम के मददगार आप भी थे !'

—'दिलेर खाँ—'औरंगजेब बोल उठा—'अकबर ने शराब और तवायफों की वजह से अपनी हार बुलाई।'

—'यह मुझ पर इलजाम है, अब्बाजान !'—अकबर ने विनम्र स्वर में कहा—'आजम मुझे आपकी नजरों से गिराना चाहते हैं।'

—'और, मान लीजिए जहाँपनाह, ऐसा ही हो।'—दिलेर खाँ बोला–'फिर आजम और खुद आप क्यों नाकामयाब हुए !'

—'जले पर नमक न छिड़को दिलेर खाँ !'—औरंगजेब ने गुस्से में कहा—'इस बार तहव्वर को एक लाख सेना के साथ भेजूँगा। मारवाड़ और मेवाड़ के किलों पर जब तक अपना झंडा फहराये जाने की खबर नहीं सुनूँगा, चैन की साँस नहीं लूँगा।'

—'अब्बाजान !' अकबर आवेश में बोला–'और, तहव्वर के साथ मुझे भी जाने की इजाजत दें ! या तो मेवाड़ फतह करूँगा नहीं तो शहीद हो जाऊँगा।'

तभी रजिया दौड़ती आई। बोली—'दादा, दादी लौट आई।' सभी चौंक पड़े।

औरंगजेब की दृष्टि उठी। सामने अभिमानिनी नारी कश्मीरी

बेगम आ रही है।

—'तुम दोनों जा सकते हो।'—औरंगजेब बोल उठा।

दिलेर खाँ के साथ ही अकबर भी झुक-झुक कर सलाम करता आँखों से ओझल हो गया।

—'जहाँपनाह, क्या मेरा लौटना आपको बुरा लगा!'—औरंगजेब को मौन देख बेगम बोल उठी।

—'नहीं तो!' औरंगजेब चौंक उठा।

—'फिर चेहरे पर उदासी क्यों ?'

—'मलक-ए-आलम ? मुझे दुःख है, मैं तुमको दुर्गादास के पंजे मरोड़ कर वापिस नहीं ले सका।'

औरंगजेब के मुँह से उच्छवास निकल गया।

—'मुझे भी कम तकलीफ नहीं कि एक गुलाम मुझे पकड़ कर ले गया और आप मुँह देखते रह गये।'—'कश्मीरी बेगम रूठती सी बोली।

—'मुझे माफ कर दो, मलके!'—औरंगजेब की आजिजी-भरी आवाज—'उस समय मैं मजबूर था। अगर तुम्हें बचाने की कोशिश करता तो मुमकिन था, मैं खुद दुर्गादास के चंगुल में पड़ जाता और, अगर मुझे दुर्गादास गिरफ्तार कर लेता तो उसका कितना बुरा नतीजा होता—यह तुम सोच सकती हो।'

—'आपके कहने का मतलब यह है कि आपको मेरी मुहब्बत से अधिक अपनी सल्तनत प्यारी है!'

कश्मीरी बेगम तिरछी नजरों से बादशाह को घूरने लगी।

—'बुरा न मानो, मलक-ए-आलम!' औरंगजेब ने कहा—'अगर सल्तनत हाथों से निकल जाय तो हम दोनों की भला क्या हस्ती होगी ?'

—'मैं यह जानना चाहती हूँ कि बादशाह सलामत को अपनी

सल्तनत से मुहब्बत है या अपनी कश्मीरी बेगम से ?'

कश्मीरी बेगम के स्वर में उसका मान झाँक रहा है।

औरंगजेब चकराया। क्षणभर बाद उसने संभल कर कहा–'मुहब्बत का रुतवा सल्तनत से ऊँचा है, मलक-ए-आलम ! मुझसे भूल हुई, माफ करो !'···

बेगम खिल उठी। औरंगजेब ने प्रश्न किया–'तुम्हें दुर्गादास ने क्यों कैद किया—यह बात मेरी समझ में नहीं आती। राजपूत तो स्त्रियों को इज्जत की निगाह से देखते हैं।'

कश्मीरी बेगम बादशाह के मन में उठी शंकाओं की झलक पाकर बोल उठी—'और, आप महाराज यशवन्त की रानी को क्यों कैद करना चाहते थे ?'

'मैं तो यशवन्त के पिछले कारनामों का बदला लेना चाहता था।'—औरंगजेब की दृष्टि कश्मीरी बेगम के मुख पर।

बेगम बोली—'दुर्गादास ने भी आपके उस बुरे इरादे का बदला लिया।'

—'फिर उसने तुम्हें छोड़ क्यों दिया ?'

—'गुलाम की हस्ती क्या, जो मुझे रोक रखे !'—कश्मीरी बेगम के नथुने फड़क उठे।

—'तो उसने अपनी मर्जी से तुम्हें आजाद नहीं किया ?'

—'उसकी मर्जी का कोई सवाल ही नहीं उठता। वह तो राणा का एक गुलाम है।'—बेगम क्रोधावेश में बोली—'उसे दुर्गादास न कह कर 'राणा-दास' कहा जाय तो बेहतर होगा।'

—'दुर्गादास पर तुम बहुत नाराज हो !'–औरंगजेब बोला–'लगता है, कैद में उसने बहुत तंग किया है तुम्हें।'

—'एक गुलाम की ऐसी हिम्मत, जो हिंदुस्तान की मलका के साथ गुस्ताखी करे !'

—'वह चाहता तो तुम पर मनचाहा जुल्म कर सकता था।'

—औरंगजेब ने कहा–'क्योंकि तुम उसकी कैद में थीं।'

—'मैं इसे नहीं मान सकती, जहाँपनाह!'

—'अच्छा!'—औरंगजेब पूछ बैठा–'तुम आजाद कैसे हुईं?–मैं यह जानना चाहता हूँ।'

—'दुर्गादास मुझे राणा राजसिंह के पास ले गया।'—कश्मीरी बेगम ने लम्बी साँस ली और बोली–'राजसिंह दुर्गादास को धिक्कारने लगे और मुझे इज्जत के साथ दिल्ली लौटा देने का उन्होंने हुक्म दिया। उनके हुक्म के मुताबिक दो सौ राजपूत सिपाही मुझे किले के दरवाजे तक पहुंचा गए।'

—'बेवकूफ राणा!'—औरंगजेब के मुख से उपहासपूर्ण हँसी निकल गई।

—'राजा को बेवकूफ न समझें, जहाँपनाह!'–कश्मीरी बेगम बोल उठी–'वह बहुत अक्लमन्द है।'

—'उसकी अक्लमन्दी की निशानी अकबर है,'—औरङ्गजेब के अधरों पर व्यङ्गपूर्ण मुस्कान खेल गई। बोला—'जिसके साथ पचास हजार फौज को उसने मौत के मुँह से निकाल दिया।'

—'वह उसकी नादानी नहीं, बल्कि इन्सानों के प्रति उसकी हमदर्दी का सबूत है।'

—'मलक-ए-आलम! राणा को ऐसा ख्याल रखना है तो उसे फकीर बनकर घूमना चाहिए। सयासत के साये में महात्मा के नेक ख्याल मुँह की खाते हैं।'

—'हुकूमत की बागडोर हाथ में लेनेवालों को रहम-दिल नहीं होना चाहिए—आप यही न कहना चाहते हैं?'

—'दुश्मनों पर रहम करना खुदकशी से कम नहीं, बेगम!'

— औरङ्गजेब बोला—'राजसिंह की भूल ने उसके लिए खतरा नहीं पैदा किया, बल्कि राजपूतों को मौत के मुँह में ढकेल दिया।'

—'क्या आप फिर मेवाड़ पर चढ़ाई करेंगे?'—कश्मीरी बेगम चौंक उठी।

—'तुम्हारा क्या इरादा है, बेगम?'- औरङ्गजेब मुस्कुरा पड़ा। बोला—'राजसिंह ने मेरे पचास हजार सिपाहियों को नयी जिंदगी दी, उसके बदले मैं पीठ में चाकू की तरह मेवाड़ को छोड़ दूँ?'

—'पीठ में चाकू का क्या मतलब, जहाँपनाह?'

कश्मीरी बेगम का विस्मय बढ़ता ही जाता है।

—'मलक-ए-आलम! तुम्हें याद होगा,पहाड़ी चूहा मेरी आँखों में धूल झोंक कर निकल भागा।'

—'आपका मतलब शिवाजी से है?'

—'हाँ!'—औरङ्गजेब के मुख की मुद्रा कठोर हो उठी। बोला-'वह खुले आम मुगल-सल्तनत के शहरों को लूट रहा है। बीजापुर और गोलकुंडा की आजादी भी मेरी आँखों में काँटे की तरह खटक रही है। मैं चाहता हूँ, राजपूतों की कमर तोड़ डालूँ, जिससे मुझे गैरहाजिर पाकर भी वे दिल्ली की ओर बढ़ने की हिम्मत न कर सकें।'

'तो यशवंत की रानी और राणा की 'जजिया' के खिलाफ आवाज एक बहाना ही है!'

—'और नहीं तो क्या?'—औरङ्गजेब ने कहा—'मुझे शुबहा है, दक्षिण की ओर बढ़ते ही सभी राजपूत मिलकर, दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर लेंगे! यशवन्त सिंह ने शुजा से लड़ते समय मेरे हाथों से तख्त छीनने की कोशिश की थी--उस वक्त मैं किसी

पर यकीन नहीं करता।'

कश्मीरी बेगम मौन सोचती रही।...... ...

—'चुप क्यों हो गई ?'—औरङ्गजेब पूछ बैठा।

—'राजपूत-कौम जिस तरह बहादुर है, उसी तरह मासूम भी।'—कश्मीरी बेगम बोल उठी—'आप चाहें तो बगैर लड़ाई के भी उन्हें वश में कर सकते हैं।'

—'वह कैसे ?'

—'जजिया बंद करा कर।'

—'फिर खाली खजाना कैसे भरेगा ?'—औरङ्गजेब पूछ बैठा-'दक्षिण की लड़ाई में जो खर्च होगा, वह कहाँ से आयगा ?'

—'खजाना खाली है तो आप हिन्दू-मुसलमानों पर कर लगा कर उसे पूरा कर सकते हैं।'—कश्मीरी बेगम बोली—'सिर्फ हिन्दुओं पर 'जजिया' लगाना मुनासिब नहीं।'

—'मलक-ए-आलम, मैंने ऐसा क्यों किया है—इसे तुम नहीं समझ सकी। समझती तो मेरी अक्लमंदी के लिए बधाई देती।'

औरङ्गजेब के अधरों पर कुटिलतापूर्ण मुस्कान।

कश्मीरी बेगम कौतूहलवश उसका मुँह देखने लगी।

●

—'आज बहुत खुश दीख रहे हो ! बात क्या है?' तहव्वर खाँ के घर में पाँव रखते ही उसकी बीवी बोल उठी।

—'बीवी ! बादशाह सलामत ने मेरे साथ इन्साफ किया है।' —तहव्वर खां ने अपनी तलवार खूँटी से लटकाते हुए कहा—'बंगाल से वापिस बुलाने की वजह नहीं जानने से तरह-तरह के ख्याल दिमाग़ में चक्कर लगा रहे थे, मगर सभी मुँह चुराकर भागे। गम की रात खत्म हो गई। सामने सुबह का सूरज

मुस्कुरा रहा है—ऐसा समझ लो।'

—'आखिर मैं भी सुनूँ !'.........

—'बस, कुछ न पूछो, बीबी !' तहव्वर ने आसन पर बैठ, लापरवाही से दोनों हाथ फटकारते हुए, कहा—'पौ बारह है !'

—'वही तो मैं जानना चाहती हूँ, मियाँ !'

—'दुश्मन चारों खाने चित्त गिरा। बहुत दिनों से छाती के भीतर तड़पते अरमान आज मुस्कुरा उठे।'

—'दिमाग़ की नसें तो दुरुस्त हैं ?'......बीबी खीझ उठी।

'एकदम दुरुस्त हैं, बीबी !'—तहव्वर बोला—'तुम तनिक शुबहा न करो ! दिलेर अपने को बड़ा बहादुर लगता था। बादशाह सलामत भी उसके सामने मुझे हकीर समझते थे, मगर मेवाड़ की लड़ाई ने उनकी आँखें खोल दीं। उन्हें यकीन है, मेवाड़ जीतने वाला कोई बहादुर है तो वह तहव्वर ही !'

—'तो तुम्हें मेवाड़ पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया है बादशाह आलमगीर ने ?'

—'मेवाड़ कहो या मारवाड़—चढ़ाई तो करनी ही है।'—तहव्वर खाँ ने कहा—'मगर खुशी की बात है, आज मैं मुग़ल-फौज का सिपहसालार हूँ। सत्तर हजार सिपाही मेरी मातहती में मारवाड़ की ओर बढ़ेंगे। मेरे पीछे शाहजादे अकबर भी फौज ले कर जायँगे।'

तहव्वर की बीवी उदास हो गई। तहव्वर पूछ बैठा—'तुम्हारा चेहरा फक क्यों हो गया ?'......

—'राजपूत कौम बड़ी बहादुर होती है।'

तहव्वर खाँ अपनी बीवी की आशंका से परिचित हो बोल उठा—'उसकी बहादुरी का यह सबूत है कि वह मुगल-बादशाह का गुलाम है ! कोई बादशाह आलमगीर का तलवा सहलाता है,

कोई उनकी सल्तनत की नींव अपने खून देकर मजबूत बनाता है।'

—'यह तो उनकी फूट का नतीजा है, मियाँ !'—बीबी आवेश में बोली—'अगर वे एकजूट हो दिल्ली के तख्त पर चढ़ बैठें तो आलमगीर हुकूमत का निशान भी बाकी न बचे।'

—'कहती तो ठीक हो !'—तहव्वर खाँ ने कहा—'मगर मेढ़कों के एक जगह जमा होने की उम्मीद बेकार है।'

—'मगर वह मेढ़क नहीं, इन्सान है।'

—'यह भी सही, मगर उसके पास अक्ल नाम की कोई चीज नहीं।' तहव्वर खाँ बोला—'तुमने सुना होगा, मेवाड़ के राणा ने भूख-प्यास से व्याकुल अधमरी मुगल फौज को नयी जिंदगी दी। ... जो कौम दुश्मन पर रहम करे, वह गुलामी से छुटकारा पा जाय—क्या यह मुमकिन है ? जिन सिपाहियों की जान बख्शी गई, वे ही आज राणा को बरबाद करने, उनके देश को उजाड़ने और उनके देशवासियों को तबाही और बरबादी के गार में झोंकने के लिए नये जोश लेकर जा रहे हैं।'

—'मुझे यकीन है, बादशाह सलामत की मंशा पूरी नहीं होगी।'

—'छोड़ो भी बीबी, उस जिक्र को। पुलाव बनवाने का इन्तजाम करो !'

—'क्या दोस्तों को दावत दोगे ?'

—'दोस्तों को ही नहीं, फकीरों और भिखमंगों को भी खिलाऊँगा। उनकी दुआ से अगर लड़ाई में जीत मिली तो कई सूबे हमें जागीर में मिल जायँगे।'

—'और, अगर हार हुई ?'

—'उसका नाम भी न लो, बीबी !'

—'क्यों मिया ?'

—'मैं डर को पास फटकने देना नहीं चाहता।'

उसी समय युवती बाँदी नसीबन मटकती हुई वहाँ आ पहुँची बोली—'द्वार पर शाहजादे-आलम खड़े हैं, बीवी !'

'ऐं···' तहव्वर खाँ घबड़ा कर उठा। बोला—'बीबी, बैठक-खाने पर एक नज़र डाल लेना !'

—'नसीबन ! इधर तो आ !'—कहती बीबी जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाती, दूसरे कमरे की ओर बढ़ी।

—'बंदगी शाहजादे-आलम !' तहव्वर खाँ ने झुककर सलाम किया। उसके सामने अकबर खड़ा है।

'·· तशरीफ रखिए, खुदाबंद !'···

तहव्वर खाँ ने शाहजादे को भीतर चलने का संकेत किया।

—'तुमसे राज की बातें करनी हैं, खाँ !'—कमरे में पाँव रखते-रखते अकबर ने कहा।

—'बंदा खिदमत के लिए तैयार है।'—तहव्वर खाँ की खुशा मदभरी आवाज़।

अकबर ने आसन पर बैठते हुए कहा- 'मेरे पास बैठो !'

—'शुक्रगुजार हूँ !' कहकर, तहव्वर शाहजादे-आलम के पास जा बैठा।

'—तहव्वर ! खुदा गवाह है, मैं तुम पर भरोसा रखता हूँ।'

—'मैं गुलाम हूँ हुजूर का।'-तहव्वर ने दाँत निपोड़ दिये।

—'नहीं खाँ !'—अकबर ने कहा—'तुम गुलाम नहीं, मेरे दोस्त हो।'

—'मेरी खुद किस्मती है कि शाहजादे-आलम जर्रे को आफ़-ताव का रुतवा वख्श रहे हैं।'

—'राज को दिल में छुपा रखोगे न !'

—'गला कटने पर भी उसे वाहर नहीं निकालूँगा !'

तहव्वर खाँ का दृढ़ स्वर मगर उसकी आँखों में उत्सुकता की झलक।

—'मेरे दोस्त !'-अकबर ने कहा—'तुम जानते हो, आजम मुझे फूटी आँखों नहीं देखना चाहता !'

—'दुरुस्त फरमाते हैं, हुजूर !'—तहव्वर खाँ बोला-'मुझे बहुत पहले से शुबहा है, मगर आपसे दिल की बात जाहिर करने का मौका नहीं मिला।'

-'उसका मददगार दिलेर खाँ है।'

—'मगर वह आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकेगा, शाहजादे-आलम !'-तहव्वर खाँ के माथे पर बल पड़ गये। बोला-'तहव्वर के हाथों में जब तक तलवार रहेगी शाहजादा आजम को तख्त पर नहीं बैठा सकता !'......

—'मुझे यकीन है मेरे दोस्त, तुम जरूर मेरी मदद करोगे।'

अकबर की बाँछें खिल गईं।

—'मौका आने पर दिखला दूँगा कि दिलेर मेरे सामने कब तक टिकता है !'-तहव्वर आवेश में।

—'जुबान पर काबू रखो, दोस्त !'-अकबर ने खाँ के मुँह पर अँगुलियाँ रख दीं। तत्पश्चात् बोला—'राज खुल गया तो हम दोनों ही बेमौत मारे जायँगे।......यह लो, मेरा यह छोटा-सा तोहफा !'

अकबर ने अशर्फियों से भरी एक थैली तहव्वर खाँ के आगे रख दी। खाँ ने थैली खोलकर देखा और अशर्फियों की चमक ने उसकी आँखों में नई चमक पैदा कर दी। बोला-'यह क्या हुजूर ...मैं तो आपका अदना गुलाम हूँ।......'

—'रख लो दोस्त ! मौके पर काम आयगा।'

—'जो इर्शाद !' तहव्वर खाँ ने झुककर सलाम किया। ●

'दुर्गादास, तुमने स्वर्गीय महाराज की प्रतिष्ठा ही नहीं रखी, बल्कि राजपूताने को डूबने से बचा लिया ।'—यशवंत सिंह की रानी ।

'मैंने तो अपना कर्त्तव्य-पालन किया, महारानी !'–दुर्गादास बोले—'सच पूछिये तो राजपूत-वीरों के बलिदान ने हमारा मुख उज्ज्वल किया ।'

–'मैं उन बलिदानी-वीरों को प्रणाम करती हूँ !'

महारानी ने श्रद्धा से गद्‌गद्‌ हो शहीदों की आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की ।

—'महारानी !.......'

दुर्गादास की गम्भीर वाणी ! महारानी चौंक पड़ीं । बोलीं–'कोई नई आफत आने वाली है, दुर्गादास ?'

—'जी हाँ !' —दुर्गादास ने कहा-'अपनी पराजय से विक्षिप्त औरंगजेब, पूरी शक्ति ले, मारवाड़ की ओर आना ही चाहता है ।'

—'बहादुर आफतों से नहीं घबड़ाते, वे संघर्षों के बीच ही अपनी राह खोजते हैं ।'–महारानी के स्वर में आशा और साहस बो रहा है ।

—'दुर्गादास और उनके सहयोगी राठौर-वीर अंतिम साँस तक अन्यायी के खिलाफ लड़ते रहेंगे—आप विश्वास रखें, महारानी !'

दुर्गादास का दृढ़ निश्चयात्मक स्वर ।

—'मुझे विश्वास है, दुर्गादास ! —मगर एक बात मेरी समझ में नहीं आती ।'

—'वह क्या ?'

'औरंगजेब मारवाड़ की ओर ही क्यों बढ़ रहा है ?'

—'शायद उसकी मंशा स्वर्गीय महाराज से बदला लेने की हो या उसके पंजे से निकल आने के कारण हम उसको आँखों में काँटे की तरह खटक रहे हों।'

—'उसकी बेगम को तुमने कैद कर उसके मुँह पर तमाचा मारा था।'—महारानी ने कहा—'सम्भव है, वह उसका प्रतिकार चाहता हो।'

—'चाहे किसी भी कारणवश, कोई हमारे स्वदेश पर आक्रमण करे, उसका मुकाबला करना हमारा कर्त्तव्य है।'

—'मगर दुर्गादास, हमारे पास तो अभी केवल दस हजार राठौरों की सेना ही है।'—महारानी के स्वर से आशङ्का झाँक रही है—'महाराज ने बादशाह की ओर से कोई खटका नहीं रहने के कारण, अन्य सैनिकों को छुट्टी दे दी।'

—'आप चिंता न करें, महारानी!'—दुर्गादास ने कहा—'हम वज्र बनकर दुश्मनों पर गिरेंगे और उनके हौसले पस्त कर देंगे।'

—'लाख-लाख सैनिकों के बीच दस हजार राठौर सिवा कुछ नुकसान पहुंचाने के भला क्या कर सकेंगे ?'

—'जान हथेली पर रखकर लड़ने वाले क्या नहीं कर सकेंगे, महारानी!'—दुर्गादास आवेश में—'दुश्मनों के सैनिक लड़ेंगे पैसे के लिए और राठौर लड़ेंगे अपने स्वदेश की रक्षा के लिए। दोनों में बहुत अन्तर है।····और, मेवाड़ की सेना भी तो हमारी सहायता करेगी!'

—'राजपूत-वीर अपने प्राण न्योछावर करने में पीछे कदम नहीं हटायेंगे—यह मैं मानती हूं, मगर मारवाड़ चित्तौड़ की तरह, हमारे हाथ से निकल जायगा।'

'महारानी',—दुर्गादास का गम्भीर स्वर—'तो क्या हम

बगैर लड़ाई के ही दुश्मनों के आगे घुटने टेक दें ? क्या हम मुगल सैनिकों की मनमानी के लिए मारवाड़ छोड़ दें ? '

—'मेरा ऐसा अभिप्राय नहीं, दुर्गादास ! तुम शाँत होकर सोचो—हम मुगलों से स्वदेश की रक्षा करने में कैसे सफल होंगे ?…'

—'हमें बिखरे हुए सैनिकों को एकत्र करना चाहिये।'—दुर्गादास ने कहा—'एक वार औरङ्गजेब ने रुष्ट हो जव जोधपुर के खिलाफ सेना भेजी ; उस समय महाराज ने साठ हजार सेना बात को वात में तैयार कर ली।'

—'इस समय वे सभी सैनिक खेती तथा अन्य कार्य में लगे हैं।'—महारानी का चिंतित स्वर।

—'वे आपके आह्वान पर फिर एक बार उठ खड़े होंगे।'

—'गत संग्राम में मैंने दो हजार वैसे ही सैनिकों को तुम्हारे पास भेजा था।'

—'फिर प्रयत्न कीजिए !'—दुर्गादास ने कहा—'उन किसानों की आँखें खोलिए ! उन्हें बतलाइये—शत्रु की सेना जव मारवाड़ में प्रवेश करेगी, उनके झोपड़े धधक उठेंगे; उनके और उनके बच्चों की छाती में जालिम सङ्गीन घुसेड़ कर खून की होली खेलेंगे : उनकी जवान स्त्रियों और कन्याओं का सतीत्व अपहरण कर आक्रमणकारी आनन्द मनायेंगे ! और, इतने से ही वे संतोष नहीं करेंगे वलिक गुलामी की जंजीर में जकड़ कर राज्य-विस्तार का लोभी औरङ्गजेव उनकी गाढ़ी कमाई को कर के रूप में वसूल कर दिनोंदिन अपनी शक्ति बढ़ाता जायगा !'

—'तुम बड़े बुद्धिमान हो, दुर्गादास !'—महारानी बोल उठीं—'मुझे विश्वास है, तुम इस बार भी मुगलों को मुँहकी खिलाने में सफल होगे।… मैं गाँव-गाँव घूम कर पुनः सैन्य सङ्ग-

ठन करूँगी। आवश्यकता पड़ने पर मैं स्वयं तलवार ले मैदान में कूद पड़ूँगी !'

एक प्रहरी ने सूचना दी—'मेवाड़ के बड़े राजकुमार भीमसिंह महारानी और सेनापति से मिलना चाहते हैं।

महारानी के मुख पर आशा की रेखायें खिंच गईं। बोलीं—'उन्हें सादर ले आओ !...'

—'स्वयं मैं उनके स्वागत में जाना चाहता हूं, महारानी !'

दुर्गादास राजकुमार भीमसिंह का स्वागत करने बाहर निकले और शीघ्र ही उन्हें साथ लेकर कक्ष में प्रवेश किया।

भीमसिंह ने सिर झुकाकर महारानी का अभिवादन किया।

—'दीर्घायु हो, भीम !'–महारानी का गला भर आया।

—'औरङ्गजेब ने अकबर और तहव्वर खां के अधीन एक लाख से ऊपर सेना मारवाड़-विजय के लिए रवाना करदी है, महारानी !'—भीमसिंह ने कहा।

—'कोई चिंता नहीं, राजकुमार !'—महारानी ने कहा—'महाराणा प्रताप अकेले अकबर की फौज पर फतह पाये और, आज तो मेवाड़ के साथ मारवाड़ का भाग्य भी जुड़ा हुआ है।'

—'फिर भी हम सामने मुकाबला कर औरङ्गजेब की सेना पर विजय नहीं पा सकेंगे।'

—'तुम्हारे-जैसे वीर के जीवित रहते भी, राजकुमार ?'

—महारानी की प्रश्न-भरी दृष्टि भीमसिंह के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी।

—'नहीं !' भीमसिंह गम्भीर हो उठा—'मगर मरने के बाद वे अवश्य विजयी होंगे।'

—'तुम दीर्घजीवी हो, जिससे अत्याचारी की मनोकामना पूर्ण न हो !'—महारानी की स्नेहसिक्त वाणी।

—'आग की लपटों के बीच कूदने पर भी कोई जीवित रहता है, महारानी !'—भीमसिंह के मुख पर अपूर्व मुस्कान खेल गई। उसने बात का सिलसिला बदलने के ख्याल से कहा—'हाँ, राजकुमार अजीत कहां हैं ?'

—'वह आबू के दुर्ग में सुरक्षित है।'

—'ठीक है !' भीमसिंह के मुँह से निकला और वह दुर्गादास की ओर घूम पड़ा। बोला—'दुर्गादास, दुश्मनों को मार भगाने के लिए तैयार हो जाओ !'

—'मैं तैयार हूँ, राजकुमार।'

—'तुम्हें, दुश्मनों के मारवाड़ में प्रवेश करने के पूर्व ही, उन पर आक्रमण कर देना होगा शत्रु पूर्ण तैयारी के साथ आक्रमण करे—उसके पूर्व ही उसकी कमर तोड़ देना बुद्धिमानी कहा जायगा। सम्भव है, समय के पहले हमारी सावधानी शत्रुओं को उलटे पाँव लौटने पर मजबूर कर दे।'

—'शावाश, राजकुमार !' आपने मेरी चिंता दूर करदी। पथ के अन्धकार में आपने मशाल का काम किया।'

महारानी कुछ नहीं समझ सकने के कारण दोनों नर-नाहरों का मुँह देखने लगीं।

●

—'जिंदगी तभी जिंदगी है जब वह मौत के साये में भी मुस्कुराये जाती है।'

—'चिराग अगर अंधेरे में रोशनी न फैलाये तो भला उसकी हस्ती क्या ?'

—'मेरी प्यारी शवनम !'—अकबर बोला—'कुछ देर पहले रजिया की मा मुझे समझाने आई थी—'मैं लड़ाई के फैसले तक नाच-रङ्ग से अलग रहूं !' मैंने कहा—'मुल्लानी, मुझे वख्श दो !

मैं तुम्हें दिन में पाँच बार नमाज पढ़ने से नहीं रोकता तो तुम मुझे रात में एक बार महफिल में जाने से क्यो रोकती हो ?'... वह टका-सा मुँह लेकर वापिस लौट गई।'

—'क्या दिल्ली लौट गई ?'—शबनम चौंक पड़ी।

—'नहीं, अपने खीमे में।...मैं ऐसा बेवकूफ नहीं, जो उसे दिल्ली लौटने की इजाजत दूँगा। वह सारा गुड़ गोबर कर देगी। अब्बा पर हमारा राज खुलेगा और हमारे सपने अधूरे रह जायँगे।'

—'बेशक ?'

—'शबनम ! कल क्या होगा—बतला सकती हो ?'

'खुदा की बातें खुदा ही जाने !'—शबनम असमर्थता प्रकट करती बोली—'कौन जानता है, हमारी जिंदगी का 'बुलबुला' कल नहीं फूटेगा !'

अकबर खिल उठा।—'हमें पता नहीं, मौत कब अपनी बाहुओं में लपेट ले—फिर क्यों नहीं हम जिंदगी के थोड़े समय को हँसते-गाते गुजारें ?'

—'अक्लमन्दी की बात है, हमें मौत से बच-बच कर नहीं चलना चाहिये।'

—'मैं भला कब किसी की परवाह करता हूं। अब्बा का डर लगा रहता है—उससे भी आजाद होने की फिक्र कर ही रहा हूं।'

—'आपकी मंशा पूरी होकर रहेगी।'

—'अगर लड़ाई में मुँहकी खानी पड़ी तो हमेशा के लिए अब्बा अपने दिल से निकाल फेंकेंगे।'

—'आने वाले कल की फिक्र न करें, हुजूर !'

—'फिक्र करें मेरे जूते !'

मेघ गर्जन के साथ ही बिजली चमकी। अकबर चिल्ला उठा--'कोई है ?'

--'हुक्म हो, शाहजादे आलम !' एक सिपाही हाजिर हुआ।

--'बाहर नगाड़ा कौन बजा रहा है ?'

--'कोई नहीं सरकार !' सिपाही विस्मय से भर गया।

--'अभी-अभी मैंने नगाड़े की आवाज सुनी।' अकबर की मुद्रा कठोर हो गई।

--'वह तो बादल की गड़गड़ाहट थी, खुदावंद।'

--'इस वक्त बादल के गुजरने का क्या काम !'

शबनम समझ गई, अकबर नशे में बेपर की उड़ा रहा है। उसने विनम्र स्वर में कहा--'बादल हमारी मस्ती चुरा कर झूम उठे हैं, हुजूर ? उन्हें बख्श दिया जाय।'

उसी समय फिर मेघ गर्जन हुआ।

अकबर के नथुने फड़क उठे--'गुस्ताख फिर मेरे खिलाफ सर उठा रहे हैं।'

--'हिंदुस्तान के शाहजादे के खिलाफ जुबान हिलाने वाले को रोना पड़ेगा।'

—'मैंने उन्हें माफ किया, शबनम !' अगर उन्हें रोना पड़ा तो मेरे फौजी पड़ाव में पानी-पानी ही हो जायगा। खुदा के लिए उन्हें रोको !'

—'आप महफिल में तशरीफ ले चलें, हुजूर ?'—शबनम बोली—'आपकी लापरवाही से घबड़ा कर बादल भी दूसरे देश चले जायँगे।'

—'बहुत खूब, शबनम !'

अकबर सिपाही की ओर मुड़ पड़ा। बोला—'हबीब खाँ, लियाकत को हाजिर करो !'

—'जो इर्शाद !'—सिपाही सलाम कर खीमे से बाहर निकल गया। अकबर ने कहा—'शबनम, एक प्याला और !'

लियाकत ने आकर, महफिल में अकबर की इन्तजारी की सूचना दी।

अकबर शबनम का सहारा लिये खीमे से बाहर निकला। ठंडी हवाओं ने उसकी मस्ती को और बल दिया।

शबनम बोल उठी—'उफ़ ! कैसी खौफनाक रात है !'

अकबर के पाँव रुक गये। बोला—'देखो शबनम, मुझे गुस्से में देख बादलों ने इस प्रकार अँधेरा फैला दिया कि मैं उन्हें देख भी न सकूँ।'

—'अब तो रोने भी लगे !'

—'रोने दो, शबनम !'—अकबर ने आगे कदम बढ़ाया और बोला—'हम रोने के लिए पैदा नहीं हुए। हमारी जिंदगी की नींव तो सुखों के कोमल फूलों पर है।'

भयंकर गर्जन हुआ, मानो पहाड़ टूट कर मुगल-शिविर पर गिर पड़ा। बिजली की चमक ने अकबर की पलकें बन्द कर दीं।

—'लौट चलो, शबनम !'—अकबर के माथे पर बल पड़ गये। बोला—'हम नाचीज बादलों की गुस्ताखी बर्दाश्त नहीं कर सकते।'

और, खीमे की ओर लौटते कदम ठिठक गये।

—'लियाकत ! मुन्नन जान को उसके साजिंदों के साथ मेरे खीमे में हाजिर करो ! आज हम महफिल में नहीं जायँगे।'

—'जो इर्शाद !'—लियाकत तेजी से एक ओर चला गया। अकबर महफिल में नहीं गया, महफिल ही उठके उसके पास आ गई।

फिर बादल की गड़गड़ाहट हुई और अकबर ने कहा—

'शुरू करो मुन्नाजान !'

मुन्नन जान ने झुककर सलाम किया।

सारंगी मधुर ध्वनि बरसाने लगी।

तबले पर तबलची की कुशल अँगुलियां अपनी करामात दिखाने लगीं।.......'

मुन्नन जान झोंके से उठी।.......

बिजली तड़पी।

मुन्नन जान के नूपुरों की नपी-तुली ध्वनि महफ़िल पर मीठी बेहोशी बनकर छा गई।.......

अचानक हवा के जोरदार झोंके ने अकबर के खीमे से माथा टकराया। शबनम बोली—'तूफान आया, हुज़ूर !'

—'खामोश रहो, शबनम !'–अकबर ने लापरवाही से कहा–'भला वह मेरा क्या कर लेगा ?'

लियाकत ने आकर सूचना दी–'आंधी के साथ-साथ वर्षा भी हो रही है खुदावंद !'

—'कोई परवाह नहीं, लियाकत ! बादलों के आंसुओं से मैं नहीं घबड़ाता।'—अकबर ने अपना ध्यान मुन्नन की ओर कर दिया।

आंधी के झोंके अकबर के खीमे से बार-बार अपनी शक्ति की आजमाइश करते रहे। बादल गरज-गरज कर उसका ध्यान भंग करते रहे। बिजलियां तड़पती रहीं और, मुन्नन जान नृत्य-प्रदर्शन में संलग्न रही।

अकबर तबले की ताल पर सिर धुन रहा है, पहरेदार हबीब खाँ घबड़ाया हुआ आया।

—'खुदाबन्द !'

—'गुस्ताख !'—अकबर बोल उठा—'कयामत की रात है—यही तो कहना चाहता है ? जा दूर हो आंखों के समाने से ।'

—'महफ़िल बर्ख्वास्त करें, हुज़ूर !……'

हबीब खाँ के मुँह से वाक्य पूरा नहीं हुआ और अकबर अंगारों पर लोटने लगा । बोला—'लियाकत, इस गुस्ताख को बाहर ले जाओ और किसी सिपाही से कहो—बदतमीज के धड़ से सर अलग कर दे !……'

—'मेरी सुनें, शाहजादे आलम !'

हबीब खां गिड़गिड़ा उठा । लियाकत तड़प कर उसके पास खड़ा हो गया ।

—'दिमाग़ मत चाट !'—अकबर खीझ उठा और लियाकत की ओर मुखातिब हो बोला—'लियाकत !–इस जंगली को बाहर ले जाओ !……'

हताश-निराश हबीब खीमे से बाहर निकला ।

अकबर ने कहा—'सिर फिर गया है नालायक का ।'

मुन्नन जान खड़ी हो गई । उसके नूपुर की झंकार बन्द थी, खामोशी के साये में ।

—'विहाग सुनाओ, मुन्नन !' और, उसने स्वीकृति के लिए शबनम की ओर देखा ।

शबनम ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी ।

मुन्नन जान विहाग गाने लगी ।

मगर रंग जमा नहीं । शोर घटने के बदले बढ़ता ही गया ।

अकबर खीझ उठा । उसने शबनम की ओर मुँह फेर कर कहा—'भला अपने सिपाहियों को तो देखो, बादलों की गड़गड़ाहट और बिजलियों की कड़क से किस तरह डर गये हैं !'

—'वर्षा के साथी आंधी का जोर भी है।'—शबनम ने खीमे पर नजर डालते हुए कहा।

—'आंधी कोई कहर तो नहीं है!'—अकबर बोला—'ये लोग इस प्रकार चीख रहे हैं, जैसे इनके गले पर चाकू चल रहा है।'

शोर और बढ़ा···और बढ़ा····

—'आंधी और वर्षा से घबड़ाने वाले भला राजपूतों पर किस तरह फतह पायँगे!'

—'भागो···भागो !' अत्यंत समीप किसी सिपाही की भय-मिश्रित आवाज।

अकबर अंगारों पर लोटने लगा। बोला—'महफिल खतम करो, मुन्नन! मैं उन बदमाशों से निपट लूँ!' उसने नंगी तलवार हाथों में ले ली।···

—'हुजूर, बाहर पानी गिर रहा है।'—मुन्नन बोल उठी।

—'मैं डरपोक सिपाहियों की तरह आंधी-पानी से डरनेवाला नहीं, मुन्नन!'—अकबर आवेश में बोला—'आओ शबनम! तुम मेरे साथ रहो। फिर देखोगी, मैं किस तरह गुस्ताखों के होश ठिकाने लगाता हूं।'

वह उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर खीमे के बाहर निकला।

तेज हवा के झोंके ने पानी की बूँदों के साथ उसका स्वागत किया। एक पल के लिए उसकी पलकें मुँद गईं। दूसरे क्षण वह दूने उत्साह से भर गया। शबनम उसके पास है।

बिजली चमकी।

शबनम बोल उठी—'हुजूर, दुश्मनों ने चढ़ाई कर दी है।'

अकबर के कान खड़े हुए। बोला—'तुम्हारा सर फिर गया है, शबनम! ऐसी तूफानी रात में कौन भला आदमी घर से बाहर

कदम निकालेगा ?……'

वौछारों ने उसके वस्त्र गीले कर दिये।

—'ग्राँखें खोल कर, सामने देखिए, शाहजादे-ग्रालम !'—शवनम घबड़ा उठी।

ग्रकवर ने ग्रांखें फाड़-फाड़ कर देखा, मशालों की लाल रोशनी वड़ी भयानक लग रही है। मुगल,सैनिक प्राण-भय से भाग रहे हैं।

—'शवनम ! हमारे सपने क्या इस प्रकार टूट जायँगे ?'

ग्रकवर का नशा हिरन हो गया।

—'ग्रपने सिपाहियों को रोकिए हुजूर !'—शवनम ने कहा-'इस समय हिम्मत से काम लेने की जरूरत है।'

नंगी तलवार उठाये ग्रकवर चिल्ला उठा—'ग्ररे बुजदिलो ! मुट्ठी भर राजपूतों के डर से मैदान छोड़ रहे हो। ग्रागे वढ़ो ! हिम्मत न हारो ! दुश्मनों को पलक मारते तुम मौत के घाट उतार सकोगे। मेरे बहादुर मुगल-सिपाहियो !….'

ग्रकबर ग्राँधी की तरह ग्रागे व़ढ़ा।

शवनम एक भागते सिपाही से तलवार छीनकर ललकार उठी—'मेरे डरपोक मुगल-सिपाहियो ! तुम साड़ी पहन खीमे में जा छिपो ! ग्रब ग्रौरत तलवार ले दुश्मनों का मुकाबला करने जा रही है।'

अकबर ग्रौर शवनम की ललकार ने मुगल-सिपाहियों के भागते कदमों को रोका। वे दृढ़ संकल्प से लौट पड़े !

मशालें जल उठीं।

रक्त की धारा वह चली।

घायलों के चीत्कार से धरती कांप उठी।

ग्रचानक एक मुगल-ग्रफसर ने ग्रागे बढ़कर कहा—'शाहजादे-

आलम ! जान बचाइए ! दुश्मनों के आगे हमारे सिपाही नहीं टिक रहे हैं।...'

राजपूतों की 'विजय-ध्वनि' अत्यंत निकट सुनाई पड़ी।

अकबर ने मुगल-फौज को रोकने की लाख कोशिशें कीं, मगर व्यर्थ ! वह अवाक् खड़ा अपने सैनिकों का भागना देखता रहा। शबनम ने उसकी कलाई पकड़ ली और अपनी ओर खींचती हुई बोली—'भागिए हुजूर, दुश्मन सिर पर आ पहुंचे।'

●

—'रजिया ! तुम्हारे अब्बा कहां हैं ?'

रजिया ने अपनी मा के मुख की ओर देखा, जिस पर क्षोभ के निशान हैं। बोली—'अभी शबनम के साथ बैठे किसी खास मसले पर बातचीत कर रहे हैं।'

—'उन्हें बुला तो !'

—'वे नहीं आयँगे, अम्मी। मुझे देखते ही उन्होंने कहा, रजिया, इस समय मैं बहुत ही जरूरी मशविरे में मशगूल हूं, तू तंग न कर !'

—'वहां और कोई तो नहीं है ?'

—'नहीं।'

—'तो मैं खुद जाऊँगी।'

—'तू जायगी !' —रजिया विस्मय और भय से अधीर हो उठी। बोली—'ऐसी गलती न करना ! अब्बा तुझे देखते ही आपे से बाहर हो जायेंगे। मुमकिन है, वहाँ कोई फौजी अफसर आ जाय ! भागे हुए सिपाही और अफसर एक-एक कर अभी वापिस ही आ रहे हैं...'

—'तू यहीं रह !' —रजिया की मा बोल उठी—'मैं अभी अभी वहाँ से लौट आऊँगी।...'

और, वह खीमे का परदा हटा, बैठकखाने की ओर चली।

बैठकखाने का परदा धीरे से उठा कर उसने भीतर की ओर देखा और पीछे हट गई।

शबनम अकबर की बगल में बैठी है और सामने तहव्वर खाँ।

रजिया की मा परदे से सटकर खड़ी हो गई और उत्सुकता नहीं दबा सकने के कारण भीतर का दृश्य एक सुराख से देखने लगी।

—'शाहजादे आलम राजपूतों ने हमें 'न घर का, न घाट का' वाली हालत में पहुंचा दिया।'

—'तहव्वर!' —अकबर के माथे पर चिंता की रेखायें गहरी हो गईं। बोला—'मेरे भाई आजम के कानों में जिस समय हमारी हार की खबर पहुँचेगी, उस समय खुशी में वह फूल उठेगा।'

—'और, बादशाह की क्या हालत होगी?' —तहव्वर की दृष्टि में प्रश्न।

—'खुदा कसम, खाँ!' —अकबर का चेहरा सफेद हो गया। बोला—'अब्बा का मुझे ख्याल ही नहीं रहा।···हाय, हमेशा के लिए मैंने तख्त खो दिया! अब तनिक आशा नहीं कि मैं कभी बादशाह कहलाऊँगा। तख्त का हकदार मुअज्जम या आजम ही होंगे।'

—'और कामबख्श को क्यों भूल जाते हैं, शाहजादे-आलम? वह तो कश्मीरी बेगम का प्यारा बेटा है। उसे ही तख्त मिले —इसके लिए कश्मीरी बेगम हाथ-पाँव हिलाने से बाज आयेंगी?'

—'नाउम्मीद क्यों होते हैं, हुजूर?'—शबनम के अधरों पर

कुटिलतापूर्ण मुस्कान खेल गई । बोली--'आप चाहेंगे तो तख्त आपका ही होगा ।'

—'मैंने भला कब उससे इन्कार किया ?'—अकबर ने लम्बी सांस ली ।

तहव्वर खाँ ने शबनम की ओर देखा और धीरे से बोला—'इनकी मंशा है, पचास हजार से ऊपर मुगल-फौज आपके आधीन है, आप दिल्ली पर हमला बोलकर तख्त पर कब्जा करें ।'

—'जी हाँ ! मेरी यह सलाह बुरी नहीं, अगर आप इनकी मदद दिल से करने के लिए तैयार हो जाँय ।' —शबनम ने आशा भरी नजरें तहव्वर खाँ के मुख पर डालीं ।

अकबर की लालसा जाग पड़ी । वह उत्सुकता से बोला–'खाँ ! तुम मेरा साथ दोगे ?

—'शाहजादे-आलम !' तहव्वर खाँ ने सहमते हुए कहा—'बादशाह सलामत के खिलाफ तलवार उठाना हँसी-खेल नहीं । आप एक बार फिर विचार करें ।

—'मैं फैसला कर चुका, खाँ ! तुम दिल से 'हाँ' कह दो !'

—'शाहजादे-आलम !…'

—'मेरे दोस्त !'—अकबर ने उसे आगे बोलने का मौका नहीं दिया । बोला—'बेशुमार फौज रहते हुए भी मुट्ठी भर राजपूतों से हमें बुरी तरह मुँह की खानी पड़ी । हमारे सिपाहियों को मतवाले हाथियों की तरह दुश्मनों ने रौंद डाला । भला इस हार को अब्बा चुपचाप सह लेंगे ? क्या उन्होंने तुम्हें सिपहसालार बनाते हुए कुछ नहीं कहा था ? याद है ? या भूल गये ?…'

—'याद है, हुजूर ।' —तहव्वर खाँ का मुँह उतर गया ।

—'क्या कहा था अब्बा ने ?'

—'उन्होंने फरमाया था',—तहव्वर खां बोला—'अगर राजपूतों पर तुम फतह का डंका बजाकर लौटे तो जागीर दूंगा और तुम्हारी बदकिस्मती से अगर तुम्हारे गले में हार की माला पड़ी तो मौत की सजा भुगतने के लिए तैयार रहना।…'

—'फिर भी तुम्हें यकीन है, अब्बा तुम्हें माफ कर देंगे ?'

अकबर मुस्कुरा उठा। उसकी मुस्कुराहट रहस्यपूर्ण।

—'शाहजादे-आलम ! बादशाह सलामत माफ करना जानते ही नहीं।'

—'तो मेरी किस्मत के साथ अपनी किस्मत को जोड़ना तुम्हें मंजूर है ?'—अकबर ने खाँ पर दृष्टि जमा दी—'अगर मुझे कामयाबी मिली तो मैं तुम्हें जागीर में कई सूबे दे दूंगा। सल्तनत तुम्हारी वजह मुझे हासिल होगी और मैं तुम्हारा अहसान सर पर रखूंगा।'

—'खाँ साहब !' —शबनम बोल उठी—'आप बहादुर हैं। किस्मत की नाव धार में छोड़िए ! खुदा आपकी मदद करेगा।'

—'मैंने तो हमेशा से शाहजादे-आलम का साथ दिया है'—तहव्वर खां उठा—'भला, अब उनका साथ क्यों छोड़ दूंगा ?'

—'शाबाश खां !'—अकबर उछल पड़ा और बोला—'अब मुझे तख्त लेने से कौन रोक सकेगा ?…'

—'हुजूर, मेरी एक सलाह है।'—तहव्वर खाँ गम्भीर हो उठा।

—'वह क्या ?'

—'अगर राजपूत आपकी मदद करने के लिए तैयार हो जांय !'

—'भला, वे क्यों मेरी इमदाद करेंगे ?'

अकबर की समझ में तहव्वर खाँ की बातें नहीं अंट सकीं।

—'जजिया की वजह से राजपूतों के दिमाग में बादशाह सलामत के खिलाफ फितूर जमा हो ही रहा था। मारवाड़ पर की चढ़ाई ने उनके क्रोध की आग में घी का काम किया। मेरा ख्याल है, अपने अब्बा के खिलाफ आपके बगावत का झंडा उठाते ही, वे आपके साथ, भूखे शेर की तरह, दिल्ली पर टूट पड़ेंगे और बादशाह आलमगीर को तख्त से उतार आपको तख्तनशीन करेंगे।...

तहव्वर खाँ चुप हो गया और अपने कथन की प्रतिक्रिया देखने लगा।

—'तुम ठीक कहते हो, खाँ!' —अकबर बोल उठा, मगर क्षण भर बाद ही उसके मस्तिष्क में संशय ने सर उठाया। उसने कहा—'अगर राजपूत दगा करें?'

—'राजपूत दगा करना नहीं जानते।' —तहव्वर खाँ बोला —'अगर वे कौल दे देंगे तो उससे फिरेंगे नहीं, यकीन रखें।'

'···उनको मिलाने में कौन कड़ी का काम करेगा?' —अकबर पूछ बैठा।

तहव्वर खाँ मौन हो गया।

—'चुप क्यों हो गए, खां?'

—'शाहजादे-आलम, यह सवाल कठिन है।'

—'मगर उसे हल तो करना ही है!'

'उसके लिए मुझे दूत की तलाश करनी पड़ेगी। ऐसे दूत की जो इस राज को पोशीदा रख सके।

'तुम खुद इसका जिम्मा ले लेते हैं!' —अकबर तहव्वर खाँ के मुख की ओर देखने लगा, उत्तर सुनने की उत्सुकता लिए हुए।

'शाहजादे-आलम!' तहव्वर खाँ का मुँह सफेद हो गया।

बोला—'दुर्गादास बड़ा ही काइयां हैं अगर उसे शुबहा हुआ तो मैं लौट नहीं सकूंगा। और मेरी गै हाजिरी '

अकबर हतोत्साह होने लगा। शबनम बोल उठी–'ठीक है, खाँ! आप फिक्र न करें। दुर्गादास को शाहजादे-आलम से मिला देने की जिम्मेदारी मैं लेती हूँ।'

उसके स्वर में उसका उत्साह बोल रहा है।

अकबर और तहव्वर, दोनों ही एक साथ चौंक उठे। वे दोनों विस्मय से शबनम का मुँह देखने लगे, जिस पर व्यंग्य की छाप नहीं बल्कि दृढ़ता विद्यमान है।

रजिया की मा दबे पाँव अपने खीमे की ओर लौट पड़ी।

●

—'कौन हो तुम ?'

—दुर्गादास की संदेहपूर्ण दृष्टि मुगल-बालक पर।

—'एक भिखारिन !...'

—मुगल बालक ने अगल-बगल दृष्टि दौड़ाई और वहाँ अन्य किसी को न पा संतोष की साँस ली।

—'भिखारिन !'—दुर्गादास चौंक उठे।

—'जी हाँ !'

—'तुम्हें देखते ही मुझे शुबहा हुआ...'–दुर्गादास क्षण भर मौन रहे। तत्पश्चात् उन्होंने मुँह खोला—'क्या चाहती हो ?'

भिखारिन ने दामन फैलाते हुए कहा–'भीख !'

—'तुम साधारण भिखारिन नहीं मालूम पड़ती। तुम्हारी माँग भी असाधारण होगी। तुम्हें क्या चाहिये ?'

—'आपकी मदद।'

—'मदद ! कैसी मदद ?'

—'बहादुर सरदार !'—भिखारिन गिड़गिड़ा उठी—'मेरी नैया मझधार से किनारे की ओर बढ़ रही है। आप उसे किनारे लगाने में मेरी मदद करें !'

—'नैया और मझधार ? मैंने कुछ भी नहीं समझा, भिखारिन ! तुम साफ-साफ बयान करो !'—दुर्गादास गंभीर हो उठे।

—'मैं चाहती हूँ, राजपूतों के सिर पर मड़राते लड़ाई के बादल टल जायँ !'—भिखारिन ने सूखे गले को तर करते हुए कहा—'आप अकबर को दिल्ली के तख्त पर बैठाने में मदद करें !'

दुर्गादास की आँखें चमक उठीं। बोले—'कौन हो तुम ? तुम्हें, अकबर के दिल्ली-तख्त पर बैठने से, भला कौन-सा लाभ होगा ?'

—'मैं अकबर की होने वाली बीवी हूँ, सरदार !'–भिखारिन ने कहा—'उनके बगैर में जिंदा नहीं रह सकती। उनका अहद है, जब तक दिल्ली के तख्त पर वे नहीं बैठेंगे तब तक मुझे मंजूर नहीं करेंगे !'

—'क्या नाम है तुम्हारा ?'

—'शबनम !'

—'किसी फरेब में फँसाने की औरङ्गजेबी चाल तो नहीं है यह ?'

दुर्गादास की तीक्ष्ण दृष्टि शबनम की आँखों में सचाई खोजने लगी।

—'खुदा गवाह है, बहादुर सरदार !'—शबनम धड़कते हृदय को सँभालते हुए बोली।

—'औरङ्गजेब ने छल, कपट के सहारे ही दिल्ली के तख्त

पर कब्जा जमाया है; इसलिए उससे होशियार रहना अनुचित नहीं, शबनम !'—दुर्गादास धीरे से बोले।

—'मैं अपनी ज़ान की बाजी लगाकर कहती हूँ, मैंने आपसे झूठ नहीं कहा।'—शबनम बोली—'अकबर की फौज दिल्ली की ओर बढ़ने के लिए तैयार है। आप उनकी मदद के लिए कमर कस लें तो कामयाबी अकबर के कदमों पर होगी।'

—'अकबर के विजयी होने से राजपूतों का भला क्या लाभ होगा ?'—दुर्गादास पूछ बैठे।

—'राजपूत चैन की साँस लेंगे, जजिया खत्म कर दिया जायगा, पहले की तरह हिंदू-मुसलमान सल्तनत की नजर में एक रहेंगे, औरङ्गजेब के दरबार की तरह अकबर का दरबार सिर्फ इस्लामी दरबार नहीं रहेगा....'

—'शबनम !'—दुर्गादास बीच में ही बोल उठे—'मुझे अकबर से मिला सकती हो ? हम राजपूत उसकी सहायता जरूर करेंगे !'

—'बहादुर सरदार !'—शबनम मन की प्रसन्नता दबाती हुई बोल उठी—'मैं उनसे आपकी मुलाकात कराने के लिए ही तो जान हथेली पर रखकर, आपके पास खाली झोली लिए, पहुँची।'

●

—'बेगम साहिबा !'

—उदासी में डूबी रजिया की मा ने सिर उठाया, । सामने रबेया है, जो उनकी उदासी के कारण आशङ्का से भरी है।

—'काश हमें मौत के मुँह में जाने से कोई रोक सकता, रबेया ?'—बेगम की आवाज निराशा में डूब रही।

—'क्या हुजूर के दुश्मनों की तबियत...'

—'नहीं रबेया !'—बेगम ने रबेया के मुँह की बात छीन कर कहा—'रजिया के अब्बा अपना कदम गलत रास्ते की ओर बढ़ाने जा रहे हैं।'

—'यह तो कोई परेशानी की बात नहीं।'—रबेया ने बेगम को आश्वासन देते हुए कहा—'आप उन्हें समझा दें, उनका रास्ता गलत है। मैं समझता हूँ, कोई इंसान ऐसा नहीं, जिसे अपनी गलतियों से प्यार हो।...'

—'वे अपनी अक्ल किसी गैर के हवाले कर चुके हैं। मेरी बातों का उन पर कोई असर अब नहीं होगा।'

—'आपका इशारा शबनम की ओर है ?'

—'और, शराब की ओर भी !'

—'फिर भी शाहजादे-आलम- आपके शौहर हैं।'—रबेया ने कहा—'उन्हें रास्ते पर लाना आपका फर्ज है। उनके गलत कदम का असर आप पर भी पड़े बगैर न रहेगा।'

—'मेरी अक्ल काम नहीं करती, रबेया ।'—बेगम मायूस होती हुई बोली–'तू ही कोई तदबीर कर ! आने वाली मुसीबत मुगल सल्तनत की बरबादी का भी बायस होगी।'

'....कैसी मुसीबत, बेगम साहिबा ?'–रबेया उत्सुक हो और आगे बढ़ आई।

—'और पास आ !...'—बेगम, सहमी निगाहें अगल-बगल डालती हुई बोली।

रबेया बेगम के पाँव के पास बैठ गई। उसकी उत्सुक दृष्टि बेगम के चेहरे पर। उसके कान बेगम का उत्तर सुनने के लिये लालायित ।

—'शबनम और तहव्वर ने रजिया के अब्बा के कान फूँक दिये हैं। वे अपने अब्बा के खिलाफ तलवार उठाने के लिये

तैयार हैं ।'...

—'क्या यह सच है, बेगम साहिबा ?'—रबेया के मुख से चीख निकल पड़ी।

बेगम ने उसके मुँह पर अंगुलियाँ रख दीं। सहमी आवाज में बोली—'आवाज पर काबू रखो, रबेया !'

—'बेगम साहिबा, जिस तरह हो, आप अपने शौहर के इस खौफनाक इरादे को बदलें।'

—'अब तो एक ही तदबीर है।'

—'वह क्या ?'

—'बादशाह के कानों में रजिया के अब्बा के बगावत की खबर पहुँच जाय।' –बेगम बोली–'मुमकिन है, वक्त के पहले खबर मिल जाने से, बादशाह रजिया के अब्बा को समझा-बुझाकर रास्ते पर ले आयें।....'

रबेया सोच में पड़ गई।

उसे चुप देख बेगम बोल उठी–'क्या सोच रही हो, रबेया ? यह तदबीर तुम्हें पसंद नहीं ?'

—'बेगम साहिबा ?'—रबेया नरम पड़ गई और बोली—

—'गुस्ताखी माफ हो, बादशाह सलामत माफ करना नहीं जानते। मुझे यकीन है, खबर मिलते ही शाहजादे-आलम के खिलाफ सल्तनत की पूरी ताकत लेकर वे मैदान में उतर पड़ेंगे। यह भी मुमकिन है, बगैर लड़ाई के शाहजादे आलम को कैदी बना लें। बादशाह सलामत से सब कुछ हो सकता है।...'

—'एक बात बतलाना मैं भूल गई, रबेया !'–बेगम बोली–'बागी राजपूत भी रजिया के अब्बा का साथ देंगे।'

रबेया चौंक उठी। उसके अधर पर अव्यक्त प्रसन्नता की झलक दीख पड़ी। बोली—'बेगम साहिबा ! तब तो मैं कहूँगी,

शाहजादे-आलम को जरूर कामयाबी मिलेगी। अगर आप चाहती हैं कि आपके शौहर दिल्ली के तख्त पर बैठें तो इस मौके पर आप खामोश रह जायँ।'

—'रबेया !....' बेगम साहिबा की आकृति कठोर हो गई।

—'गुस्ताजी माफ हो, बेगम साहिबा !'—रबेया ने बेगम के मनोभाव को समझ कर कहा—'बादशाह सलामत बूढ़े हुये। पके आम का क्या ठिकाना ! उनकी मौत के बाद तख्त के लिए चारों भाइयों में तलवारें खटक कर रहेंगी।...शाहजादे-आलम मौका देख, पहले ही तख्त पर कब्जा जमाना चाहते हैं तो बुरा नहीं करते। उनकी अक्लमन्दी को मैं तारीफ करती हूँ।'

—'मुझे फुसलाने की कोशिश मत कर !'—बेगम के माथे पर बल पड़ गये। बोली—'बादशाह सलामत इस्लाम के सच्चे हमदर्द हैं। मैं उनकी मर्जी के खिलाफ एक कदम भी चलना गुनाह समझती हूँ। तुम किसी तरह मेरा खत उनके पास पहुंचा....'

—'मैं हुजूर की बाँदी हूं।'—रबेया उदास होकर बोली—'आपके हुक्म पर जान तक कुर्बान कर सकती हूँ, मगर एक बार आप फिर सोच लें ! कामयाबी मिलने पर आपके शौहर बादशाह सलामत कह कर पुकारे जायँगे और आप हिंदुस्तान की मलका कहलायँगी।'

—'मैं अपने प्यारे मजहब के लिए सब कुछ कुर्बान कर सकती हूँ।'—बेगम ने कहा—'तू बादशाह सलामत के खिलाफ कुछ भी जुबान से निकाल कर गुनाह मत कर !....'

—'बेगम साहिबा !'

—'बस, चुप रह !'—बेगम खीझ उठी। बोली—'मैं एक शब्द नहीं सुनना चाहती। तू खुद बादशाह सलामत के पास जाने के

लिए तैयार हो जा !'...

रबेया मौन खड़ी रही।

—'क्या मेरा हुक्म टाल देगी ?'—बेगम प्यार और उलहना-भरे स्वर में बोल उठी—'क्या इस्लाम की खिदमत से मुँह चुरायेगी ? मेरी प्यारी रबेया, मैंने कभी अपना राज तुझसे नहीं छिपाया। तुझ पर अपनी छोटी बहन की तरह प्यार लुटाती रही। क्या मेरी मुहब्बत को भी ठुकरा देगी ...?'

—'लाइए, कहाँ है खत ?' रबेया ने हाथ फैला दिया !

—'मेरी अच्छी रबेया,'—बेगम प्रसन्नता से भर कर बोली—'खत बादशाह सलामत के सिवा और किसी के हाथ में पड़ने नहीं पाये, होशियार रहना !...'

बेगम ने सौ अशर्फियों के साथ एक पत्र रबेया को सौंप दिया।

●

बाँदी द्वारा अपने अब्बा का आदेश पा, आजम उसके शयन-कक्ष की ओर चला।

—'आजम ?'

आजम के उसके कमरे में प्रवेश करते ही, औरङ्गजेब बोल उठा—'अकबर आस्तीन का साँप निकला।...'

और उसने एक पत्र आजम की ओर बढ़ा दिया।

आजम ने पत्र खोला :

'बादशाह सलामत !

अकबर राजपूतों से मिल गये हैं। उनकी फौज जल्द ही दिल्ली का तख्त छीनने के लिये कूच करने वाली है। आप शाहजादे को समझा-बुझाकर, उन्हें बगावत की आग जलाने से रोकिये ! मेरी कोशिशें कमल के पात पर पानी की बूंदों के समान

साबित हुई ।'

आजम सोच में पड़ गया।

—'हमें जल्द कोई तदबीर करनी चाहिये, आजम !—औरङ्गजेब ने कहा—'अकबर की बेवकूफी ने हमारे रास्ते में खौफनाक काँटे बिखेर दिये।'

—'खत में भेजने वाले का नाम नहीं।'—आजम बोल उठा—'मुमकिन है, यह दुश्मनों की एक चाल हो !'

—'काश ! जैसा तुम सोचते हो, ऐसा ही होता !'—औरङ्ग-जेब ने लम्बी साँस ली। बोला—'मगर ऐसी बात नहीं। जिसने खत भेजा है, उस पर पूरा यकीन है।'

आजम हृदय में उत्सुकता और आँखों में प्रश्न लिये खड़ा रहा।

—'शायद तुम उसका नाम जानना चाहते हो!'—औरङ्गजेब ने कहा—'वह और कोई नहीं, अकबर की खुदापरस्त बीबी है। राज किसी पर जाहिर न हो, इसलिए उसने अपनी खास बाँदी के हाथ से यह खत भेजवाया है।'

—'जासूसों ने क्या खबर नहीं दी ?'

—'अचरज है, अभी तक किसी जासूस ने कोई खबर नहीं भेजी।'

—'तब किसी जासूस को अकबर की सेना में भेजना चाहिये।'

—'मैं भी यही सोच रहा हूँ।'—औरङ्गजेब के मुँह से निकला और दिलेर खाँ के आगमन की सूचना एक बाँदी ने दी।

औरङ्गजेब के आदेशानुसार दिलेर खाँ हाजिर हुआ। उसके चेहरे से परेशानी टपक रही है।

—'दिलेर, खैरियत तो है ?'—औरङ्गजेब पूछ बैठा।

—'जहाँपनाह !'—दिलेर खाँ ने कहा—'शाहजादे अकबर ने राजपूतों के साथ मिलकर बादशाही फौज पर हमला कर दिया है।'

औरङ्गजेब ने आजम के मुँह की ओर देखा और आजम ने उसकी ओर। दोनों ही सर पर अचानक टूट पड़ने वाली विपत्ति से हतबुद्धि हो गये।

—'शाहजादे अकबर की बागी फौज का जवाब हमारी फौज बड़ी बहादुरी से दे रही है।...' दिलेर खाँ ने मौन तोड़ा।

—'मेरे दोस्त दिलेर ?'-औरङ्गजेब के स्वर में स्नेह और प्रार्थना—

—'तुम मेरे सच्चे वफादार साथी हो। तहव्वर को सिपहसालार बनाकर मैंने तुम्हारे साथ इंसाफ नहीं किया। मुझे माफ करना !...'

—'मैं तो हुजूर का अदना गुलाम हूँ।'—दिलेर खां ने कहा —'अपनी आखिरी सांस तक वफादार ही रहूंगा।'

—'काश, दगाबाज तहव्वर को तुम गिरफ्तार कर सकते !' —औरंगजेब ने लम्बी सांस ली।

—'उसे जिंदा या मुर्दा आपके सामने जरूर हाजिर करूँगा, जहांपनाह !'—दिलेर आवेश में बोला—'उस नमकहराम को उसकी करनी का मजा जरूर चखाऊँगा।'

—'दिलेर ! उसका मांस कुत्तों से जब नुचवाऊँगा, तभी मेरी छाती की आग ठंडी होगी।'

—'इंशा अल्लाह, आपकी मंशा जरूर पूरी होगी।'-दिलेर-खां बोल उठा—'मुझे इजाजत दीजिए, उसे गिरफ्तार कर आपके सामने हाजिर करूँ !'

—'जाओ, मेरे बहादुर सिपहसालार !'—औरंगजेब की

वाणी उत्साहवर्द्धक—'कामयाबी तुम्हारे कदमों को चूमे !'

दिलेर उत्साहपूर्वक कक्ष से बाहर निकल पड़ा।

—'अब्बाजान !'—आजम बोल उठा।

औरंगजेब ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि डाली।

—'मेरी राय है, आप तहव्वर को लालच देकर अपनी ओर मिला लें !'.......

औरंगजेब की आँखें चमक उठीं। बोला–'तुम बड़े अक्लमंद हो, आजम ! मरते समय मैं दिल्ली का तख्त तुम्हें ही सौपूँगा। तहव्वर को अशर्फियों की चमक और मजहब का डर जरूर अकबर को दगा देने के लिए मजबूर करेंगे।'

—'एक और तदबीर बाकी रह गई।'—आजम ने कहा।

—'वह क्या ?'

—'आप एक खत अकबर के नाम लिखें, जिसमें राजपूतों को अपने जाल में फँसाने के लिए उसकी कामयाबी पर उसे मुबारकबाद दें और उसमें यह भी जिक्र रहे कि हमारी फौज लड़ते-लड़ते ही पीछे हटती जायगी और तुम मौका देख राजपूत-सरदारों का काम तमाम करवा देना !......'

—'शाबाश मेरे प्यारे बेटे !'—औरंगजेब खुशी से उछल पड़ा। बोला—'मैं ऐसा ही करूँगा।......'

—'मुझे यकीन है, हमारी इस चाल से दुश्मन मात हो जायँगे।'—आजम बोल उठा—'आपका खत अकबर के हाथों में न मिलकर किसी बहाने राजपूतों के हाथ पड़ जायगा। फिर तो राजपूत अकबर का साथ छोड़े बगैर न रहेंगे। इधर तहव्वर भी अशर्फियों की लालच में फौज के साथ हमसे आ मिलेगा।'

—'अगर ऐसा हुआ तो मजबूर हो अकबर को मेरे पास आना ही पड़ेगा।'

—'ऐसा ही होगा अब्बाजान ! मुझे यकीन है।'-आजम के स्वर में उसका आत्मविश्वास झाँक रहा है।

●

—'कौन ? शाहजादे आलम ?....'

दूत के वेष में आजम को देख तहव्वर खाँ विस्मय से भर गया।

—'तहव्वर खाँ ! मुझे तुम्हारी वफादरी पर यकीन है; इसलिए मैंने तुम्हारे खीमे में आने की हिम्मत की।'—आजम ने मोतियों की एक माला उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा—'यह लो, मेरी ओर से।'

तहव्वर ने माला लेकर, कहा—'खुदा के लिए शाहजादे-आलम, यहाँ से वापिस लौट जायँ ! किसी ने आपको पहचान लिया तो खैर नहीं।'

—'तुम्हारे रहते मेरा बाल भी बाँका न होगा-यह मैं जानता हूँ, तहव्वर !'

—'हुजूर !'......तहव्वर खाँ की घबड़ाहट बढ़ती जाती है।

—'थोड़ा वक्त दो, तहव्वर !'—आजम ने कहा—'उसके बाद मैं लौट जाऊँगा। अब्बा ने तुम्हें चालिस हजार मुहरें देने का फैसला किया है और मेरा अहद है, जब तख्त मेरे कब्जे में आ जायगा तब मैं पाँच सूबे तुम्हें बेधड़क सौंप दूँगा।...'

—'खुदाबंद !'-लालची तहव्वर पाँच सूबे मिलने की कल्पना से पुलकित हो उठा। बोला—'आपका हुक्म हो तो अकबर को कैद कर...'

आजम उसके मुँह की बात छीनकर बोल उठा—'अभी उसकी जरूरत नहीं। अब्बा के खिलाफ तलवार उठाना मैं गुनाह समझता हूँ। हाँ, उनकी मौत के बाद अगर मुअज़म, अकबर और

कामबख्श मेरे रास्ते में आयें तो उन्हें अलग करना तुम्हारा काम होगा। मगर ख्याल रहे, किसी हालत में पांच सूबे तुम्हें जरूर दूँगा।…'

—'बादशाह सलामत अपने बाद तख्त आपको सौंपने का फैसला कर चुके हैं ?'—तहव्वर पूछ बैठा।

—'बेशक !'—आजम उत्साह से भर उठा। उसने एक खत तहव्वर के हाथों में देकर कहा—'यह खत पढ़ो,'

तहव्वर खाँ की उत्सुक दृष्टि पत्र की पंक्तियों पर दौड़ने लगी।

'तहव्वर खां,

मुझे बड़ा सदमा पहुंचा है कि तुम उस अकबर का साथ दे रहे हो, जो बागी ही नहीं, बल्कि काफिरों का दोस्त भी है। तुम जानते हो, मैंने अपने लिए तख्त पर कब्जा नहीं जमाया, बल्कि इस्लाम की तरक्की के लिए यह गुनाह किया और, क्या तुम इस्लाम की तरक्की में रुकावटें डालना पसंद करते हो ? क्या तुम यह चाहते हो कि दरबार में पहले की तरह, इस्लामी उसूलों के खिलाफ, दशहरा, दिवाली और शिवरात्रि के जलसे मनाये जायँ ? अकबर अगर कामयाब हुआ तो वह राजपूतों के इशारे पर ही तो नाचेगा ! उस समय तुम सिपहसालार न रहोगे, बल्कि तुम्हारी जगह राठौर दुर्गादास ले लेगा।

मैं अब भी तुम्हें माफ करने के लिए तैयार हूँ, अगर तुम अपने प्यारे मजहब इस्लाम के नाम पर बादशाही फौज के खिलाफ लोहा लेने से मुँह मोड़ लोगे।

—आलमगीर

—'वाकई मैं गुनाह की ओर कदम बढ़ा रहा था।'—तहव्वर बोल उठा—'मैं बादशाह सलामत के कदमों में गिर कर अपने

गुनाहों के लिए माफी मागूँगा।'

—'तहव्वर खाँ !'—आजम बोला—'तुम्हें यह खत किसी बहाने दुर्गादास के पास पहुँचाना होगा।...' उसने एक खत निकाला।

—'दुर्गादास तो राजसिंह की बीमारी की खबर सुन मेवाड़ की ओर गया है।'

—'तब तो बहुत अच्छा मौका है।'—आजम ने कहा—'एक वही ऐसा है जिसमें हमारी चालों को समझने की अक्ल है। अब तो हम जरूर कामयाब होंगे।'

—'मगर यह कैसा खत है, हुजूर ?'

—'खाँ ! अब्बा ने इस खत में ऐसी बातें लिखी हैं, जिसे पढ़कर राजपूत समझेंगे कि अकबर उन्हें धोखा दे रहा है और वाकई वह औरङ्गजेब के हाथ की कठपुतली भर है।'

—'बहुत खूब !'—तहव्वर उछल पड़ा। और बोला—'बड़े अक्लमन्द हैं बादशाह आलमगीर !......'

●

—'शबनम !'—अकबर ने नशे में झूमते हुए कहा—'एक प्याला और !'

प्याले में शराब उड़ेल, शबनम ने उसे अकबर के हाथ में थमा दिया।

—'जिंदगी की काली रातें खतम हो गईं, शबनम ! अब सुबह का सूरज अपनी सुनहली किरणों से हमें नहला रहा है।'

—'अभी रात बाकी है, हुजूर !'

—'तुमने मेरा मतलब नहीं समझा, शबनम !'

—'मुझे ऐसी ना समझ न समझें, गरीब-परवर !'

—'शबनम !'—अकबर मुस्कुरा पड़ा—'क्या हम बादशाह

नहीं हैं ?'

—'जी नहीं !'

—'क्या बकती हो ?'—अकबर के माथे पर बल पड़ गये। —'राजपूत मुझे अपना बादशाह नहीं मान रहे हैं क्या ? सभी मुझे 'बादशाह सलामत' कह कर सलाम करते हैं—क्या यह झूठ है ?...'

—'मगर अभी तक लड़ाई ने आपके गले में जीत की माला नहीं डाली। फिर मैं ...'

अकबर उसके मुँह की बात छीन कर बोल उठा—'शबनम ! क्या दुर्गादास और तहव्वर जैसे मददगारों के रहते तुम्हें फतह में शुबहा है ?'

—'जी हाँ !'

—'वह क्यों ?'—अकबर ने तेवर बदल कर कहा।

शबनम ने उसे शांत करना आवश्यक समझा और बोल उठी —'इसलिए कि दिल्ली दूर है।' और, वह खिलखिला उठी।

—'ओह, मेरी प्यारी शबनम !'—अकबर ने खुश होकर कहा—'तुम हिन्दुस्तान की मलक-ए-आलम हो !'

—'और, आप बादशाह सलामत !'

शबनम उसे तिरछी नजरों से देख मुस्कुरा उठी।

—'खुदा कसम, तुम बड़ी नेक हो, शबनम !'

—'शबनम नहीं, मलक-ए-आलम कहिये, बादशाह सलामत !'

—'बहुत खूब, मेरी मलके !'

—'एक बात पूछूँ ?'

—'हजार सवाल करो, मेरी जान !'

—'तख्त पाकर आप मुझे भूल तो न जायँगे !'

—'होश में तो हो ?' —अकबर उसकी ओर विस्मय-भरी नजरों से देखने लगा।

—'जी हाँ !'

'नहीं, अभी तुम्हारे होश तुमसे दग़ा कर रहे हैं।'—अकबर ने कहा—'एक प्याला और ले लो; फिर देखोगी, वह किस तरह तुम्हारी मदद करता है !'

—और, अकबर ने प्याले में शराब उड़ेल शबनम के अधर से सटा दिया। शबनम ने मुस्कुरा कर शराब गले के नीचे उतार दी।

—'बादशाह सलामत !'—शबनम के मुँह से निकला।

—'वाह, क्या कहने हैं !'–अकबर झूम उठा। बोला–'अब होश ठिकाने आये !'

शबनम पर भी नशे ने प्रभाव जमाया। बोली—'सच बताइये, आप मुझे प्यार करते हैं ?'

—'इसमें भी कोई शक है ?'

—'आपके दादा शाहजहाँ जिस तरह मुमताजमहल को प्यार करते थे, उसी तरह ?'

—'बल्कि उससे भी बढ़कर।'

—'सबूत ?'

—'सबूत मैं दूँगा।'

—'क्या मेरी मौत के बाद ?'

—'नहीं, ज़िंदा रहते ही।'

—'वह सबूत कैसा होगा ?'–शनबम उत्सुकता से भर गई।

—'वह ताजमहल से भी खूबसूरत होगा।'—अकबर ने प्यार की वर्षा करते हुये कहा—'मेरे दादा ने 'ताजमहल' बनवाने में सिर्फ तीस करोड़ खर्च किये पर मैं अपनी मुहब्बत की

यादगार के बनवाने में साठ करोड़ लुटा दूँगा और उसका नाम होगा 'शबनम-महल'।'

—'नहीं; नहीं; मैं रिआये के पसीने की कमाई को यों बरबाद करने की सलाह न दूँगी। आप अपनी मुहब्बत का सबूत देना ही चाहते हैं तो हमारी एक बात मान लें !...'

—'मैं तो तुम्हारी सौ बातें मानने के लिए तैयार हूँ।'

—'मेरी एक ही अर्ज है।'

—'तो जल्द कहो !'

—'इन्कार तो नहीं करेंगे ?'

—'तुम मेरी जान माँग लो, मैं मुँह से उफ न निकालूँगा।'

—'लाहौल बला, मुझे आपकी जान अपनी जिंदगी से भी अधिक प्यारी है।'

—'फिर क्या चाहिए ?'

—'आप शराब को जहर समझें।'

—'यह क्या फरमाया, मलक ए-आलम, तुमने ?'–अकबर खिलखिला उठा। बोला—'आबे-हयात को जहर समझ लूँ ? दिन को रात मान लूँ ? जिंदगी को मौत मानने की भूल करूँ ?'

—'बादशाह सलामत !' —शबनम का गला भर आया।

—'तू रूठ गई ? पगली कहीं की !...'

अकबर ने शबनम के गुलाबी कपोल पर प्यार की एक हलकी चपत लगा दी।

—'मैं जान गई, आप मुझसे कैसी मुहब्बत करते हैं !'–शबनम सिसकती हुई बोली।

—'मेरी मलके !' अकबर ने प्यार और उलाहना-भरे स्वर में कहा—'फिर तू क्यों शराब से प्यार करती है ?'

—'मैं कहाँ उसे प्यार करती हूँ !' —शबनम तुनक कर बोली

—'आप उसे ओठों से लगाते हैं; इसलिए मैं भी गले के नीचे जगह देती हूँ।'

—'अगर मैं तुम्हारी बात मान उसे ज़हर समझूँ ?'

—'तो मैं उसे अलग से ही सलाम करूँगो।'

—'मगर जिंदगी के प्याले में ताजगी बख्शने वाली को मैं जहर क्यों समझ लूँ ?'

–'इसलिए कि ऐसी नाजुक हालत में, जब कि जिंदगी की नाव मौत के साये में जा रही हो, आपका गाफिल रहना बहुत बुरा नतीजा सामने ला सकता है।'

—'तुम मुझे गाफिल समझती हो तो यह तुम्हारी भूल है।' --अकबर ने झूमते हुए कहा—'बढ़ाओ प्याले ! आज हम उस समय तक पीते रहें, जिस समय तक यह लालपरी (!) हमें सपनों की दुनिया में न पहुंचा दे।'

शबनम आँखें तरेर उसे घूरने लगी।

—'खुदा कसम ! इस समय तुम बड़ी ही भली लग रही हो।'

एक बाँदी ने कक्ष में प्रवेश किया। झुक-झुक कर सलाम करने के बाद वह बोली—'जहाँपनाह ! एक अफसर आपसे मिलना चाहते हैं।'

—'इस वक्त मैं खुदा से भी नहीं मिल सकता।....' –अकबर का तोखा उत्तर।

बाँदी सलाम कर लौट गई। अकबर ने शबनम की काली जुल्फों को उसके गोरे चेहरे से हटाते हुए कहा—'आज खुशी से गुजरना है तो उसे गुजरने क्यों न दूँ ? कल की फिक्र भी भला क्या फिक्र !'

तभी बाँदी घबड़ाई हुई लौट आई। बोली—'गुस्ताखी माफ

हो, बादशाह सलामत ! राजपूत-फौज आपका साथ छोड़ वापिस चली गई ।'

—'चली गई तो जाने दे ।' —अकबर लापरवाही से बोला —'मेरी शबनम तो मुझे छोड़कर नहीं गई। बस, मुझे कोई फिक्र नहीं । मेरी जान से भी अजीज शबनम मेरे पास है तो दुनिया की सारी खुशियाँ मेरे कदमों के पास हैं। क्यों शबनम ?'

बाँदी खिन्न मन लौट गई ।

शबनम के चेहरे पर भी चिंता के बादल छा गए।

—'किस फिक्र में पड़ गई, शबनम ?' —अकबर की नशे में लड़खड़ाती आवाज —'अपने गोरे हाथों से शराब का प्याला बढ़ा ।'

शबनम के गोरे हाथ प्याले में शराब ढालने लगे मगर उसका मन भावी आशंका से चंचल हो अँधेरे में राह खोजने लगा।

●

रात की जवानी उतार पर है । घोड़ों की हिनहिनाहट खामोशी के परदे को चीर हवा में तैर रही है ।

अकबर के शयन-कक्ष में दबे पांव तहव्वर ने प्रवेश किया ! रेशमी चादर से मुँह ढाँक अकबर (!) नींद में बेखबर है।

तहव्वर के हाथ में नंगी तलवार चमकी और उसके बाद एक हलकी चीख के बाद अकबर शांत हो गया। तहव्वर की तलवार ने उसके जिस्म के दो टुकड़े कर दिए।....

...रजिया की मा बुरे स्वप्न से चौंक उठी। उसने पास ही लेटी नींद में बेखबर रजिया को झकझोर कर जगाया।

रजिया घबड़ाकर उठ बैठी।

—'तुम्हारे अब्बा...' रजिया की मा का स्वर अवरुद्ध हो गया ।

—'अम्मीजान ! अब्बा को क्या हो गया है !'

—'कुछ नहीं रजिया,' —उसकी मा संभलकर बोली—'तू सो रह, मैं बुरे सपने से घबड़ा उठी थी ।'

मा ने बेटी को पुचकार कर लेटा दिया और स्वयं अपने पति के कक्ष की ओर चली ।

परदा उठाते ही उसकी दृष्टि अकबर के बिस्तर से टपकते लहू पर पड़ी । वह चीख उठी—'मेरे आका !'

लपकती हुई बिस्तर के पास पहुँची ! उसकी भयपूर्ण दृष्टि अकबर के शरीर के टुकड़ों पर । कमर के पास तलवार ने शरीर के हिस्से को दो भागों में बाँट दिया । मुँह और पांव रेशमी चादर से ज्यों का त्यों ढके हुए ।

'—या खुदा, यह तूने क्या किया ? अब मैं किसके सहारे जिंदा रहूंगी ?'—रजिया की मा के नेत्रों से आंसू झर २-कर गिरने लगे। उसकी दृष्टि अपनी अंगुली की अंगूठी पर पड़ी जिसमें हीरे का नग है । उसने अंगूठी मुँह में डाल ली ।....

रजिया उससे लिपट पड़ी—'अम्मी ! मेरी प्यारी अम्मी !'

वह अपनी मा की चीख सुन सब्र न रख सकी ।

एक बाँदी के कानों में रजिया की करुणा और व्याकुलता में डूबी आवाज पड़ी । वह आशंका से भरी अकबर के शयन कक्ष में पहुँची । उसे देखते ही रजिया की रुलाई फूट पड़ी । बोली—'अल्लामा ! अब्बा को किसी जालिम ने कत्ल कर दिया । अम्मी हीरे की अंगूठी चाट मौत के मुँह में समा गई। अब दुनिया में मेरा कोई सहारा नहीं रहा ।...'

अल्लामा ने लपक कर रजिया की मा की परीक्षा की । उसकी सांस बंद हो चुकी है । उसने अफसोस-भरी नजरें अकबर के बदन के टुकड़ों पर डाली और चौंक पड़ी ।

आगे बढ़कर उसने लाश के मुँह पर से चादर हटाई और बोल उठी—'शाहजादी साहिबा, यह तो आपके अब्बा की लाश नहीं है।'

रजिया विस्मय से भर गई। उसकी रुलाई क्षण भर के लिए रुक गई। उसने विस्फारित नजरों से देखा, जिसे वह अब्बा समझ रही थी, वह शबनम है।

कुछ देर मौन खड़ी रहने के बाद उसने प्रश्न किया—'फिर अब्बा कहाँ हैं, अल्लामा ?'

●

अकबर की खोज में निकली व्याकुल अल्लामा के कानों में उसकी आवाज सुनाई पड़ी। वह पुकार रहा है—'कोई है ?...'

अल्लामा उधर बढ़ी।...

वह शबनम का शयनागार है।

अकबर बिस्तरे पर पड़े-पड़े पुनः चिल्ला उठा—'कई बार आवाजें दे चुका, मगर कोई हाजिर न हुआ। सब को कत्ल करवा दूँगा।'

—'शाहजादे-आलम !'.... अल्लामा ने झुक कर सलाम किया।

अकबर आगबबूला हो उठा। डपट कर कहा—'खबरदार जो फिर से शाहजादे-आलम का लफ्ज जुबान पर लाया। मैं बादशाह हूँ। सभी मुझे जहांपनाह कहते हैं।...'

—'गुस्ताखी माफ हो।' अल्लामा के सँभल कर कहा–'हुजूर के सिर पर गम के काले बादल छा रहे हैं।...'

—'अल्लामा !' वह अंगारों पर लोटने लगा—'तू होश में तो है ?'

—'जी हां हुजूर।' अल्लामा बोल उठी—'आप होश सँभा-

लिए ! आपकी फौज आपका साथ छोड़ चली गई।'

अकबर के शरीर पर जैसे किसी ने साँप फेंक दिया। उसकी खुमारी भागती नजर आई। उसने विस्मय और भय से आतंकित हो प्रश्न किया—'हमारी फौज कहाँ चली गई ?'

—'शायद बादशाही फौज के साये में।'

—'तहव्वर कहाँ है ?'

—'वे बादशाह से मिल गए —ऐसा लगता है।'

—'अरे !' अकबर उठ खड़ा हुआ। विस्मय से खीमे के इधर-उधर दृष्टि दौड़ाता हुआ बोला—'मैं शबनम के खीमे में कैसे चला आया ?'···

अल्लामा मौन रही।···

अकबर व्यग्रता का आँचल पकड़े खीमे से बाहर निकला। दो-चार खीमों के अतिरिक्त वहां मैदान ही दीख पड़ा।

—'शबनम कहाँ है ?' —अकबर पूछ बैठा।

—'अब वह हुजूर से नहीं मिल सकती। वह बहुत दूर चली गई।'

-- 'दगा !' अकबर पश्चाताप, दुःख और क्षोभ से भरा बोल उठा—'अल्लामा, तहव्वर ने मुझसे दगा किया। शबनम नागिन निकली। वह नशे की हालत में मुझे छोड़ तहव्वर के साथ भाग गई। आखिर तवायफ थी न।'···

—'हुजूर ! शबनम बेगम ने अपनी कुर्बानी देकर आपकी जान बचाई।'—अल्लामा गम्भीर हो उठी। बोली—'आपको यकीन न आये तो अपने खीमे में तशरीफ ले चलें जहां उसके जिस्म के टुकड़े वफादारी की गवाही दे रहे हैं।'····

और, कुछ देर बाद ही अकबर अपनी प्यारी शबनम की लाश पर श्रद्धा और प्रेम के आँसू लुटाने लगा।

●

—'शाहजादे-आलम ! आपकी कामयाबी, पर मुबारकबादी।'

—'तूफान शांत हो गया, तहव्वर ?'—उत्सुक आजम पूछ बैठा।

—'उसे हमेशा के लिए ठण्डा कर दिया।'

—'अकबर और उसके बाल-बच्चे ?'

—'बाल-बच्चों को उनकी किस्मत के भरोसे छोड़ दिया।…'

—'और अकबर ?'—आजम की उत्सुकता बढ़ चली।

—'जशन मनाइए, शाहजादे-आलम !'—तहव्वर उत्साह से भरा, बोल उठा—'मैंने उन्हें हमेशा के लिए आपके रास्ते से दूर कर दिया।'

—'क्या मतलब है तुम्हारा ?'…

—'मैंने उन्हें कत्ल कर दिया हुजूर ?'

—'तहव्वर !'—आजम सिहर उठा। भाई की मुहब्बत ने उसकी आँखों में आँसू ले आये।

—'शाहजादे आलम !'—तहव्वर आशङ्का से भर गया। बोला—'क्या आपने मुझे पाँच सूबे देने का वादा नहीं किया ? राह के काँटों को रास्ते से हटाये बगैर आप कैसे तख्त पायँगे ?'

—'फौज कहाँ है ?'—आजम सँभल गया।

—'वह पहुँचना ही चाहती है, हुजूर !'—तहव्वर ने कहा—'मैं आपको खुशखबरी सुनाने पहुँच गया।'

—'तुम यहीं बैठकर, मेरा इन्तजार करो, तहव्वर !'—आजम का गंभीर स्वर—'मैं अब्बाजान से मिल तुम्हें इनाम दिलाने का इन्तजाम करदूँ।'

और, तहव्वर के उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर आजम कक्ष से बाहर निकल गया।

उसे अधिक देर तक वहाँ बैठना नहीं पड़ा। कुछ देर पश्चात्

ही एक फौजी अफसर कुछ सिपाहियों के साथ वहाँ आ पहुँचा।

—'खाँ साहब, तशरीफ ले चलें !'—अफसर ने फरमाया।

—'कहाँ ?' तहव्वर पूछ बैठा।

—बादशाह सलामत के मेहमानखाने में।' अफसर के अधरों पर हलकी मुस्कान झलक कर लोप हो गई। तहव्वर खाँ कक्ष से बाहर निकला।

अफसर ने कहा—'तलवार मेरे हवाले करदें, खाँ साहब !'

तहव्वर का माथा ठनका। उसी समय फौज की एक छोटी टुकड़ी ने उसे अपने घेरे में ले लिया।

—'होश में तो हो ?'—तहव्वर चिढ़ कर बोला।

—'जी हाँ, मैं आपकी तरह बेहोश नहीं।'—अफसर का व्यङ्गात्मक स्वर—'बढ़ाइए तलवार !'...

तहव्वर परिस्थिति समझ गया। पश्चाताप और क्रोध से वह अधीर हो उठा। उसने म्यान से तलवार खींच कर अचानक अफसर पर प्रहार किया।

अफसर सँभल भी नहीं पाया कि उसकी लाश धरती पर तड़पने लगी। फिर तो लड़ाई का दृश्य उपस्थित हो गया।

—'कहाँ हैं दगाबाज आजम और औरङ्गजेब ? आज उनके खून से अपनी तलवार की प्यास बुझाऊँगा !'...

फौजी टुकड़ी पर विजयी तहव्वर उन्मत्त हाथी की तरह औरङ्गजेब के आरामगाह की ओर बढ़ा जा रहा है।

—'नमकहराम ! पहले मेरी तलवार की प्यास बुझाने दे; उसके बाद आगे कदम बढ़ाना !'—दिलेर नङ्गी तलवार लिए तहव्वर के सामने।

दिलेर को देखते ही तहव्वर के क्रोध की आग में घी पड़ गया। वह भूखे शेर की तरह दिलेर पर टूट पड़ा।

दोनों वीर तलवार-युद्ध की जौहर दिखलाने लगे।

—'शाबाश दिलेर ! दोजखी कुत्ता तुम्हारी तलवार से बचने न पाये।'—औरङ्गजेब की आवाज। सूचना मिलते ही तमंचा लिए आजम के साथ वह घटनास्थल पर आ पहुँचा।

तहव्वर की आग बरसाती आँखों ने औरंगजेव पर नफरत की वर्षा की। उसके मुँह से निकला—'मक्कार !'....

और, दिलेर की तलवार ने उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया।

●

'राठौर सिपहसालार, आप फिर एक बार गौर करें और तब अपना फैसला दें। मुझे बेसहारा करने के लिए बादशाह ने एक चाल चली थी। मुझे सख्त अफसोस है कि बहादुर राजपूत बादशाह के बिछाये जाल में फँस गए और उन्होंने मुझे राह की धूल फाँकने के लिए छोड़ दिया।'—अकबर की आवाज करुणा से भीगी।

—'शाहजादे आलम ! मुझे आपकी हालत से सख्त अफसोस है।'—दुर्गादास ने कहा—'लेकिन मैं लाचार हूँ। हमारे राजपूत सरदारों का आदेश है कि मैं आपसे कोई सम्बन्ध न रखूँ।'

—'दुर्गादास ! मैं अँधेरे में भटकते राही के समान हूँ। मैं तूफान का तिनका हूँ। मुझे पनाह दो ! खुदा तुम्हारा भला करेगा !'

दुर्गादास मौन खड़े रहे।

—'मुझे ठुकरा कर, मेरी जिंदगी का चिराग मत बुझाओ !'

—अकबर गिड़गिड़ा उठा—'तुम जानते हो, यहाँ से मायूस हो लौटने पर बादशाही फौज मुझे कैद कर लेगी और उसके बाद बादशाही हुक्म मेरा काम तमाम कर देगा।'

—'राजपूत-सरदारों के मन के खिलाफ कदम उठाने में भी तो कुशल नहीं दीखता।'—दुर्गादास बोले—'राजसिंह आज जीवित होते तो……'

—'राजसिंह की मौत से मुझे भी अफसोस है, दुर्गादास!' अकबर ने कहा—'मुझे यदि यह पता होता कि राजसिंह की मौत के बाद राजस्थान में ऐसी ताकत न रह जायगी, जो आलमगीर की टेढ़ी नजर बर्दाश्त कर सके तो मैं पनाह के लिए यहाँ नहीं आता…'

—'शाहजादे-आलम!'

—'मैं कुछ नहीं सुनना चाहता, दुर्गादास।'—अकबर ने मुँह की बात छीन ली। बोला—'मुझे जवाब दो, एक ऐसे आदमी के परिवार को पनाह देना, जो मौत के साये में हो, तुम्हारी बहादुरी और नेकनीयती इजाजत नहीं देती?'

दुर्गादास विचलित हुए। अकबर ने कहा—'अगर तुम्हें यकीन हो कि तुमसे दगा नहीं कर सकता और मैंने जो कुछ बयान किया है, वह सच है तो मुझे पनाह दे सकते हो?'

—'शाहजादे-आलम!'—दुर्गादास गम्भीर हो उठे। बोले—'ऐसी नाजुक हालत में, जब मुगल सल्तनत की निगाह राजपूताने पर आग बरसा रही हो, कलह और फूट का बीज बोना लाभदायक नहीं होगा—यही सोच मैं चुप था। मगर आपने मेरी बहादुरी और नेकनीयती को चुनौती दी है इसलिए मैं अपने प्राण देकर भी आपकी जान की हिफ़ाजत करूँगा।'

—'ओह! तुम कितने नेक हो, दुर्गादास!'—अकबर की आँखों से हर्ष के आंसू निकल पड़े। बोला—'तुम्हारा अहसान मेरी जिन्दगी हमेशा ढोती रहेगी।'

—'मैंने कोई अहसान नहीं किया, शाहजादे!'—दुर्गादास

बोल उठे—'मैंने तो अपना फर्ज पूरा किया है। वास्तव में मैं आपका चिर-ऋणी रहूँगा। इसलिए कि आपने मेरी आँखों से अज्ञान का परदा हटाया है। अगर आप निराश हो लौट जाते तो हमेशा के लिए मेरे माथे पर कलङ्क का टीका लग जाता।'

●

—'आजम ! तहव्वर खाँ धोखा खा गया।'—औरंगजेब ने कहा—'अभी-अभी मुझे खबर मिली है, अकबर दुर्गादास की पनाह में है।'

—'यह तो बहुत बुरी खबर है, अब्बाजान !'—आजम के कान खड़े हो गये।

—'जिस तरह हो, हमें अकबर को गिरफ्तार करना है।' औरंगजेब बोला—'उसके आजाद रहने से बागियों को सहारा मिलेगा।'

—'बेहतर होगा, अगर आप अकबर के पास किसी गोइंदे से यह खबर भेजें—अगर वह आपके कदमों पर गिरकर अपने गुनाहों के लिए माफी मांगे तो आप उसे माफ कर देंगे।'

आजम की प्रश्नभरी दृष्टि औरंगजेब के मुख पर जमी रही।

—'तुम्हारा ख्याल गलत है, आजम !'—औरंगजेब बोल उठा—'अकबर पर हमारे खत का कोई असर न होगा। और, मैं उसे माफ करने के लिए तैयार भी नहीं। बागियों के लिए मेरे पास रहम नाम की कोई चीज नहीं।'

—'फिर अकबर पर आप किस तरह कब्जा करेंगे ?'

—'लड़ाई से।'—औरंगजेब ने उत्तर दिया—'मैं जल्द ही मुअज्जम की देख-रेख में भारी फौज भेजूँगा।'

●

आजम मौन हो गया।

'राठौर सरदार, राजपूत तुम्हें नफरत-भरी नजरों से देखें, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे रुख्सत दो।'...अकबर की वाणी में उसके मन की पीड़ा झलक पड़ी।

—'दुर्गादास सब कुछ न्योछावर कर भी आपकी हिफाजत करेगा, आप घबड़ायें नहीं, शाहजादे !'—दुर्गादास का गंभीर स्वर जिसमें उसका आत्मविश्वास झांक रहा है।

—'मुझे यकीन है तुम पर।'—अकबर ने कहा—'मगर मेरे लिए तुम राजपूतों की निगाह से गिर जाओ, यह क्या मुनासिब होगा ?'

—'एक दिन राजपूतों की आँखें खुलेंगी, शाहजादे !'—दुर्गादास बोले—'और वे अपनी गलतफहमी के लिए दुःख प्रगट करेंगे।'

—'अच्छा होता, तुम मुझे दूर चले जाने की इजाजत देते।' अकबर ने कहा—'मेरे अब्बा मुझे कैद करने के लिए बेहाल होंगे। मुमकिन है, वे भारी सेना के साथ फिर मारवाड़ पर चढ़ाई करें।'

—'आपके अब्बा ने शाहजादे मुअज्जम के अधीन सेनायें रवाना कर दी हैं। चारों ओर आपकी गिरफ्तारी के लिए जासूसों का जाल बिछाया जा चुका है। ऐसी हालत में आपका कहीं जाना कितना भयानक होगा, यह आप स्वयं सोच सकते हैं।'

—'दुर्गादास, मेरा यहां ठहरना खतरे से खाली नहीं।'—अकबर के चेहरे पर व्यग्रता छा गई। बोला—'मुमकिन है, झगड़ा मिटाने के लिए अच्छी शर्तें पाकर राजपूत मुझे अब्बा के सुपुर्द कर दें। आलमगीर की चाल से तुम नावाकिफ नहीं।'

—'राजपूत ऐसा न करेंगे।'—दुर्गादास के मुँह से निकल पड़ा मगर माथे पर चिंता की रेखायें उभर आयीं।

— अब तुमसे कुछ छिपाना बेकार है।'–अकबर ने कहा—'मैंने कुछ देर पहले दो राजपूत-सरदारों की बातचीत सुनी। उससे पता चला, वे मुझे फूटी आँखों नहीं देखना चाहते। तुम पर उन्हें शक है कि तुम काफी दौलत पाकर ही मेरी मदद कर रहे हो।'....

—'मुझे सब कुछ मालूम है, शाहजादे!'

—'फिर भी मेरा यहाँ रहना तुम्हें पसंद है ?'–अकबर की विस्मय-भरी वाणी में उलहना छिपा है।

—'जी हाँ!'

—'इसकी वजह ?'

—'आपके लिए अगर हिंदुस्तान में कोई निरापद स्थान है तो वह मारवाड़ ही है।'—दुर्गादास की आकृति पर गर्व झाँकने लगा।

—'और मराठावीर शिवाजी का साया ?'

अकबर के प्रश्न ने दुर्गादास को चौंका दिया। उसने सँभल कर कहा—'शिवाजी अब इस दुनियाँ में नहीं रहे!'

—'अफसोस!'...अकबर का चेहरा निराशा से सफेद हो गया।

—'अफसोस न करें, शाहजादे!' दुर्गादास बोल उठे—'शिवाजी से उनके लड़के शंभाजी अधिक साहसी और बहादुर हैं।'

—'मगर उसे तो शिवाजी ने पन्हाले में कैद कर रखा था!'......

—'जी हाँ।'—दुर्गादास ने कहा—'और वे शिवाजी की मृत्यु के बाद तक कैद में ही थे।'

—'तो उसे गद्दी कैसे मिली ?'—अकबर की उत्सुकता बढ़ गई।

—'शाहजादे, उसकी लम्बी कहानी है।'

—'मुझे बड़ी खुशी होगी, अगर शंभाजी के बारे में मुझे उतनी जानकारी करा दोगे जितनी तुम्हें मालूम है।'—अकबर के स्वर में अनुरोध भी।

—'शिवाजी की पहली पत्नी का नाम 'सई बाई' था। शंभा जी उसीके पुत्र हैं।'—दुर्गादास ने कहा—'दूसरी पत्नी सोयरा बाई से राजाराम नामक एक और पुत्र है। सोयरा बाई ने शिवाजी की मृत्यु के बाद राजाराम को गद्दी पर बैठाया, मगर शंभाजी ने, अपनी बुद्धिमानी से आजाद हो, उसे कैद कर लिया और उसकी मा सोयरा बाई को दीवार में चुनवा कर मौत के मुँह में पहुँचा दिया।……'

—'बड़ा बेरहम है।'—अकबर सिहर उठा। सँभलकर, बोला—'बादशाह आलमगीर की ओर उसका कैसा ख्याल है ?'

—'सचमुच वे अपने पिता से भी अधिक कठोर हैं।'—दुर्गादास ने कहा—'आलमगीर उनकी आँखों में शूल की तरह खटकते हैं।'

—'बस, मुझे उनके पास ही पहुँचा दो !'

—'उनके पास पहुँचना जितना आप आसान समझते हैं, वास्तव में वह वैसा नहीं है, शाहजादे !'—दुर्गादास ने कहा—'चतुर बादशाह आलमगीर जानते होंगे कि राजपुताने से निकलकर आप किधर जायँगे ! हमें राह में बादशाही फौज का मुकाबला करना ही पड़ेगा।'

—'तुम्हें बादशाही फौज से डर लगता है ?'

—'मैं मौत से भी नहीं डरता, शाहजादे !'—दुर्गादास ने कहा—'मगर बादशाही फौज के मुकाबले मैं अकेला क्या कर सकूँगा !'

—'दुर्गादास !'—अकबर ने घुटने टेक दिये। प्रार्थना-भरे स्वर में बोला—'मैं मौत के साये में हूँ, मुझे जिंदगी के आकाश में चैन की साँस लेने का मौका दो ! मैं जानता हूँ, तुम्हारे इस अहसान के बदले मैं तुम्हें कुछ न दे सकूँगा मगर मेरी हर साँस तुम्हारी मेहरबानी के गाने गाती रहेगी।'

दुर्गादास दयार्द्र हो उठे। उन्होंने अकबर के दोनों हाथ पकड़ उसे उठाते हुए कहा—'उठिए शाहजादे, आप शंभाजी के पास रहने में ही अपना भला देखते हैं तो मैं आपको रायगढ़ पहुँचा कर रहूँगा।'

अकबर के नेत्रों में हर्ष के आँसू भर गये।

●

—'दिलेर खाँ राजपूतों से सुलह कर आये, बादशाह सलामत ?'

औरङ्गजेब ने कश्मीरी बेगम के मुख की ओर देखा, जस पर उत्सुकता के साथ ही प्रसन्नता विद्यमान है। उसके मुह से निकला—'हाँ, मलक-ए-आलम !'

—'खुदा का लाख-लाख शुक्र !'—कश्मीरी बेगम बोली—'जिसने बादशाह सलामत को ऐसी अक्ल दी।'

—'राजपूतों से सुलह करने में ही मैंने भलाई देखी।'

—'बहुत खूब !'—कश्मीरी बेगम ने कहा—'राजपूतों ने सल्तनत की हिफाजत के लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ भी दी हैं। उ हें दोस्त बनाये रखने में अपना नुकसान न होगा।'

—'शर्तें सल्तनत के माथे धब्बा लगाने वाली हैं।'

—'वह क्या ?'

—'हिन्दुओं पर लगाया गया जजिया माफ़ कर दिया जाय।'—औरंगजेब बोला—'और, मन्दिरों या उनके मजहबी मामलों

में दखल न दिया जाय। यशवंत सिंह के राज्य का वह हिस्सा जो सल्तनत के कब्जे में है, उसके लड़के अजीत सिंह को लौटा दिया जाय।'

—'मैंने बहुत पहले ही कहा था। बादशाह सलामत, हिन्दू और मुसलमानों को दो आँखों से न देखें!'

—'मलक-ए-आलम!' —औरंगजेब का कठोर स्वर—'तुम जानती हो, मैंने इस्लाम की तरक्की के लिए ही अब्बा को ता-उम्र कैद में रखा, भाई दारा और मुराद को मौत के घाट उतारा···!'

—'गुस्ताखी माफ हो, जहाँपनाह?' —कश्मीरी बेगम बोल उठी—'मैं आपके ख्यालों से नावाकिफ नहीं। मगर मेरा अन्दाज है, कोई ख्याल दूसरे के सिर जबरदस्ती लादा जाय तो वह बगावत की आग सुलगाने के बराबर है। उसका कभी नेक अंजाम नहीं होता। मिसाल राजपूतों से सुलह की शर्तें हैं।'

—'राजपूतों से मैंने इसलिए सुलह नहीं की,'—औरंगजेब ने कहा—'कि मुझे उन्होंने लड़ाई में मुँह की खिलाई; बल्कि इसलिए कड़ी शर्तें मान लीं कि हमारे दक्षिण की ओर बढ़ते समय वे दिल्ली की ओर न बढ़ें।······'

कश्मीरी बेगम चौंक उठी। बोली—'दक्षिण की ओर आप क्यों जाना चाहते हैं, बादशाह सलामत?'

—'अकबर दुर्गादास के साथ शिवाजी के बेटे को पनाह में है।'—औरंगजेब ने कहा—'मैं शिवाजी के बेटे को कुचलकर अकबर को कब्जे में लाना चाहता हूँ।' गोलकुंडा और बीजापुर को भी सल्तनत में मिलाना जरूरी समझता हूँ।'

—'लड़ाई से अभीतक आपका जी नहीं ऊबा, गरीब सिपाहियों के गले कटवाने में आप कौन-सी भलाई देखते हैं!'

—'तुम उसे नहीं समझ सकोगी, मलके!'—औरंगजेब गंभीर

हो उठा—'बेहतर है, इस मामले में तुम मुझसे कोई सवाल न न करो !…'

कश्मीरी बेगम उदास हो गई। वह क्षणभर औरङ्गजेब को देखती रही फिर अपने विश्राम-गृह की ओर लौट पड़ी।

●

—'हम रायगढ़ पहुँच गये, शाहजादे !'—दुर्गादास के मुख पर सफलता के कारण उत्पन्न प्रसन्नता की आभा फैल गई।

—'मैं तुम्हारा अहसान भुला न सकूँगा, दुर्गादास !'-अकबर का कृतज्ञता भरा स्वर—'तुम मौत की गोद से मुझे छीन लाये।'

—'ईश्वर की कृपा है ! मुझे गर्व है कि मैं अपना कुछ समय परोपकार में लगा सका।'

—'जिस समय मुअज्जम की सेना ने हमें अपने घेरे में कैद कर लिया, उस समय मैं जिन्दगी से निराश हो चुका था।'—अकबर बोला—'मगर तुम दुश्मनों की सेना चीरते हुए जिस बहादुरी से निकल आये उस नजारे को मैं भूल नहीं सकता।'

दुर्गादास ने अकबर को कोई उत्तर नहीं दिया। वह सामने मैदान में अन्य दृश्य देख रहा है।

अकबर की दृष्टि भी उधर पड़ी।

एक युवती को कुछ घुड़सवार पकड़ कर घोड़े की पीठ पर बैठा रहे हैं और युवती के अभिभावक सहायता के लिए चिल्ला रहे हैं।

दुर्गादास, नंगी तलवार उठाये, घटना-स्थल की ओर घोड़ा दौड़ाते बढ़े।

अकबर ने कुछ सवारों को उनके पीछे जाने का संकेत किया।

उनके साथ पाँच सौ के लगभग दुर्गादास के विश्वासी सैनिक हैं।

एक युवक अपनी नव-विवाहिता पत्नी के साथ ससुराल से ले लौट रहा है। उसके साथ जो दो-चार आदमी हैं। लुटेरे उस को पत्नी का हरण करना चाहते हैं।

—'कौन हो तुम ?'—दुर्गादास गरज उठे। उनकी आँखों में खून उतर आया।

—'तुमसे मतलब ?'—एक घुड़सवार ने घुड़ककर कहा।

—'छोड़ दो उसे !'—दुर्गादास का आदेशपूर्ण स्वर।

उसी समय दुर्गादास के कई घुड़सवार घटना-स्थल पर आ पहुँचे। स्थिति को भयंकरता देख आक्रमणकारियों ने युवती को मुक्त कर दिया।

—'आपने मेरी लाज रख ली।'—कृतज्ञता के भार से युवक का गला भर आया।

—'ये दुष्ट कौन थे ?'—दुर्गादास ने भागते घुड़सवारों को देखते हुए प्रश्न किया।

—'राज-सैनिक।' युवक ने सहमते हुए कहा।

—'क्या महाराज शंभाजो के सैनिक ?' दुर्गादास विस्मय से भर गये।

—'जी हाँ।'

—'तुम मेरे साथ दरबार में चल सकते हो ?'

—'जी····मुझे क्षमा कर दें !'—युवक गिड़गिड़ा उठा। बोला—'मैं ब्राह्मण हूँ।'

—'दरबार के नाम से तुम घबड़ा क्यों रहे हो ?'—दुर्गादास ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा—'तुम्हें राज-सैनिकों के अत्याचार के विरुद्ध महाराज से शिकायत करनी चाहिए जिससे फिर ऐसी घटना न घटे।'

युवक मौन हो दुर्गादास का मुँह निहारता रहा।

—'चुप क्यों हो ?'

—'लगता है, आप महाराष्ट्र में पहली बार कदम रख रहे हैं।'

—'आखिर तुम्हारा अभिप्राय क्या है ?' दुर्गादास की उत्सुकता बढ़ी।

—'आप महाराज शंभाजी के विषय में कुछ नहीं जानते।' —युवक ने कहा—'उन्हीं के संकेत से सैनिक मेरी नववधू का हरण कर रहे थे। आये दिन ऐसी घटनाएँ घटा करती हैं।'

—'युवक !'—दुर्गादास ने विस्मय से पूछा–'तुम उन शंभाजी के विषय में कह रहे हो जिनके पिता शिवाजी थे ?'

—'जी हाँ !'—युवक ने कहा—'अपराध क्षमा हो तो एक बात पूछूँ !'

—'तुम जो चाहो पूछ सकते हो।'

—'क्या आपको पता नहीं कि एक विवाहिता स्त्री के साथ बलात्कार करने के अपराध में शिवाजी ने शंभाजी को पन्हाले में कैद कर दिया था ?'

—'उनके कैद में रहने की खबर मिली थी मगर कारण न जान सका था।'

—'फिर आपका विस्मय से भर जाना अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता।' युवक ने जाने की आज्ञा माँगी। दुर्गादास ने अपने कुछ सैनिकों को उसके साथ जाने का आदेश दे दिया।

अकबर मौन है। दुर्गादास उसकी ओर मुखातिब हुए। बोले —'शाहजादे-आलम, शंभाजी के कारनामों ने मेरे हृदय में नफरत की आग जला दी।'

–'खुदा के लिए, दुर्गादास, उसके खिलाफ जुबान न हिलाना !' —अकबर की आवाज में व्यग्रता झाँक रही है।

—'मैं ऐसा नादान नहीं, शाहज़ादे !'—दुर्गादास गंभीर हो उठे—'मगर अपनी आँखों के सामने किसी सती का सतीत्व लुटते देख मैं चुप नहीं रह सकता।'

–'मै शंभाजी को समझाकर नेक रास्ते पर लाने की कोशिश करूँगा, तुम यकीन रक्खो।' अकबर ने लम्बी साँस ली।

●

—'सुन्दरी ? शर्म का घूँघट हटाओ और प्याले में सुरा उड़ेल कर मेरी ओर वढ़ाओ !'

युवती के ओठ फड़ककर रह गये।

'आज तुम्हारी सुहागरात नहीं, सौभाग्य की रात है।'—शंभाजी ने कहा—'महाराज शंभाजी की कृपा-दृष्टि पाना सौभाग्य की बात ही तो है।'

युवती अपने स्थान पर ज्यों की त्यों खड़ी रही।

शंभाजी के माथे पर बल पड़ गए। बोला—'तुम नहीं जानती कि किसके हुक्म की अवहेलना कर रही हो। शंभाजी के गुस्से का तुम्हें बिल्कुल पता नहीं। जीते-जी आग में जलवा दूँगा।'

धमकी ने काम किया। युवती ने प्याले में शराब उड़ेली और कांपते हाथों उसे शंभाजी की ओर वढ़ाया।

शंभाजीं ने उसे घूरते हुए प्याला खाली कर दिया।

उसी समय एक दासी का पदार्पण हुआ।

उसने हीराजी फर्जंद के आने की सूचना दी।

हीराजी फर्जंद शिवाजी के प्रिय सरदारों में से एक है।

शंभाजी ने युवती के साथ ही शराब और प्याले कमरे से हटा दिए।

—'महाराज !....'

श्रौर, हीराजी के मुँह की बात छीनकर शंभाजी बोल उठा —'पुर्तुगीज समझते थे, छत्रपति शिवाजी के मरने के बाद वे मरहठों के सिर पर चढ़ जायेंगे मगर मैंने कत्लेग्राम की श्राज्ञा दे उनके होश ठिकाने लगा दिए। श्रब मेरे जीते-जी किसी विदेशी का साहस नहीं, जो सिर उठा सके।'

—'महाराज का श्रनुमान श्रक्षरशः सही है।'

—'हाँ इस समय श्रापके श्रागमन का प्रायोजन ?'

शंभाजी की प्रश्न-भरी दृष्टि हीराजी के मुख पर।

—'महाराज,'—हीराजी ने कहा—'राजपूताने से राठौर दुर्गादास पधारे हैं। वे श्रापसे मिलने के लिए उत्सुक हैं।'

—'यह कोई विस्मय की बात नहीं, हीराजी !'—मदिरा के नशे में झूमते हुए शंभाजी ने कहा—'मैं जानता था, राजपूत एक दिन सहायता की भीख मांगने मेरे दरबार में श्रायेंगे। भोले राजपूत भेड़ की तरह श्राँख मूँद कर लड़ना भर जानते हैं श्रौर मुगल छल से काम लेने में भी नहीं सकुचाते। राजपूत बगैर मेरी सहायता के श्रौरंगजेब पर विजय प्राप्त करें, यह श्रसम्भव है....।'

—'दुर्गादास के साथ शाहजादे श्रकबर भी हैं, महाराज !'

—'शाहजादे श्रकबर श्रौर रायगढ़ में ?' शंभाजी चौंक उठा।

—'जी हाँ, महाराज !'—हीराजी बोला—'श्रपने श्रब्बा के खिलाफ उन्होंने तलवार उठाई थी। राजपूत भी उनके मददगार थे।...'

—'श्रौर, श्रसफलता ही उनके हाथ लगी, यही न ?'—शंभाजी, हीराजी के मुँह की बात छीन कर बोल उठा।

— जी हाँ महाराज !'

—'यह तो होना था।'—शंभाजी बोला—'भोले राजपूत

चतुर औरंगजेब को नीचा दिखायें ? असम्भव !'

—'दुर्गादास को उपस्थित करूँ ?'

हीराजी आदेश की प्रतीक्षा करने लगा।

—'अवश्य !'—शंभाजी बोल उठा—'और उसके साथ शाहजादे को भी।'

—'जो आज्ञा !'—कहकर हीराजी जाने लगा।

—'एक और बात है।' शंभाजी के मुँह से निकला।

हीराजी के कदम रुक गये। उसने मुड़कर शंभाजी की ओर देखा।

—'कुलेश की उपस्थिति भी आवश्यक है।'

—'जो आज्ञा।'

क्षण भर बाद ही शाहजादे अकबर के साथ दुर्गादास ने कक्ष में प्रवेश कर शंभाजी का अभिवादन किया।

—'प्रसन्न रहो, दुर्गादास !'—शंभाजी ने अभिवादन के उत्तर में कहा—'बादशाही फौज की नज़रों से बचा कर तुमने शाहशादे-आलम को मेरे पास पहुँचाया, यह काम तुम्हारी वीरता और बुद्धिमत्ता का परिचायक है।....'

और, उसने उठकर अकबर का स्वागत करते हुए कहा—'तशरीफ रखिए, बादशाह सलामत !...'

फिर उसने दुर्गादास की ओर मुखातिब होकर, कहा—'आज से मैं शाहजादे को ही अपना बादशाह मानूँगा।...'

—'इसके लिए शाहजादे-आलम आपका अहसान मानेंगे।'—दुर्गादास बोल उठे।

—'मैं आपका शुक्रगुजार हूँ, महाराज !'—अकबर ने कहा—'मुझे उम्मीद है, आप दिल्ली का तख्त दिलाने में मेरी मदद करेंगे।'

—'दुर्गादास गवाह है।'—शंभाजी ने गर्व से कहा—'जल्द-से जल्द दिल्ली का तख्त छीनकर आपको भेंट-स्वरूप दे दूँगा।'

दुर्गादास की जुबान खुलते-खुलते रुक गई। शंभाजी के गर्व के विरुद्ध कुछ कहना चाहा मगर परिस्थितिवश मौन रहा।

शंभाजी से दुर्गादास के चेहरे का भाव छिपा न रहा। वह उत्तेजित हो उठा। बोला—'दुर्गादास, मैं जानता हूँ, तुम क्या कहना चाहते हो। तुम्हें मेरा जौहर मालूम नहीं इसलिए ऐसा ख्याल है। जिसे राजपूतों ने अपनी सारी ताकत लगाकर भी नहीं प्राप्त किया उसे भला मैं कैसे कब्जे में कर सकूँगा—तुम यही तो कहना चाहते थे?'

दुर्गादास मौन रहा।...और उनकी मौनता ने शंभाजी के शरीर में आग लगा दी। वह बोला—'मौका आने दो, दुर्गादास मैं दिखा दूँगा कि शाहजादे के लिए मैं क्या कर सकता हूं!....'

उसी समय कुलेश ने उपस्थित हो अभिवादन किया।

शंभाजी उसे देखते ही शांत हो गया। बोला—'पंडितराव, आज दिल्ली के बादशाह हमारे मेहमान हैं। हमें इनकी मेहमान-दारी में कोई कमी न करनी चाहिए।'

—'निस्संदेह महाराज!'

'फिर विलम्ब क्यों?'—शंभाजी ने कहा—'बादशाह के स्वागत के लिए शीघ्र नृत्य-संगीत का प्रबन्ध करो!'

—'जो आज्ञा।'—पंडितराव कुलेश कक्ष से बाहर जाने के लिए प्रस्तुत।

शंभाजी ने दुर्गादास के मुख की ओर देखा और बोल उठा—'तुम्हें नृत्य-संगीत से अरुचि हो तो पंडितराव विश्राम-गृह में पहुँचा सकते हैं!'

'....आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि मुझे जाने की इजाजत दे

दें।'—दुर्गादास ने अपने मन के भावों को छिपा कर कहा।

—पंडितराव !...'

और पंडितराव से शंभाजी के कथन का भावार्थ छिपा न रहा वह दुर्गादास के साथ कक्ष से बाहर निकल गया।

●

अकबर सुन्दरियों के वीच प्याले पर प्याले खाली कर रहा है। शंभाजी उसका साथ दे रहा है।

—'मुझे अचरज है...'—अकबर की नशे में लड़खड़ाती आवाज।

—'किस वात का ?'—शंभाजी चौंक उठा।

—'क्या मैं शिवाजी के महल में ही हूँ ?'

—'इसमें भी कोई शुबहा है, बादशाह-सलामत ?'—शंभाजी विहँस उठा।

—'नहीं, नहीं; वह तो मर चुका है।'

—'आपका ख्याल दुरुस्त है।'—शंभाजी बोल उठा—'इस समय आप छत्रपति शंभाजी के मेहमान हैं।'

—'वही तो !....'और एक सुन्दरी ने शराव से भरा एक प्याला और उसकी ओर बढ़ाया।

—'नहीं, अब रहने दो, शवनम !'—नशे की तीव्रता के कारण अकबर की पलकें वंद हो गईं।

शंभाजी मुस्कुरा उठा। बोला—'बादशाह-सलामत ! यह शवनम नहीं, बिजली है।'

अकवर चौंक उठा। उसने सुरा देने वाली सुन्दरी को घूर कर देखा और बोल उठा—'ठीक कहते हैं, आप। यह मेरी शवनम नहीं। वह तो कब्र में छुप कर मेरा इन्तजार कर रही है।...'

शंभाजी उसका मुँह देखता रहा। उसने समझा, शवनम उसकी बेगम या किसी प्रेमिका का नाम रहा होगा।

—'आप अफसोस न करें, हुजूर !'—शंभाजी ने कहा—'एक शबनम बिछुड़ गई तो क्या, यहाँ हजार शबनम आपकी खिदमत के लिए तैयार हैं।'

उसी समय पंडितराव कुलेश ने उपस्थित होकर कहा—'महफिल में उपस्थित लोग छत्रपति के साथ बादशाह-सलामत को देखने के लिए लालायित हैं ...'

●

हीराजी ने अपने निवास-स्थान में एक गुप्त सभा बुलाई। सभा में शिवाजी के समय के सभी विश्वासी सरदार उपस्थित हैं।

—'सभा बुलाने का कारण छत्रपति शंभाजी की बढ़ती हुई विलासिता है।'—हीराजी ने कहा—'मुझे विश्वसनीय रूप से पता चला है, शंभाजी प्रतिदिन ऐसे अपराधों को दुहरा रहे हैं, जिसके कारण उनके पिता ने उन्हें पन्हाले में कैद कर रक्खा था ....।

—'जब से शाहजादे ने रायगढ़ में कदम रखा है, तब से शंभाजी नाच-गाने में ही मशगूल रहते हैं।'—अण्णाजी दत्तो बोल उठा—'मुझे संदेह है, अकबर को रायगढ़ भेजना आलमगीर की एक चाल हो।'

—'नहीं, ऐसी बात नहीं है।'—हीराजी ने कहा—'दुर्गादास अगर साथ न होते तो हम आपके संदेह पर विचार कर सकते।'

—'क्या दुर्गादास धोखा नहीं खा सकते ?'—श्यामजी ने प्रश्न किया।

—'वैसे चतुर सेनापति बगैर निश्चय के कोई कदम नहीं उठाया करते।'—हीराजी बोल उठा—'हमसे अधिक दुर्गादास शाहजादे के सम्बन्ध में जानते हैं ! अगर किसी तरह का शुबहा

होता तो वे शाहजादे को रायगढ़ नहीं लाते।'

—'मैंने सुना है'—एक सरदार ने कहा—'शाहजादे का साथ देने के कारण राजपूत दुर्गादास से खिन्न हैं।'

—'जो कुछ हो।'—हीराजी बोल उठा—'हमें शंभाजी को रास्ते पर लाना ही होगा। अकबर के रायगढ़ आ जाने के कारण आलमगीर की सेना महाराष्ट्र की ओर नहीं बढ़े—मैं इस पर विश्वास नहीं कर सकता।'

—'बहुत ठीक !'—अण्णाजी दत्तो ने कहा—'हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए जिससे शंभाजी का ध्यान नाच-गाने से हट-कर आने-वाले संकट की ओर जाय।'

—'बेशक ?'—श्याम जी बोला—'ऐसा न हुआ तो हम गुलाम हो जायँगे। आलमगीर की सेना हमारी मातृ-भूमि को पाँव तले रौंदेगी। हमारी बहू-बेटियों की इज्जत हमारे नेत्रों के सामने लूटी जायगी और हम कुछ न कर सकेंगे।'

—'श्यामजी !'—बालाजी की आँखें लाल हो उठीं 'हमारे जीते-जी आलमगीर की सेना महाराष्ट्र को जंजीरों में नहीं जकड़ सकती।'

—'यह मुझे मालूम है।'—श्यामजी ने कहा—'मगर छत्र-पति को रास्ते पर लाना, आने वाली मुसीबत से सावधान रहना क्या अनुचित है ?'

—'मेरे बहादुर साथियो !'—हीराजी बोल उठा—'वाद-विवाद में व्यर्थ समय नष्ट कर आप ऐसा उपाय सोचें जिससे चिंता दूर हो जाय।'

सभी मौन हो गये।

—'मेरा विचार है,'—एक ने कहा—'पंडितराव कुलेश को छत्रपति के सान्निध्य से अलग किया जाय ! उसने छत्रपति को

अपने वश में कर लिया है।'

—'बहुत ठीक !' दूसरे ने कहा—'वह भारी ठग है। मंत्र-तंत्र का ढोंग रचकर छत्रपति से मोटी रकम ऐंठता रहता है।'

—'इतना ही नहीं।' हीराजी ने कहा-'उसी के षड़यन्त्र में फँसा कर भोली युवतियाँ शंभाजी के शयन-कक्ष में पहुँचाई जाती हैं।'

—'यह जानते हुए भी आपने उस पापी को जिंदा छोड़ रखा है ?'—बालाजी की उग्र वाणी।

—'उसे कत्ल करना चाहिए !'—श्यामजी आवेश में।

और, हीराजी को खोजता पंडितराव वहाँ आ पहुँचा। श्यामजी की आवाज उसके कानों में पहुँची और वह छिपकर रहस्य जानने का प्रयत्न करने लगा।

किसी का ध्यान उसकी ओर न गया।

—'मगर शंभाजी की नाराजगी का भय है।'—हीराजी ने कहा—'आप लोग जानते हैं, उस कनौजिए ब्राह्मण के कुकृत्यों से प्रसन्न होकर ही उन्होंने उसे 'पंडितराव' की उपाधि दी है।'

—'उसका भार मैं अपने सिर लेता हूँ।'—बालाजी ने 'देश की रक्षा के लिए मैं अपने प्राण भी न्यौछावर कर सकता कहा हूँ।'

—'शाबाश !'—श्यामजी के मुँह से निकला।

—'अकबर को महाराष्ट्र से दूर करना भी आवश्यक है।'—अण्णाजी दत्तो ब ल उठा।

—'शंभाजी ऐसा नहीं होने देंगे।' हीराजी ने कहा।

—'हीराजी'—बालाजी आवेश में बोला—'छत्रपति अपने पथ से अलग हट जांय तो हम अपने फर्ज से क्यों अलग रहेंगे ?....'

—'हमें क्या करना चाहिए ?'—हीराजी की प्रश्न-भरी दृष्टि बालाजी के मुख पर।

—'हमें संगठन कर, शंभाजी से कहना चाहिए,'—बालाजी ने कहा—'वे शाहजादे अकबर को जल्द-से-जल्द अलग कर आने वाले खतरे से बचें !...'

—'अगर उन्होंने अस्वीकार किया ?'—हीराजी पूछ बैठा।

—'तो हम उन्हें कैद कर उनके सौतेले भाई राजाराम को गद्दी पर बैठायँगे और स्वदेश की रक्षा करेंगे !...'

पंडितराव कुलेश उससे अधिक सुन न सका। वह शीघ्रता-पूर्वक कदम बढ़ाता हीराजी के निवास-स्थान से दूर निकल गया।

●

—'हुजूर के मुँह से बार-बार मेरे लिए 'शबनम' निकलता है और हुजूर बार-बार अपनी गलती पर कुफ्र करते हैं—अच्छा हो, अब मुझे 'शबनम' ही समझें !'

बिजली के स्वर में समवेदना के साथ ही प्रार्थना।

—'बिजली !'—अकबर के मुँह से उच्छ्वास निकल गया। बोला—'शबनम को मैं भूलना चाहता हूँ मगर...
बीतने के साथ निखरती ही जाती...

—'बीता समय लौट...

—'तुम मेरे दर्द...
ने लम्बी साँस ली...

बिजली ने...
दिया।

प...
दिल'...
नाम...

—'राणादिल कौन थी, जहाँपनाह ?'

बिजली की उत्सुकता बढ़ चली। उसने उत्तर सुनने के लिए अपनी बड़ी-बड़ी कजरारी आँखें अकबर के मुँह पर जमा दीं।

—'वह भी एक ऐसी पाक हस्ती थी जिसकी याद से पाप धुल जाते हैं।'—अकबर कल्पना-लोक में विचरण करता बोला—'चाचा दाराशिकोह की तीन बेगमें थीं। नादिरा बेगम, उदयपुरी बेगम और राणादिल।...'

—'आपके चाचा साहब को आपके अब्बा ने मौत की सजा दिलवाई थी ?'

—'हाँ बिजली !'—अकबर के मुँह से 'आह' निकल गई। बोला—'वैसी दर्दनाक मौत खुदा किसी दुश्मन को भी न दे।...'

—'आप राणादिल के विषय में कुछ कह रहे थे।...'

'हाँ...हाँ...' अकबर चौंक उठा। बोला—'चाचा मौत की गोद में सो गए, लेकिन उनकी दो बेगमें जिंदा थीं। एक जार्जिया मुल्क की क्रिश्चियन जो उदयपुरी बेगम के नाम से मशहूर थी और दूसरी एक हिंदू नर्त्तकी की लड़की राणादिल।

...दयपुरी बेगम और राणादिल से विवाह की

...री ने तो खुशी-खुशी उनका बेगम

...दिल ने आलमगीर के शादी

...ने काले बालों को काट

...-जगह चीरे लगाकर

...राज सुनाई

उठा—

'आप तो इजाजत माँग मुझे शर्मिंदा करते हैं।'......

शंभाजी कक्ष में प्रवेश कर, अकबर के पास ही आसन पर बैठ गया।

'हा...हा...हा... हा....'—शंभाजी हँस पड़ा, बिजली का मुँह निहारते हुए !

—'यह तो आप पर जान देने लगी है, बादशाह सलामत!'

और, शंभाजी के शब्दों ने बिजली के कपोलों को लाली बढ़ा दी।

—'उसे शर्मिंदा न करें, महाराज !'—अकबर ने कहा—'वह मेरे हुक्म से ही हमेशा मेरे पास रहती है।...'

और उसने बिजली से कहा—'अपने महाराज को क्या अपने हाथों से शराब न पिलाओगी ?'

बिजली ने काँपते हाथों से शराब का प्याला शंभाजी की ओर बढ़ाया।

उसी समय एक दासी ने कक्ष में प्रवेश कर अभिवादन किया।

—'कहो, क्या कहना चाहती हो ?'—शंभाजी ने उसे [illegible] हुए प्रश्न किया।

—'पण्डितराव आपसे [illegible]

—'इससे बढ़क[illegible]

आदेश पा [illegible]

बदहव[illegible]

—'[illegible]

—'महाराज ! मुझे एक भयानक षड़यन्त्र का पता लगा है ।....' —कहते-कहते पंडितराव मौन हो अकबर और बिजली की ओर देखने लगा ।

—'कैसा षड़यंत्र ?'—शंभाजी की भृकुटि टेढ़ी हो गई । बोला—'स्पष्ट कहो ! बादशाह सलामत से मैं अपना कोई भेद छुपाना गुनाह समझता हूँ ! बिजली भी अविश्वास-योग्य नहीं ।...'

—'अण्णाजी दत्तो आदि ने हीराजी फर्जद के निवास-स्थान में एक गुप्त सभा की ।'—पण्डितराव ने कहा—'सर्वसम्मति से निश्चय हुआ, आपको गद्दी से उतार वे राजाराम को अपना राजा समझेंगे ।'

—'अण्णाजी दत्तो !...' शंभाजी की आकृति पत्थर की तरह कठोर हो गई । जब मैं पन्हाले में था तब उसने मेरी विमाता सोयराबाई से षड़यंत्र कर राजाराम को गद्दी पर बिठाया और पिता की मृत्यु की खबर छिपा रखी । खबर मिलते ही मैं रायगढ़ पहुंचा और सोयराबाई की दीवार में चुनवा कर मार डाला । ... ने शिक्षा नहीं ग्रहण की ।

... शंभाजी ने लापरवाही दिखलाते ... कारियों को मैं उचित ... सम्मिलित हैं ?'

... सीस, अण्णाजी

... गा ।'-

... म

शंभाजी ने उसका अभिप्राय समझ कर कहा—'कुछ नहीं, बादशाह सलामत ! राह के पत्थरों के लिए मेरे हृदय में कोई स्थान नहीं।'

बिजली सहम गई। कुलेश ने संतोष की साँस ली।

●

—'दुर्गादास ! मैंने सुना है, राजपुताने से कोई घुड़सवार आया है !' अकबर के मुख पर उत्सुकता झाँक रही है।

—'जी हाँ, हुजूर !'—दुर्गादास ने कहा—'और, मैं आपसे मिलने वाला ही था उसके पूर्व ही आपकी दासी ने मुझे आपका आदेश सुनाया।'

—'क्या खबर लाया है ?'

—'स्वर्गीय महाराज यशवन्तसिंह की रानी सती हो गईं।'—दुर्गादास ने कहा—'मेरे भाई समरसिंह इस लोक में नहीं रहे। बालक-महाराज की ओर से मुकुन्द दास ने लिखा है, आप यथासम्भव शीघ्र मारवाड़ वापस चले आवें।....'

—'क्या मेरे अब्बा ने सुलहनामे की शर्तें तोड़ डालीं ?'

—'ऐसी गलती आलमगीर-जैसे होशि...

हो सकेगी।'

—'तो तुम्हें मारवा...

है ?'

—'महारा...

कारण सम्भ...

मुझे वापि...

हो।...

—'मगर राजपूतों ने तुम पर अविश्वास किया था !'

—'अब अपनी भूल पर वे पश्चात्ताप करते हैं ।'—दुर्गादास की आकृति गंभीर हो गई ।

—'दुर्गादास !'—अकबर विचलित हो उठा—'मुझे अकेला छोड़कर न जाओ !'

—'आपके मित्र शंभाजी आपके सहायक हैं, फिर अकेलापन कैसा ?'

—'दुर्गादास !'—अकबर बोल उठा-'शंभाजी की वीरता में संदेह नहीं, मगर उनकी कई बातें मुझे खटकती हैं। मेरा मन कहता है, जल्द ही मुझ पर कोई मुसीबत आनेवाली है।'

—'भला हुजूर को शंभाजी के कौन-से गुण पसन्द नहीं !'-दुर्गादास की आँखों में रहस्य झाँकने लगा।

—'गुण नहीं, अवगुण कहो, दुर्गादास ।'—अकबर ने कहा—'सच और झूठ की जाँच किये बगैर किसी फैसले पर पहुंच जाना बहुत बड़ी बेवकूफी है। हाँ, उसे बेवकूफी के सिवा …र क्या कहेंगे ? …'

…ी आदि सरदारों को हाथी के पाँव तले

…ी घटना से क्षुब्ध हैं ?'

…ेवल कुलेश की बातों पर

…ौत के घाट उतारा,

…ाजी की काफी

…छ आपके

…ोल

— शंभाजी-जैसे आदमी पर विश्वास करना जहरीले नाग या भयानक शेर से दोस्ती करने के समान है।'–दुर्गादास ने मंद स्वर में कहा—'आपके अब्बा की फौज महाराष्ट्र की ओर चल पड़ी है, मुझे विश्वास नहीं—शंभाजी-जैसा ऐयाश आदमी आलमगीर जैसे चतुर राजनीतिज्ञ पर विजय प्राप्त करेगा।…'

—'तुम ठीक कहते हो, दुर्गादास !'—अकबर की आकृति पर भय ने अधिकार जमा लिया। बोला—'मुझे हीराजी वाली वारदात के बाद से यकीन हो गया है कि तनिक भी शुबहा होते ही शंभाजी मुझे कत्ल कर सकता है।…मुझे क्या करना चाहिये ? शंभाजी के सिवा और कोई नहीं, जो मुझे अपने साये में रख सके।'

—'आप मौका देखकर विदेश चले जायँ तो आपके लिए लाभदायक होगा।'

—'क्या कहते हो दुर्गादास !'—अकबर विचलित हो उठा —'क्या दिल्ली के तख्त का मोह मुझे छोड़ना पड़ेगा ?….'

—'उसके सिवा दूसरा कोई उपाय ही क्या है ?'

—'उपाय क्यों नहीं ?'—अकबर बोल उ…
तो जल्द ही मैं तख्त हासिल कर स…

—'मैंने क्या ऐसा प्र…

—'गुजरे हुए …
ने कहा—'और …
हिन्दुस्तान के …
फिर दि…
करता…
उ…

फूट पड़ी। उन्होंने कहा—'हिंदुस्तान के निवासियों में जब इतनी सी बुद्धि आ जायगी तब उनके खून-पसीने की कमाई पर कोई शासक गुलछर्रे ही क्यों उड़ायेगा ?... मैंने वैसा प्रयत्न नहीं किया आप ऐसा क्यों सोचते हैं ?'

अकबर अवाक् हो दुर्गादास का मुख देखने लगा। दुर्गादास बोल उठे—'मुझे आज्ञा दें, मेरा बहादुर घोड़ा मेरी राह देख रहा है।...'

—'तो तुम मुझे छोड़कर चले ही जाओगे !'—अकबर चौंक उठा।

—'मुझे दुःख है कि मोह मुझे कर्त्तव्य-पथ पर जाने से नहीं रोक सकता।...' दुर्गादास जाने के लिए प्रस्तुत हुए।

—'क्षण भर रुको, दुर्गादास !'—अकबर का गला भर आया। दुर्गादास के पाँव रुक गये।

अकबर ने आर्द्र स्वर में कहा—'मेरी बेटी रजिया को मेरे अब्बा के हवाले कर दोगे ?'

—'बादशाह आलमगीर का कोप क्या उस पर नहीं

...दार ! आलमगीर का दुश्मन मैं हूँ। मैंने

...ने नहीं।'

...बच्चों ने आलमगीर

...'फिर उन निर्दोष

...कब तक

नहीं।

रहा

—'मैं उसे आलमगीर के पास भेज दूँगा ।'

—'मेरे बहादुर दोस्त !'—अकबर बोल उठा—'मेरी प्यारी लड़को से कह देना, उसका बदनसीब बाप अब उसकी नजरों से हमेशा के लिए दूर हो गया ।'...और जाते-जाते दुर्गादास ने दुःख-पूर्ण नजरो से देखा, अकबर की आँखों से आँसू झर रहे हैं ।...

●

—'वह रही औरंगजेब की सेना !'—शंभाजी उत्साह से भर गया—'संताजी, तुम घुड़सवारों के साथ यहीं मेरे संकेत की प्रतीक्षा करो !...'

—'जो आज्ञा !'—शंभाजो ने अपना घोड़ा पीछे की ओर बढ़ाया ।—'धन्नाजी, तुम मेरे साथ आओ !...'

और, दोनों ने पहाड़ी के एक ऐसे स्थल पर घोड़े को आगे बढ़ने से रोका, जहाँ से वे आलमगीरी सेना को अच्छी तरह देख सकते हैं ।

आगे हाथियों का दल । हाथियों पर गंगा-जमुनी हौदे, सुंडों में सुन्दर जंजीरें, सोने की झूलें और माथे पर चमचमाती ढालें रेशमी रस्से से बँधे हुए । रंग-बिरंगे वस्त्रों में सजे महावत ... को बढ़ाते आ रहे हैं ।

हाथियों के दल के बाद साँढ़नि...

से कुछ कम नहीं ।

साँढ़नियों के बा...

तातारियों के अ...

बाजेवा...

साफ होते...

सुगन्धि...

ने मौन तोड़ा।

—'जी हाँ, महाराज !'—धन्नाजी ने कहा—'आलमगीर की सेना बारात की तरह सजकर चलती है।'

—'इसे सजने में काफी समय लगता होगा !'

—'आपका अनुमान सही है।'-धन्नाजी बोल उठा—'सजने में ही इतना समय व्यतीत हो जाता है कि दिन भर में दो-तीन कोस से अधिक आगे सेना नहीं जा पाती।'

—'यह क्या !'—शंभाजी कौतूहल से चौंक उठा।—उसके सामने शेरों और चीतों के पिंजड़े जा रहे हैं जिनके पीछे शिकारी के वेष में सजे हुए सैनिक हैं।

—'इन शेरों की क्या जरूरत ?'

—'महाराज, पूरी सेना पर निगाह डालिए तो मालूम होगा, जैसे कोई शहर उठकर जा रहा है।'

शंभाजी ने गहरी नजर डाली और मुस्करा उठा।

—'तुम्हारा अनुमान सही है, धन्नाजी ! लगता है, औरंगजेब का दिल दिल्ली से ऊब चुका है; इसलिए पूरी दिल्ली को ... लिए अपनी शान-शौकत दिखलाने महाराष्ट्र में पहुँचा है।'

... है, महाराज !'-धन्नाजी किसी ख्याल में

... र्गा बादशाह को राजपूत तख्त से

... हाथों करना स्वीकार

... नक अपना

राठे

घुड़सवारों के साथ शंभाजी के आदेश की प्रतीक्षा कर रहा है।

—'तुम्हारे सौभाग्य से भगवान ने आलमगीर बादशाह को काफी दौलत के साथ महाराष्ट्र में भेज दिया। बादशाह का इरादा है, वह तुम्हारे देश को पाँव-तले रौंदे और तुम्हारे गले में गुलामी की जंजीर डाले।'

'महाराष्ट्र के सपूतो!...'—फिर उसने नंगी तलवार उठाकर कहा—'आज तुम दिखला दो कि हम मुट्ठी भर मराठे अपनी आजादी के लिए औरंगजेब की विशाल-वाहिनी को परास्त करने की क्षमता रखते हैं। और, जिस दौलत के कारण वह सेना रखकर हमारे देश पर जुल्म करने आया है, उसे लूट लो!...'

—'बढ़ो!.. बहादुरो आगे बढ़ो! सफलता तुम्हारे चरण चूमने के लिए लालायित है। मंजिल तुम्हें पुकार रही है।...'

और, देखते-देखते मराठे सैनिक भूखे शेर की तरह आलमगीर की सेना पर टूट पड़े।

अचानक आक्रमण से बादशाह की वाहिनी में खलबली मच गई। मराठे लूटते रहे, सैनिकों को कत्ल करते रहे। और, जब आलमगीर के सैनिक सँभले, तब मराठों का पता नहीं। ... की ओट में लूट का माल लिये अंतर्ध्यान हो गये...

●

—'बादशाह सल...

मनाइये।'

अकबर ने...

—'...

तख्त पर बैठाने की जो प्रतिज्ञा की है, वह पूरी होकर रहेगी।'

अकबर उदास हो गया। आलमगीर ने हार नहीं खाई, फिर मेरी खुशी का क्या कारण हो सकता है!'

—'क्या सोच रहे हैं, बादशाह सलामत? यही न कि दिल्ली का तख्त अभी तक आपसे दूर है! चिंता न कर, जा सुख आपका तख्त पर बैठने पर मिलता, वह क्या यहां सुलभ नहीं है?'

—'अब्बा की फौज…'

—'जी हाँ, मेरे राज्य से दूर है।'—शंभाजी बोल उठा–'मेरे आक्रमण से घबड़ा कर आपके अब्बा भाग गये। मेरा ख्याल है, अब फिर मेरे राज्य में वे कदम न बढ़ायेंगे!…'

अकबर ने लंबी साँस ली। वह क्या शंभाजी के आश्रय में ही सारी जिन्दगी गुजारेगा?….

बिजली अकबर के हृदय की वेदना का आभास पा व्यथित हुई।

—'बादशाह को मदिरा पिलाओ, बिजली! जीत की खुशी में पंडितराव नाच-गाने का प्रबंध कर रहा है।'

…ने की उमंगें आकाश को छू रही हैं।

…नीं।'

—'चुप क्यों हो गई ? कहो !'

—'मैंने सपने में देखा, आपके अब्बा ने चढ़ाई की और लड़ाई में महाराज शंभाजी मारे गये।'

अकबर सहम गया। उसने अपने हृदय के भय पर परदा डालने के प्रयत्न में लापरवाही से कहा–'बिजली, ऐसा भी कभी होगा ? शंभाजी-जैसे वीर हिन्दुस्तान में बहुत कम हैं।....'

—'बादशाही फौज महाराष्ट्र में घुस चुकी है, हुजूर !'

—'क्या सच ?'–अकबर चौंक पड़ा।

—'आपसे झूठ बोलूँगी ? कुछ देर ही पहले महाराज को खबर मिली है और वे आपके अब्बा का मुकाबला करने की तैयारी कर रहे हैं।'

—'बिजली !...'

अकबर गंभीर हो उठा। बोला–'तुम्हारा सपना सच होगा।'

—'यह क्या कह रहे, हैं हुजूर !'

—'मेरा दिल कहता है, बिजली !'–अकबर ने कहा–'अपने अब्बा को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ। वे गोलकुंडा और बीजापुर फतह करने में लगे रहे और शंभाजी ने समझा—बला ...
गई।'

—'सचमुच आपके अब्बा बड़े ही चालाक...

—शंभाजी ने दो-तीन वर्ष बड़ी ...
कई-बार मैंने उन्हें ...
निकला।'

—'आ...

ने...

–'मेरे लिए तुम किसी जहाज में जगह दिला दो जिससे मैं इरान जा सकूँ।'

—'मैं कोशिश करूँगी।'

—'बिजली, यहाँ तुम्हारे सिवा मेरा कोई अपना नहीं, जिस पर मैं यकीन कर सकूँ।...' अकबर की आँखों में आँसू छलक आये, जिसमें प्रार्थना छिपी है।

—'बादशाह सलामत! मुझ पर यकीन कीजिए! अगर मैं आपके काम आ सकी तो अपने को खुशनसीब समझूँगी।...'

और, अकबर ने अपने गले से मोतियों की माला निकाल कर विजली के हाथों में रख दी।

—'यह क्या हुजूर? मुझे इतनी पतिता समझते हैं?......' विजली की आँखें भर आईं।

—'नहीं बिजली, नहीं।'—अकबर का गला भर आया–'यह मोतियों की माला तुम्हारी मेहनत का इनाम नहीं, बल्कि जहाज का किराया है।...'

बिजली ने आँचल से अपने आँसू पोंछ लिए।

~ बेगम चौंक पड़ी। कक्ष में प्रवेश करते ही उसकी दृष्टि

~। उसे आशा थी—वह अपने शौहर को खुश

– ...ला। औरङ्गजेब के चेहरे

पीरी बेगम

—'शंभाजी को कत्ल नहीं किया गया ?'

—'उसका कटा हुआ सिर मैंने देखा।'-औरङ्गजेब ने लंबी साँस ली—'वह मेरे ही हुक्म से तो मारा गया। उसकी बीवी और उसका बच्चा मेरी कैद में हैं।'

—'फिर उदासी की वजह क्या है ?'

—'मलक-ए-आलम !'—औरंगजेब के मुख पर चिंता की रेखाओं ने अँगड़ाई ली–'शंभाजी का भाई राजाराम, संताजी और धन्नाजी वगैरह सरदारों के साथ किले से बाहर निकल गया।'

—'इससे क्या हुआ ? वे रायगढ़ आपसे वापिस नहीं ले सकेंगे।'

—'तुम्हें धन्नाजी और संताजी की ताकत का पता नहीं है, मलके !'—औरंगजेब ने लंबी साँस ली—'सच पूछो तो वे दोनों शंभाजी से बहादुरी में बहुत आगे बढ़े हुए हैं। उन्हें काबू में करना लोहे के चने चबाने के बराबर है।....'

—'आपकी बेशुमार फौज के मुकाबले कुछ लोग क्या कर सकेंगे ? आप फिक्र न करें, बादशाह सलामत !'

—'मुझे उनलोगों का डर है-ऐसा न समझो, मलक-ए-आलम !'

—औरंगजेब गंभीर हो उठा—'मैं लड़ाई से ऊब चुका हूँ। बूढ़ापे की वजह मेरी ताकतें जवाब दे रही हैं। मुअज्जम, आजम और कामबख्श की ओर से भी ख़तरा बना हुआ है। न-जाने कब वे कहर बनकर मुझ पर टूट पड़ें—उनका कुछ भी भरोसा नहीं !'

—'जहाँपनाह!....'—कश्मीरी बेगम के मुख पर विस्मय के भाव दीख पड़े।

—'हैरत न करो, मलके !'—औरंगजेब ने कहा—'मेरे खानदान में ऐसा ही होता आया है। अकबर ने तख्त के लिए क्या मेरे खिलाफ तलवार नहीं उठाई ? फिर उसके भाई उसके रास्ते पर कदम नहीं उठायेंगे–इस पर कैसे यकीन किया जाय....?'

—'एक तरीका है।'

—'वह क्या ?'

—'आप तीनों लड़कों को अपने पास न फटकने दें !'

—'बहुत खूब ! ऐसा ही करूँगा।' औरंगजेब बोल उठा—'जब तक वे दूर रहेंगे, खतरा से दूर रहूँगा। मैं जानता हूँ, तीनों भाइयों की तलवार आपस में खटक कर रहेगी। मेरे मरते ही, वे तीनों तख्त के लिए एक दूसरे पर भूखे भेड़िए की तरह टूट पड़ेंगे।'

—'और अकबर को क्यों भूल जाते हैं ?'

—'वह तो एक अंग्रेजी जहाज पर बैठ कर इरान चला गया।' —औरंगजेब के मुख पर वेदना झलक गई—'उसका इरादा मक्का जाने का है। बदनसीब !....'

●

सागर की उठती-गिरती लहरों को चीरता हुआ अंग्रेजी जहाज बढ़ा जा रहा है।

असफलताओं की उदासी में डूबा औरंगजेब की राह का पत्थर (!) विद्रोही अकबर डूबते हुए सूरज की ओर देख रहा है।

उसकी आँखों में छलक रहे हैं आँसू ! और, आँसुओं में तैर रहे हैं अतीत के सपने।

उसकी जिंदगी की प्यारी सुबह दम तोड़ चुकी हैं और मौत की शाम मुस्कराती हुई उसे अपनी लंबी भुजाओं में कस रही है।

और ....

इरान की धरती ने उसे दुःख, पश्चाताप और भय से मुक्ति दिलाई !

वह धरती की गोद में छिप गया।

———